Vol.20, Issue 11 | Annual Subscription ₹ 420

September 2021

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

INDIA

www.rotarynewsonline.org

Rotary

यादगार लम्हे

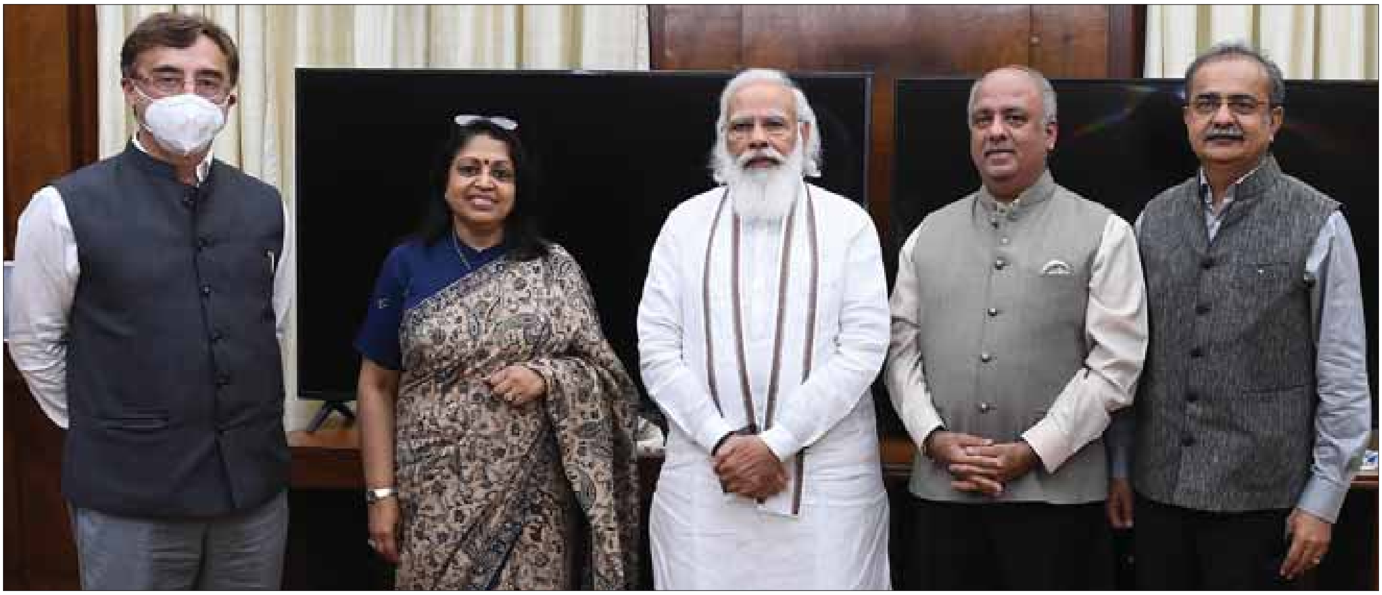

ऊपर: रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की और 45 मिनट की बैठक में विभिन्न विकास कार्यक्रमों पर चर्चा की, जहां रोटरी भारत सरकार के साथ काम कर सकता है। राशि मेहता, राज्यसभा सांसद MP पीडीजी विवेक तन्खा (RID 3261) और पीडीजी आशीष देसाई (RID 3054) भी चित्र में मौजूद हैं।

नीचे: रोटरी इंटरनेशनल मुख्यालय, वन रोटरी सेंटर, इवान्स्टन, यूएसए में रो ई अध्यक्ष मेहता ने पदभार ग्रहण किया।

12

18

38

42

62

68

विषयसूची

12 इरोड के रोटेरियनों ने सिर्फ 45 दिनों में ₹20 करोड़ के अस्पताल का निर्माण कर इतिहास रचा

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने इरोड में रोटेरियनों द्वारा निर्मित 401 बिस्तर वाले अत्याधुनिक कोविड अस्पताल को इरोड सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल को सौंपा।

18 उम्मीद के 10 साल

रोटरी क्लब कोयंबटूर मेट्रोपोलिस द्वारा 2012 में शुरू की गई होप आफ्टर फायर परियोजना ने 600 से अधिक जल चुके लोगों की जिंदगियाँ परिवर्तित की है।

20 रोटरी क्लब दिल्ली साउथ ने शुरू की बेटी शिक्षा

पिछले साल 273 लड़कियों को छात्रवृत्ति प्रदान करने के बाद, क्लब ने इस साल 500 लड़कियों को लाभान्वित करने के लिए लक्ष्य को बढ़ाया है और यह पुराने छात्रों को करियर परामर्श भी प्रदान कर रहा है।

24 रोटरी अध्यक्ष मेहता ने की घोषणा: सदस्य जोड़ने पर मान्यता

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता के मंत्र - हर एक लाए एक - को साकार करने हेतु अब रोटरी में नए सदस्यों को शामिल करने वाले रोटेरियनों को विशेष पिन से सम्मानित किया जाएगा।

38 असम के गांवों में सोलर लाइटें हाथियों को दूर रखती है

रोटरी क्लब डिगबोई ने 10 गांवों में सोलर स्ट्रीट लैंप लगाए जो लगातार हाथियों के हमले के कारण डर में जी रहे थे।

42 अन्नपूर्णा की चोटी पर लहराया रोटरी का झंडा

रोटरी क्लब पुणे गांधी भवन के सदस्य भगवान चावले हाल ही में अन्नपूर्णा पर्वत पर फतह हासिल करने के अपने अभियान के अनुभव साझा किए।

62 किशोरी अमोनकर, बेहतरीन एकाकी संगीतकार

अपनी अनूठी आवाज के साथ, उन्होंने संगीत कार्यक्रमों में पहचान बनाई और फिल्मी संगीत में भी अपनी छाप छोड़ी।

68 शेफ़ अपने बचपन की पाकशाला गलियों से गुजरते हैं

एक नज़र इन लंबे समय से भूले जा चुके व्यंजनों पर डालिए जो आपको आपकी माँ की खाना पकाने की यादों को ताज़ा करवाने में मदद करेंगे।

कवर पर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता।

दिलीप कुमार को भावपूर्ण श्रद्धांजलि

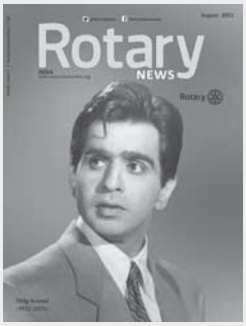

अगस्त अंक में दिलीप कुमार जी की कवर फोटो देखकर मुझे खुशी हुई। रो ई अध्यक्ष का संदेश रोटेरियनों को लगातार व्यस्त रखने की आवश्यकता पर ज़ोर देता है। महिला सशक्तिकरण की महत्ता पर संपादक का संदेश और पर्यावरण, सदस्यता अवरोधन एवं रोटरी में अधिक से अधिक महिलाओं के समावेशन पर रो ई निदेशकों के संदेश सभी बहुत अच्छे है।

राजस्थान में 700 परिवारों को लाभान्वित करने वाले एक रोधक बांध के निर्माण में दिल्ली के दो क्लबों द्वारा किए गए नेक काम को देखकर प्रसन्नता हुई। PRIP राजेंद्र साबू द्वारा लिखित हमारे डॉक्टरों को सलाम और रोटरी क्लब तिरुपुर द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं उल्लेखनीय है। अफ्रीका के जलवायु संकट पर लिखित लेख और उड़ीसा में शादी के रिसेप्शन से बनने वाले एक ग्रामीण नेत्र अस्पताल सहित अन्य सभी लेख, और तस्वीरें अच्छी हैं।

फिलिप मुलप्पोन एम टी, रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

मुझे यह बात समझ में नहीं आ रही है कि रोटरी न्यूज ने दिलीप कुमार का इतना बड़ा कवरेज क्यों किया है। क्या हमारे पास कवर करने के लिए रोटरी परियोजनाओं की कमी आ गई है? या समर्पित रूप से कार्य करके समुदायों को परिवर्तित करने वाले रोटेरियनों की कमी आ गई है? यहां तक कि रोटरेक्टर भी बढ़िया काम कर रहे है, जिसे दिखाया जा सकता है।

संदीप गोयल, रोटरी क्लब करनाल मिडटाउन - मंडल 3080

दिलीप कुमार एक संपूर्ण अभिनेता थे और उनकी बराबरी कोई भी नहीं कर सकता है। लड़कियों के सशक्तिकरण के लिए अध्यक्ष मेहता का दृष्टिकोण और DEI मंत्र जिस पर पूर्व अध्यक्ष होल्गर नेक ने जोर दिया था, वास्तव में महत्वपूर्ण है।

PRIP साबू को मेरी बधाई, जिन्होंने अफ्रीका और भारत में गरीबों एवं जरूरतमंदों की मदद करने के लिए चिकित्सीय अभियानों का नेतृत्व किया और उन्हें प्रोत्साहित किया। वह समर्पण एवं विनम्रता के प्रतीक है और उनका लेख हमारे डॉक्टरों को सलाम रोचक है।

राज कुमार कपूर, रोटरी क्लब रूपनगर

मुझे संपादक रशीदा भगत द्वारा महान अभिनेता दिलीप कुमार पर लिखे गए शोक संदेश अंदाज, रुआब, रुतबा और भी... बहुत पसंद आया।

कृति मखीजा, रोटरी क्लब दिल्ली साउथ - मंडल 3012

कवर स्टोरी में दिलीप कुमार के जीवन में एक अंतर्दृष्टि अद्भुत है। यह संस्करण आने वाली पीढ़ी के लिए अनुभवी अभिनेता के बारे में जानने के लिए पर्याप्त है। प्रीति मेहरा द्वारा लिखित सूर्य द्वारा बिजली निर्माण अच्छी तरह लिखा गया है और यह घर पर सोलर फोटोवोल्टिक प्रणाली स्थापित करने पर प्राथमिक जानकारी प्रदान करता है।

मोहन पी शाजी, रोटरी क्लब चेरथला ग्रीन सिटी - मंडल 3211

एक बेहतरीन अंक, गंभीर, विचारोत्तेजक लेखों से लेकर सुहावने पन्नों तक, जिनमें महान कलाकार दिलीप कुमार को सुंदर तस्वीरों के साथ याद किया गया है। DEI पर संपादकीय सामयिक है और खेलों में महिलाओं के समावेशन को रोटरी कार्यक्रमों में एक मिशन के रूप में लिया जाना चाहिए।

अभय किशोर संदवार, रोटरी क्लब धनबाद मिडटाउन - मंडल 3250

एक और अद्भुत अंक पर बधाई; मुझे यह तथ्य अच्छा लगा कि आपने दिलीप कुमार, एक गैर-रोटरी व्यक्ति को कवर पर रखने का साहस किया! रोटरी क्षेत्रीय पत्रिका में

आइए विविधता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दें

स्कूलों में छात्रवृत्ति, शौचालय जैसी परियोजनाओं के माध्यम से लड़कियों के सशक्तिकरण हेतु अध्यक्ष मेहता का मंत्र; सदस्यता को 1.2 से बढ़ाकर 1.3 मिलियन करने की उनकी परिकल्पना उल्लेखनीय है। हमारे क्लब में शामिल किए गए छह नए सदस्यों में से तीन महिलाएं है और वे पूरी तरह से क्लब की गतिविधियों में शामिल है।

कर्नल विजयकुमार (सेवानिवृत्त)
रोटरी क्लब एलेप्पी ग्रेटर - मंडल 3211

उत्सुख पर अगस्त का संपादकीय रोटेरियनों को लड़कियों के सशक्तिकरण हेतु रो ई के नए मंत्र का पालन करने के लिए प्रेरित करता है। अध्यक्ष मेहता ने सदस्यता वृद्धि को प्राथमिकता दी है; RID ए एस वेंकटेश नए सदस्यों को उत्कृष्ट रोटेरियनों में तब्दील करने पर जोर देते है; RID महेश कोटबागी पर्यावरण अनुकूल पहलों जैसे वृक्षारोपण पर जोर देते है, और PRIP साबू हमारे डॉक्टरों को सलाम करते है - सभी सुयोग्य संदेश है।

के एम के मूर्ति
रोटरी क्लब सिकंदराबाद - मंडल 3150

मुझे खुशी है कि अध्यक्ष मेहता नए सदस्यों को शामिल करने वाले रोटेरियनों को सम्मानित करने जा रहे है। उनका संदेश एक व्यस्त रोटेरियन हमारी सबसे बड़ी संपत्ति है सामयिक है। महिला सशक्तिकरण के माध्यम से एक अधिक न्यायसंगत दुनिया पर संपादक की टिप्पणी प्रेरक है।

एस मुनियांदीरोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट - मंडल 3000

एक चक दे पल

उड़ीसा की लड़कियां कहती है, चक दे इंडिया दिल को छू लेने वाला और प्रेरणादायक था। लेख का समय उचित था क्योंकि हमारे देश ने टोक्यो ओलंपिक में काफी प्रगति की है। उड़ीसा ने भारतीय हॉकी के भाग्य को फिर से उदित

वास्तव में यही 'क्षेत्रीय' का अर्थ है! टीआरएफ ट्रस्टी चेयर जॉन जर्म के साथ प्रश्नोत्तर के लिए धन्यवाद।

अतुल भिड़े

रोटरी क्लब ठाणे हिल्स - मंडल 3142

मैंने महान अभिनेता दिलीप कुमार पर आपका लेख पढ़ा। पुरानी यादों, किस्सों और घटनाओं को बहुत अच्छी तरह लिखा गया है। इतने बेहतरीन लेख के लिए धन्यवाद।

उदय सुबेदार, रोटरी क्लब पुणे मेट्रो - मंडल 3131

दिलीप कुमार को सादर नमन करते हुए, क्या *रोटरी न्यूज़* को कवर पर फिल्मी नायकों की आवश्यकता है? फिल्मी नायकों को शामिल करने के बजाय कृपया वास्तविक नायकों को शामिल करें - हमारे पास रोटरी में अनेक है - क्योंकि हम कोई फिल्मी पत्रिका नहीं है। संपादक, यह सब आपके हाथों में है।

शाम फडनीस

रोटरी क्लब खारघर मिडटाउन - मंडल 3131

दिलीप कुमार पर इतना अच्छा लेख लिखने के लिए धन्यवाद। यह उत्कृष्ट रूप से लिखा गया था और इसने महान अभिनेता के साथ न्याय किया।

पी एन मोहन, पी पी

रोटरी क्लब मद्रास - मंडल 3232

करने का बीड़ा उठाया है, और महिला हॉकी टीम की सफलता की कहानी एक पदक जीतने जैसी ही है। रोटरी को खिलाड़ी महिलाओं के सशक्तिकरण को महत्व देना चाहिए।

एक प्रेरक रो ई अध्यक्ष

कवर स्टोरी *ख्वाब बुनने वाले* ने बड़े सपने देखने के लिए मेरे मन को प्रेरित किया है। अध्यक्ष मेहता का जीवन सच्ची, निस्वार्थ सेवा का एक प्रदर्शन है। मैं अध्यक्ष मेहता को पर्यावरण पर उनके अद्भुत संदेश के लिए सलाम करता हूं, क्योंकि पारिस्थितिकी परियोजनाओं की सख्त जरूरत है। एक प्रोफेसर के रूप में, मैं युवा पीढ़ी को पर्यावरणवाद पर शिक्षित करूंगा और उन्हें हमारे ग्रह को बचाने के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए तैयार करूंगा।

डॉक्टर जयशेखरन वी पी,

रोटरी क्लब पय्यनूर

मंडल 3204

डॉक्टर ए आर जॉनसन दुरई

रोटरी क्लब कुड्डलोर - मंडल 2981

अध्यक्ष मेहता ने हमारी जिम्मेदारियों के बारे में एक स्पष्ट संदेश दिया है। हमें अपनी परियोजनाओं को आभासी मंच पर अपडेट करना होगा। उनका वर्ष संतोषप्रद रहे इस बात की मैं कामना करता हूं।

इंद्र गोयंका

रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

प्रीति मेहरा का लेख *लेट द बेटर लाइट शाइन* हमारी समस्याओं पर एक व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। उन्होंने ऊर्जा कुशल और पर्यावरण के अनुकूल LED और CFL लाइटों का उपयोग करके ऊर्जा बचाने के लिए एक प्रभावी समाधान दिया है। इससे हम अपने बिजली बिल में छह फीसदी से अधिक की बचत कर सकते है।

अश्विनी कर

रोटरी क्लब भुवनेश्वर मीडोज - मंडल 3262

रोटरी न्यूज में उत्कृष्टता मायने रखती है

रोटरी न्यूज़ में हमारे कार्यों को प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद। आपकी सकारात्मक और त्वरित कार्रवाई ने अनेक रोटेरियनों को आगे आने और हमारी पत्रिका के माध्यम से अपने अच्छे कार्यों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया है। रोटरी में ठीक ही कहा जाता है कि *रोटरी न्यूज़* में रोटेरियनों के काम को प्रकाशित कराने के लिए योग्यता ही एकमात्र मानदंड है। धन्यवाद। मैं और बेहतर करने की कोशिश करूंगा और पुनः वापस आऊँगा।

माणिक राज सिंगला

रोटरी क्लब पटियाला मिडटाउन - मंडल 3090

के एल सहगल, एक उस्ताद

मैं के एल सहगल पर लेख को देखकर अभिभूत हुआ। उन्होंने शंभू महाराज (बिरजू महाराज के चाचा) से महज तीन दिनों में एक नई ठुमरी 'बाबुल मोरा' सिख महारत हासिल की थी। यही उनकी महानता थी।

सतीश व्यास

रोटरी क्लब भावनगर - मंडल 3060

रोटरी न्यूज़ के तीन अंक (मई, जून और जुलाई) त्वरित रूप से भेजने के लिए धन्यवाद। सभी तस्वीरें आँखों को सुकून देती है क्योंकि उनमें रोटरी का सार निहित है और वे रोटेरियनों के काम को चित्रित करती है। लेख मानसिक भोजन है जो आपको उन्हें पढ़ने के लिए मजबूर करते है। संपादक के रूप में, आप हर संस्करण में अपने पूरे मन से बेहतरीन काम कर रही है। एक बार फिर से आपका धन्यवाद।

संजय पाहुजा

रोटरी क्लब यमुना नगर - मंडल 3080

सुधार

मनीष मोटवानी सर्विस एबव सेल्फ अवार्ड के प्राप्तकर्ता नहीं हैं (पृष्ठ 11)। आरआई कम्युनिकेशंस द्वारा भेजी गई सूचना गलत थी।

We welcome your feedback. Write to the Editor:
rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com.
Mail your project details, along with hi-res photos,
to **rotarynewsmagazine@gmail.com.**

Messages on your club/district projects, information and links on zoom meetings/ webinar should be sent only by e-mail to the Editor at **rushbhagat@gmail.com** or **rotarynewsmagazine@gmail.com.** WHATSAPP MESSAGES WILL NOT BE ENTERTAINED.

Click on **Rotary News Plus** on our website **www.rotarynewsonline.org** to read about more Rotary projects.

SERVE TO CHANGE LIVES

लड़कियों की शिक्षा के लिए बाधाओं को दूर करें

मुझे यकीन है कि जब आप *जीवन बदलने हेतु सेवा* करते है तो आपको एक बढ़िया अनुभव मिलता है। किसी व्यक्ति के जीवन में सबसे बड़ा बदलाव लाने का एक तरीका यह है कि आप उसकी पढ़ने में मदद करें। साक्षरता हमारे लिए दुनिया खोलती है। यह हमें अपने समुदायों में जीवन के बारे में बेहतर जानकारी देती है और अन्य संस्कृतियों को जानने में मदद करती है। पढ़ाई-लिखाई लोगों को जोड़ती है और हमें एक दूसरे के लिए अपने प्यार का इजहार करने का एक और तरीका देती है।

रोटरी में सितंबर सामान्य शिक्षा और साक्षरता का महीना होता है। गरीबी को कम करने, स्वास्थ्य में सुधार लाने और शांति को बढ़ावा देने के हमारे प्रयास में साक्षरता कौशल को बढ़ाना महत्वपूर्ण है। यदि कम आय वाले देशों के सभी छात्र बुनियादी पठन कौशल के साथ स्कूल से निकलते है तो इसके परिणामस्वरूप वैश्विक गरीबी दर में उल्लेखनीय कटौती होगी।

शिक्षा के बिना अनपढ़ बच्चे अनपढ़ वयस्क बन जाते है। आज, दुनिया की 14 प्रतिशत वयस्क आबादी - 762 मिलियन लोग - के पास बुनियादी पढ़ने और लिखने के कौशल का अभाव है। उस समूह में दो तिहाई महिलाएं है। आजीवन बेहतर आवास, स्वास्थ्य देखभाल और नौकरी प्राप्त करने के लिए साक्षरता और संख्यात्मक कौशल आवश्यक है।

खासकर लड़कियों और महिलाओं के लिए साक्षरता जीवन-मरण का मुद्दा हो सकता है। यदि सभी लड़कियों ने अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी कर ली तो मातृ मृत्यु बहुत कम होगी। और 5 वर्ष की आयु पूरी करने के बाद एक बच्चे की जीवित रहने की संभावना अधिक होती है यदि वह ऐसी माँ से जन्म लेता है जो पढ़ सकती है। दुनिया भर के अधिकांश लोगों के लिए बेहतर परिणाम केवल तभी संभव है जब देश लड़कियों की शिक्षा में आने वाली बाधाओं को दूर करें। ऐसा करने के आर्थिक कारण भी सुस्पष्ट है: ऐसे कुछ देशों में जहां लड़कों की स्कूली शिक्षा पर ज़ोर दिया जाता है, वहाँ छूटे हुए आर्थिक अवसर की लागत प्रति वर्ष 1 बिलियन डॉलर से अधिक होती है।

शिक्षा के माध्यम से लोगों का सशक्तिकरण रोटेरियनों के रूप में हमारे सबसे साहसिक लक्ष्यों में से एक है। हमें उन लोगों से मिलने के लिए अपने घरों से दूर जाने की ज़रूरत नहीं है जिनके जीवन में रुकावटें इसलिए आती है क्योंकि वे अच्छे से पढ़ नहीं पाते, उनको कुछ पढ़कर सुनाने के लिए वे दूसरों पर निर्भर होते है या जो अपने नाम के सिवा कुछ नहीं लिख सकते।

इस महीने से इस बात पर विचार करें कि आपका क्लब साक्षरता के माध्यम से जीवन कैसे बदल सकता है: स्थानीय संगठनों का समर्थन करें जो वयस्क साक्षरता या स्थानीय भाषा सीखने का समर्थन करने के लिए नि:शुल्क कार्यक्रम की पेशकश करते है या जो शिक्षकों को पढ़ाई-लिखाई पर केंद्रित पेशेवर विकास प्रदान करते है। साक्षरता सलाहकार बनें या दुनिया भर के बच्चों के लिए सीखने के अवसरों को बढ़ाने के लिए ग्लोबल पार्टनरशिप फॉर एजुकेशन जैसे संगठन के साथ काम करें। यह देखने के लिए स्थानीय स्कूलों और पुस्तकालयों के साथ बातचीत करें कि आपका क्लब अपने मौजूदा कार्यक्रमों का समर्थन कैसे कर सकता है या आपके समुदाय में आवश्यक कार्यक्रमों को बनाने में मदद कर सकता है।

भारत के रोटरी क्लबों और उसकी सरकार के बीच एक सफल सहयोग, TEACH कार्यक्रम, ने प्रदर्शित किया है कि लाखों बच्चों तक पहुंचने के लिए साक्षरता प्रयासों को कैसे बढ़ाया जा सकता है। और ऐसे समय में जब भारत भर के स्कूल कोविड-19 महामारी के कारण बंद थे, इस कार्यक्रम का ई-लर्निंग घटक राष्ट्रीय टेलीविजन के माध्यम से 100 मिलियन से अधिक बच्चों तक पहुंच गया।

साक्षरता गरीबी से बाहर निकलने की पहली सीढ़ी है। जैसा कि नोबेल पुरस्कार विजेता मलाला यूसुफजई ने कहा है, ''एक बच्चा, एक शिक्षक, एक किताब और एक कलम दुनिया बदल सकती है।''

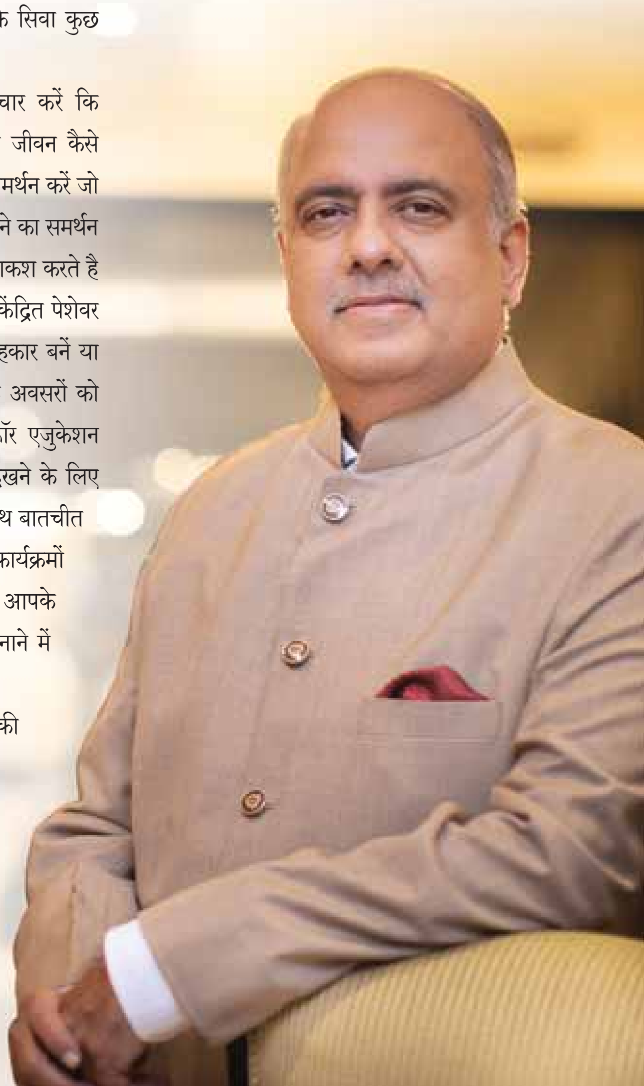

शेखर मेहता

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

संपादक
का संदेश

अफगानी महिलाओं की सहायता कौन करेगा?

जिस समय मैं अफगानिस्तान से आ रही हताश महिलाओं की भयावह तस्वीरें देख रही हूँ जो काबुल हवाई अड्डे पर कांटेदार तारबंदी के पीछे खड़ी चीख-चीख कर मदद की गुहार लगा रही हैं, तालिबान हमारे लिए आ रहे हैं, रो इ के नए फोकस क्षेत्रों बालिकाओं और DEI (विविधता, समानता, समावेश) पर और अधिक ध्यांन केंद्रित किया जा रहा है। 2005 में रिपोर्टिंग के लिए अफगानिस्तान जाना हुआ था और वहां 10 दिन गुजारे थे, बार बार मेरा ख्याल ऊर्जा से भरपूर उन महिलाओं की तरफ चला जाता है जिनसे मेरी बातचीत बाग-ए- ज़नाना , काबुल में महिलाओं के लिए बनाया गया एक विशिष्ट उद्यान में हुई थी। तालिबान को सत्ता से बेदखल हुए चार साल बीत चुके थे, लेकिन अफ़ग़ान महिलाओं के ज़ेहन में उनका खौफ उस वक्त भी बरकरार था और वो अजनबियों से बात करने से कतराती थीं, कहीं वे तालिबानी मुखबिर न हों। लेकिन जब वे आश्वस्त हो गईं कि मैं भारतीय पत्रकार हूं फिर तो उन्होंने अपना दिल खोल कर रख दिया और ये स्वीकार किया कि तालिबान के लौट जाने के इतने अरसे बाद भी उन्हें डरावने सपने आते हैं।

खैर, अफगानिस्तान में तालिबानी राज की शुरुआत हो चुकी है और अंतरराष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने के लिए वो राजनीतिक रूप से उचित बयान दे रहे हैं जैसे महिलाओं के साथ शालीन व्यवहार, लड़कियों को शिक्षा और महिलाओं को कार्यालयों में अनुमति देना। लेकिन पूर्व अनुभव और 1995 से 2001 तक उनके शासनकाल के दौरान अफगान महिलाओं के साथ की गई नृशंसता को देखते हुए, ये कथन खतरे की घंटी प्रतीत होते हैं। बुरका पहने महिला पत्रकार जिनमें पश्चिमी पत्रकार भी शामिल हैं, अपने सिर ढके हुए, साहसपूर्वक काबुल की सड़कों पर निकल रही हैं, स्थानीय लोगों और तालिबान दोनों का बराबर साक्षात्कार कर रही हैं। एक वीडियो फुटेज में हम देख सकते हैं, जब एक महिला रिपोर्टर उनसे पूछती है कि क्या उनकी सरकार में लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई महिलाओं को अनुमति दी जाएगी। तालिबान नेता बुरी तरह से अट्टहास करने लगा और बोला "बंद करो कैमरा।"

काबुल से जमीनी रिपोर्टिंग कर रही सीएनएन की क्लेरिसा वार्ड को भी उसे और उसके सहयोगियों को तालिबान ने धमकी दी थी, लेकिन वे निकल भागने में सफल रहे। अफगान वायु सेना की पहली महिला पायलट, वर्तमान में अमेरिका में रह रही नीलोफर रहमानी ने कहा कि वो अपने परिवार और देश की महिलाओं दोनों को ले कर भयभीत है। उनकी भविष्यवाणी है कि बहुत जल्द ये दुनिया "काबुल स्टेडियम में बिना किसी वजह एक महिला पर होने वाले पथराव की गवाह बनेगी।"

प्रतिभाशाली अफगान उपन्यासकार खालिद हुसैनी, जिन्होंने सोशल मीडिया पर अपना कलेजा निकाल कर रख दिया जब तालिबान ने अफगानिस्तान पर कुछ ही दिनों में आसानी से कब्जा कर लिया, उन्होंने एक फेसबुक पोस्ट में लिखा कि उनका दिल बुरी तरह से टूट चुका है और वो असहाय महसूस करते हैं, और उन लाखों अफ़गानों को ले कर चिंतित हैं जो (अपने घर छोड़ कर) भाग गए हैं। वे कहाँ जाएंगे? उनके साथ क्या होगा? लेकिन सबसे ज्यादा फ़िक्र मुझे अपनी अफगान बहनों की है। किसी भी अन्य वर्ग के मुकाबले महिलाओं और लड़कियों को ज़्यादा तकलीफ सहनी पड़ती है। पिछली बार जब तालिबान ने अफगानिस्तान पर शासन किया था, उस समय के उत्पीड़न की कई भयानक छवियां उनके मस्तिष्क पटल पर आज भी अंकित हैं: सार्वजनिक रूप से पिटाई, हाथ काटना, स्टेडियमों के अंदर फांसी, ऐतिहासिक कलाकृतियों का बर्बर और मूर्खतापूर्ण विनाश।

लेकिन मेरे ज़ेहन में तालिबान की स्थायी छवि 1990 के दशक के आसपास, बुर्का-पहने महिला को छड़ी से पीटते हुए तालिब की है। तालिबान ने महिलाओं को बाकायदा जानबूझ कर प्रताड़ित किया था। उन्होंने उनकी आवाजाही की स्वतंत्रता, कार्य करने की उनकी स्वतंत्रता, शिक्षा का उनका अधिकार, आभूषण पहनने का अधिकार, अपने नाखून खूबसूरत और लम्बे करने या उन्हें रंगने, सार्वजनिक रूप से हंसने, यहां तक कि अपना चेहरा दिखाने का अधिकार भी छीन लिया था।

सिबा शाकिब की मार्मिक पुस्तक का शीर्षक *अफ़ग़ानिस्तान वेयर गॉड कम्स ओनली टू वीप*, ज़ेहन में उभर के आता है। यह पुस्तक साहसी महिला शिरीन-गोल के बारे में है, जो 1979 में रूसी बमों से अपने गांव के तबाह होने के बाद, भाग कर पहले काबुल गई और फिर पाकिस्तान में एक शरणार्थी शिविर में पहुँची, जहां अपने भाई द्वारा जुए में हारे गए रुपये चुकाने के बदले उसे शादी के लिए मजबूर किया गया और देश से बाहर भागने की नाकाम कोशिश के बाद अपने परिवार का पालन पोषण करने के लिए अंततः उसे अपना शरीर बेचना पड़ा था।

रशीदा भगत

Governors Council

RID 2981 S Balaji
RID 2982 K Sundharalingam
RID 3000 R Jeyakkan
RID 3011 Anup Mittal
RID 3012 Ashok Aggarwal
RID 3020 Rama Rao M
RID 3030 Ramesh Vishwanath Meher
RID 3040 Col Mahendra Mishra
RID 3053 Sanjay Malviya
RID 3054 Ashok K Mangal
RID 3060 Santosh Prdhan
RID 3070 Dr Upinder Singh Ghai
RID 3080 Ajay Madan
RID 3090 Parveen Jindal
RID 3100 Rajiv Singhal
RID 3110 Mukesh Singhal
RID 3120 Samar Raj Garg
RID 3131 Pankaj Arun Shah
RID 3132 Dr Omprakash B Motipawale
RID 3141 Rajendra Agarwal
RID 3142 Dr Mayuresh Warke
RID 3150 K Prabhakar
RID 3160 Thirupathi Naidu V
RID 3170 Gaurishkumar Manohar Dhond
RID 3181 A R Ravindra Bhat
RID 3182 Ramachandra Murthy M G
RID 3190 Fazal Mahmood
RID 3201 Rajasekhar Srinivasan
RID 3203 Shanmugasundaram K
RID 3204 Dr Rajesh Subash
RID 3211 Srinivasan K
RID 3212 Jacintha Dharma
RID 3231 Nirmal Raghavan W M
RID 3232 Sridhar J
RID 3240 Dr Mohan Shyam Konwar
RID 3250 Pratim Banerjee
RID 3261 Sunil Phatak
RID 3262 Santanu Kumar Pani
RID 3291 Prabir Chatterjee

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by PT Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions — original content — is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced with permission and attributed to RNT.

हमें अंगदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है

बहुत से रोटेरियन इस बात से अवगत नहीं होंगे कि भारत दुनिया में सबसे अधिक संख्या में प्रत्यारोपण करने में संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दूसरे स्थान पर है। हालांकि, भारत में प्रत्यारोपण सर्जरी की आवश्यकता वाले और इसे प्राप्त करने वाले लोगों के बीच एक बड़ा अंतर है। और यह मुख्य रूप से जागरूकता की कमी, अज्ञानता और उपयुक्त अंग दाताओं एवं उचित चिकित्सा सुविधाओं तक पहुंच के कारण है।

भारत का अंगदान प्रति मिलियन जनसंख्या पर अनुमानित 0.65 है, और स्वेच्छा से अंग दान करने पर जागरूकता को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। सरकार ने इस मुद्दे को हल करने के लिए राष्ट्रीय, ज़ोनल और क्षेत्रीय स्तर पर अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन की स्थापना की है।

अंगदान दो प्रकार का होता है जीवित और मृत दान। भारतीय कानूनों के तहत, दानकर्ताओं और उनके परिवारों को अंग दान करने के लिए सहमत होना चाहिए। मृत्यु के बाद परिवार के करीबी सदस्यों की सहमति आवश्यक है। संयोग से रोटरी क्लब पुणे गांधी भवन, मंडल 3131, ने 2018 में 950 शहरों से अंगदान के लिए रिकॉर्ड संख्या में लोगों का नाम दर्ज करके गिनीज रिकॉर्ड बनाया है।

भारत में यकृत प्रत्यारोपण के बाद गुर्दा दान सबसे लोकप्रिय दान है जिसमें हृदय और फेफड़े के प्रत्यारोपण के लिए बहुत कम विकल्प होते है। हैदराबाद के रोटरी क्लब ने जल चुके एवं आघात के रोगियों की सहायता के लिए तेलंगाना में अपनी तरह का पहला त्वचा बैंक स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जबकि भारत में अंगदान की दर पर कोई डेटा उपलब्ध नहीं है, लेकिन मांग और आपूर्ति के बीच एक बड़ी असमानता बनी हुई है। हालांकि बढ़ती जागरूकता के साथ हम बड़ी आबादी से दान करने की उम्मीद कर सकते है। 1994 में मानव अंगों को निकालने, भंडारण और प्रत्यारोपण को नियमित करने के लिए ट्रैन्ज़्प्लैन्टैशन ऑफ यूमन ऑर्गन्स ऐक्ट पारित किया गया; इसकी कमियों को दूर करने के लिए 2011 में इसे संशोधित किया गया।

रोटरी जैसे गैर-लाभकारी संगठन सक्रिय रूप से जागरूकता बढ़ाने और अंग दान की प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए काम कर रहे है, और लोगों की मदद करने हेतु दान करने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता भी बढ़ा रहे है। हमें अपने स्थानीय समुदायों को शिक्षित करना होगा कि दान करने का वचन देने की प्रक्रिया काफी सरल है। लेकिन पूरी प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने की जरूरत है क्योंकि अतीत में अंगों, खासकर किडनी की बिक्री के मामले सामने आ चुके है।

दुर्भाग्य से, भारत में केवल 0.01 प्रतिशत आबादी ने अंगदान और अंगदान हेतु सहमति प्रकट करने की इच्छा जताई है। इस क्षेत्र में अभी भी बहुत काम करने की आवश्यकता है और हम रोटेरियनों को इस महत्वपूर्ण और विवेचनात्मक सेवा के बारे में जागरूकता फैलाने की जरूरत है जो एक इंसान अपने गुजरने के बाद प्रदान कर सकता है।

महेश कोटबगी
रो ई निदेशक, 2021-23

का संदेश

हर बच्चे को मिलनी चाहिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

पिछले कुछ सप्ताह कठिनाई भरे गुज़रे है। महामारी के अलावा, हमनें हैती में भूकँप, ग्रीस में अनियंत्रित आग और अफगानिस्तान में अशान्ति देखी है। जहां हमरि संवेदनाएं प्रभावित लोगों के साथ है, इस तरह की घटनाएं रोटरी जैसे संगठनों की प्रासंगिकता की पुष्ट करती है। दुनिया भर में कम भाग्यशाली लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए रोटेरियन अथक प्रयास कर रहे है।

विश्व शांति के लिए हमरि प्रतिबद्धता पहले से कहीं ज्यादा मजबूत है। शांति केवल युद्ध की अनुपस्थिति नहीं होती है। वास्तविक शांति तभी स्थापित हो सकती है जब इस दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति तक रोटी, कपड़ा और मकान की पहुँच सुनिश्चित हो जाए। शांति तभी कायम हो सकती है जब हम एक रोग मुक्त विश्व का निर्माण कर सकें। शांति तभी कायम हो सकती है जब सभी को सस्ती बुनियादी शिक्षा मिल सकें। ये सभी ऐसे क्षेत्र है जिन पर रोटरी क्लब और रोटेरियन इस दुनिया को एक शांतिपूर्ण जगह बनाने की अपनी कोशिश में ध्यान केंद्रित कर रहे है।

परिवर्तन लाने के लिए एक व्यक्ति को बड़े सपने देखना और ऊंचा लक्ष्य रखना चाहिए। हमरि सेवा से जीवन परिवर्तित होना चाहिए। सार्थक प्रभाव डालने वाली बड़ी सेवा परियोजनाएं समय की मांग है। मैं हर क्लब से आग्रह करता हूं कि वे अपनी लक्ष्य को ऊंचा रखे और जल्द ही आपको एहसास होगा कि आपको उन लक्ष्यों तक पहुंचने का रास्ता मिल गया है। यही नेक इरादे और निस्वार्थ विचारों का जादू होता है।

भारत में रोटेरियनों ने इस देश को पूरी तरह से साक्षर बनाने का संकल्प लिया है और बुनियादी शिक्षा एवं साक्षरता के इस महीने में,प्रत्येक क्लब एक ऐसी गतिविधि करे जो हमें इस लक्ष्य के करीब ले जाए। हो सकता है कि इस महामारी ने कुछ और बच्चों को शिक्षा तंत्र से बाहर कर दिया हो, परंतु हमारा कर्तव्य यह है कि हम उनका पता लगाएं, उनकी पहचान करें और उन्हें वापस स्कूल में पहुंचाए। आइए इस देश के प्रत्येक बच्चे तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंचाए। आइए हर स्कूल को एक खुशहाल जगह बनाए जहां हर बच्चा जाने के लिए उत्सुक हो। आइए हम इस देश में हर बच्चे के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध,सुलभ और सस्ती बनाए। एक साक्षर आबादी कई अन्य क्षेत्रों में भी सकारात्मक बदलाव ला सकती है।

हमें नहीं पता कि रोटरी भविष्य में कैसी होगी लेकिन यह काफी हद तक इस बात पर निर्भर करेगा कि हम आज क्या करते है। आइए हम अपने संगठन के भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास करें।

ए एस वेंकटेश
रो ई निदेशक, 2021-23

Board of Trustees

Shekhar Mehta RID 3291
RI President

Dr Mahesh Kotbagi RID 3131
RI Director &
Chairman, Rotary News Trust

A S Venkatesh RID 3232
RI Director

Gulam A Vahanvaty RID 3141
TRF Trustee

Rajendra K Saboo RID 3080
Kalyan Banerjee RID 3060
Panduranga Setty RID 3190
Sushil Gupta RID 3011
Ashok Mahajan RID 3141
P T Prabhakar RID 3232
Dr Manoj D Desai RID 3060
C Basker RID 3000
Dr Bharat Pandya RID 3141
Kamal Sanghvi RID 3250

Executive Committee Members (2021–22)

Gaurish Dhond RID 3170
Chairman
Governors Council

Anup Mittal RID 3011
Secretary
Governors Council

Ramesh Meher RID 3030
Secretary
Executive Committee

V Thirupathi Naidu RID 3160
Treasurer
Executive Committee

Jacintha Dharma RID 3212
Member
Advisory Committee

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Rotary News Trust
3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.
Phone: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Now share articles from
rotarynewsonline.org
on WhatsApp.

अगर आप सपना देख सकते है, तो आप उसे पूरा भी कर सकते है

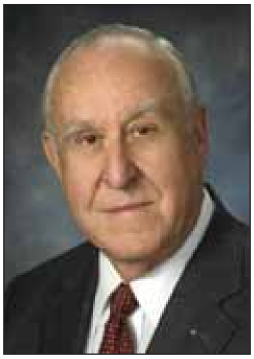

मलाला यूसुफजई लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा के लिए कार्य कर वाली एक युवा पाकिस्तानी कार्यकर्ता है। एक किशोरी के रूप में, मलाला, जिसे दुनिया उसके पहले नाम से जानती है, ने साहसपूर्वक लड़कियों की पढ़ाई के अधिकारों के लिए आवाज उठाई। उसके देश के चरमपंथी मलाला से असहमत थे, और स्कूल से घर लौटते समय एक तालिबानी बंदूकधारी ने उसे गोली मार दी थी।

लेकिन उस हमले से वो डरी नहीं; बल्कि इसने उसे और अधिक दृढ़ बना दिया। स्वस्थ होते ही उसने शिक्षा सक्रियता के अपने मिशन को फिर से शुरू किया। आज मलाला फंड दुनिया भर में विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से शिक्षा का समर्थन करता है। मलाला न केवल रोटरी सदस्यों के लिए एक प्रेरणा है, बल्कि हमारे बीच कुछ समानताएं भी है: जो सही है उसे करने की एक ललक, साक्षरता के लिए एक जुनून और सपनों को हकीकत में बदलने की ताकत।

मेरे जीवन का एक आदर्श कथन है: यदि आप सपना देख सकते है, तो आप उसे पूरा भी कर सकते है। यह उन सभी चीजों पर लागू होता है जो रोटेरियन करते है, खासकर रोटरी फाउंडेशन के साथ। मलाला की तरह हम जानते है कि साक्षरता कई लोगों के लिए गरीबी से बाहर निकलने का पहला कदम है। अन्य मंडलों में क्लबों के साथ विचारों का आदान-प्रदान करते है और रोटरी के बाहर के लोगों एवं संगठनों के साथ काम करते है। मंडल अनुदान या वैश्विक अनुदान के रूप में हमारा योगदान उस समुदाय के लिए उपयोग किया जाएगा। और अगर यह एक रोटरी अनुदान है तो आप शर्त लगा सकते है कि यह सुनियोजित, सामरिक और सबसे बढ़कर, टिकाऊ होगा। हम चाहते है कि साक्षरता का उपहार केवल एक बार की गई पुस्तक का दान न हो, बल्कि समय के साथ एक समुदाय को बदलने की योजना हो।

जब पिछले साल वैश्विक कोविड-19 महामारी की मार पड़ी थी तो कई क्लबों ने लैपटॉप कंप्यूटर प्रदान करने सहित समुदायों को ऑनलाइन स्कूली शिक्षा में समायोजित करने में मदद करने हेतु कार्यवाही की। रोटरी के योगदान अनगिनत है, हमारे स्वयंसेवक अथक है। और जितना मैं रोटेरियनों को जानता हूँ, मुझे पता है कि इस संदेश के मिलते ही और योगदान तैयार किए जाएंगे।

साक्षरता और शिक्षा परियोजनाओं के लिए रोटरी का जुनून जगजाहिर है। उन्हें पूरा करने की हमारी प्रतिबद्धता भी वैसी ही है। याद रखें अगर आप सपना देख सकते है, तो आप इसे पूरा भी कर सकते है - बिल्कुल मलाला की तरह।

जॉन एफ जर्म
संस्थान न्यासी प्रमुख

सांस्कृतिक समृद्धि

मियोकी वालकर

आपकी रुचि चाहे शास्त्रीय या समकालीन कला, फोटोग्राफी या वास्तुकला किसी में भी है, ह्यूस्टन में आप के लिए एक संग्रहालय मौजूद है। 2022 रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन, 4 से 8 जून के दौरान, शहर के संग्रहालय जिले के लिए एक दिन की यात्रा की योजना बनाएं: इसके 19 संग्रहालयों में शामिल हैं- समकालीन कला संग्रहालय; मेनिल संग्रह, एक 30-एकड़ का परिसर जिसमें निःशुल्क और पूरी तरह से सुलभ दीर्घाएं हैं; और बच्चों का संग्रहालय ह्यूस्टन, जो कि संयुक्त राज्य अमेरिका में अपनी तरह के सबसे अच्छे संग्रहालयों में से एक है।

यहां, तीन इमारतों में फैले लगभग 70,000 कलाकृतियों के साथ इनमें ललित कला संग्रहालय, ह्यूस्टन का संग्रह, प्राचीन कला से लेकर हेनरी मैटिस और जोन मिरो द्वारा बनायी गयीं 20 वीं शताब्दी की मूर्तियों तक शामिल हैं।

रोथको चैपल, जिसकी शुरुआत जॉन और डोमिनिक डी मेनिल द्वारा की गयी थी, जो कि ह्यूस्टन के कलादृश्य के अग्रदूतों के रूप में जाने जाते थे, 1971 में अपने दरवाजे खोलने के बाद से एक ज़रूरी देखने लायक स्थान रहा है। मार्क रोथको द्वारा इसमें मौजूद 14 बड़े अमूर्त चित्रों और इसके जानबूझकर बनाये गए वास्तुशिल्प विकल्प, आध्यात्मिक अन्वेषण और सामाजिक परिवर्तन को उत्तेजित करने के लिए हैं।

क्या आप प्रकृति के साथ फिर से जुड़ने के लिए तैयार हैं? तो आप ह्यूस्टन प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय की तरफ़ रुख करें, जहां आप कॉकरेल तितली केंद्र में टहलने जा सकते हैं, रेनफॉरेस्ट कंजर्वेटरी झरने के नीचे झांक सकते हैं, और एंटोमोलॉजिस्ट को सुन सकते हैं जो कि प्रदर्शन पर प्राणियों की अधिकता के बारे में बोलते हैं और यदि आप हमेशा इस बारे में उत्सुक रहे हैं कि क्रिकेट चिप्स का स्वाद कैसा होता है, तो आप भाग्यशाली हैं - बस इन्सेक्ट वेंडिंग मशीन से एक नाश्ता लेकर खाएं।

अधिक जानने और रजिस्टर करने के लिए *convention.rotary.org* पर देखें।

Rotary at a glance

Rotary clubs	:	36,787
Rotaract clubs	:	10,408
Interact clubs	:	16,393
*RCCs	:	11,769
Rotary members	:	1,181,919
Rotaract members	:	221,650
Interact members	:	377, 039

As on August 18, 2021

Membership Summary

As on August 1, 2021

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians (%)	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
2981	128	5,807	7.35	31	51	225
2982	76	3,373	7.03	44	97	68
3000	132	5,164	9.43	88	259	213
3011	121	4,410	27.71	68	113	36
3012	127	3,952	26.44	59	75	59
3020	76	4,255	6.51	26	166	350
3030	94	4,859	14.47	114	226	359
3040	102	2,536	14.31	40	78	196
3053	66	2,724	16.23	29	48	116
3054	183	7,345	20.12	99	167	562
3060	112	4,957	14.65	62	67	147
3070	120	3,177	15.33	34	23	58
3080	94	3,767	12.16	124	156	113
3090	88	2,223	4.27	32	17	123
3100	103	2,268	9.92	8	19	146
3110	133	3,516	10.18	11	15	106
3120	84	3,397	15.96	57	30	55
3131	135	4,900	22.8	98	223	131
3132	88	3,355	10.25	28	122	165
3141	116	6,061	26.28	131	175	100
3142	101	3,466	20.83	74	137	80
3150	114	4,038	13.32	74	135	118
3160	76	2,439	6.85	14	20	82
3170	137	5,910	13.87	82	236	171
3181	85	3,310	8.79	31	193	115
3182	84	3,143	9.51	42	124	104
3190	154	6,155	18.23	146	187	67
3201	151	5,774	8.83	92	87	54
3203	84	4,205	7.44	71	232	36
3204	61	1,944	6.07	16	22	13
3211	145	4,642	7.76	6	24	133
3212	141	5,102	11.9	74	204	153
3231	96	3,463	7.65	28	81	419
3232	144	7,254	16.75	105	209	97
3240	99	3,404	15.19	55	402	214
3250	102	3,702	19.94	59	73	184
3261	82	2,944	17.66	14	23	44
3262	116	3,877	13.03	62	47	80
3291	163	3,901	22.46	127	93	637
India Total	**4,313**	**1,60,719**		**2,355**	**4,656**	**6,129**
3220	76	2,283	16.51	86	131	74
3271	122	1,984	16.43	89	134	24
3272	146	1,863	17.34	45	18	47
3281	299	8,102	18.71	261	144	208
3282	169	3,800	11.55	196	46	47
3292	152	5,941	16.55	164	125	127
S Asia Total	**5,277**	**1,84,692**		**3,196**	**5,254**	**6,656**

Source: RI South Asia Office

इरोड के रोटेरियनों ने सिर्फ 45 दिनों में ₹20 करोड़ के अस्पताल का निर्माण कर इतिहास रचा

रशीदा भगत

मैं पूर्ण रूप से आश्चर्यचकित हूँ, शब्दों में बयान नहीं कर सकता... और आपके साथ इस शानदार अस्पताल के सामने खड़े हो कर मुझे अद्भुत अहसास हो रहा है। ₹20 करोड़ की लागत से बनाया गया एक अस्पताल सभी उपकरणों से सुसज्जित और वो भी केवल 45 दिनों में'', इरोड में रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने एक कार्यक्रम में भाग लेते हुए कहा, जहां रोटेरियनों ने 401-बेड के अत्याधुनिक कोविड अस्पताल का निर्माण कर इसे इरोड सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल को सौंप दिया।

इस परियोजना के आकार, समय और निर्माण की द्रुत गति से पूरी तरह से अभिभूत, परियोजना को शुरू से ले कर उसे पूर्ण करने के लिए ज़िम्मेदार पीडीजी डॉ ई के सगधेवन, RID 3203, से उन्होंने कहा : ''इस विलक्षण कार्य को निष्पादित कर आपने मेरा दिन ही नहीं बल्कि रो इ अध्यक्ष के रूप में मेरा पूरा साल बना दिया है। क्योंकि इतने कम समय में इतने बड़े प्रोजेक्ट को पूर्ण कुशलता के साथ पूरा करने के लिए बहुत साहस की आवश्यकता होती है, यह सिर्फ एक रोटरी उपलब्धि नहीं है बल्कि एक इंजीनियरिंग चमत्कार है।''

मेहता ने कहा कि भवन निर्माण उनका व्यवसाय है, वो स्वयं भी बिल्डर हैं ''और अमूमन, एक इमारत की नींव भरने में लगभग 40-45 दिन लगते हैं। लेकिन आपने तो यहां 45 दिनों के भीतर पूरी बिल्डिंग ही खड़ी कर दी। और सिर्फ केवल बिल्डिंग ही नहीं, आपने इसे अस्पताल के रूप में परिवर्तित कर ऑक्सीजन आपूर्ति के अंतिम स्तर तक तैयार कर दिया है। यह अपनेआप में अनूठा है और मुझे यकीन है कि रोटरी इतिहास में इसे अब तक की सर्वश्रेष्ठ परियोजनाओं में दर्ज किया जाएगा। रोटरी में मेरे 36 वर्षों के दौरान, मुझे याद नहीं आता कि इस स्तर और परिमाण की एक भी परियोजना मैंने देखी हो।

इस परियोजना की एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक बात यह भी है कि अतिरिक्त बेड की वजह से इस मेडिकल कॉलेज अस्पताल में

अस्पताल में रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता, RID गण महेश कोटबागी और ए एस वेंकटेश। चित्र में (बाएं से): डीजी के सुंदरलिंगम (2982), रोटेरियन के के विजयचंद्रन, एस सेनगुट्टुवन, पीडीजी गण ए कार्तिकेयन (3203), ई के सागादेवन (3203), किशोर कुमार (3020), सी शिवनियनासेल्वम (2982), पी एम शिवशंकरन (3203), डीजी शनमुगसुंदरम (3203), डीजीएन डॉ एस सुंदरराजन (3203) और पीडीजी के ए कुरियाचन (3201) भी शामिल है।

बैठे (बाएं से): *रोटरी हेल्थ केयर ट्रस्ट के अध्यक्ष एस सेनगुट्टुवन, RID वेंकटेश, डीजी शनमुगसुंदरम, रो ई अध्यक्ष मेहता, RID कोटबागी और पीडीजी किशोर कुमार चेरुकुमाली।* **पिछली पंक्ति में खड़े हुए (बाएं से):** *वी राजमणिकम, ट्रस्ट के उपाध्यक्ष; पीडीजी शिवशंकरन (संरक्षक); वी मोहनराज (कोषाध्यक्ष); जी शनमुगम (संस्थापक ट्रस्टी); पीडीजी डॉ सागादेवन(संस्थापक अध्यक्ष); के के विजयचंद्रन (संयुक्त सचिव) और एम के शिवकुमार (संस्थापक ट्रस्टी)।*

150 अतिरिक्त डॉक्टरों को भी प्रशिक्षण दिया जा सकेगा।

विनोद करते हुए, उन्होंने सागादेवन के भाषण का जिक्र किया, जिसमें उन्होंने कहा था कि परियोजना की टीम ने इतने बड़े अस्पताल के निर्माण का फैसला इसलिए लिया क्योंकि मेहता ने हमेशा रोटेरियनों से विशाल और साहसिक परियोजनाएं हाथ में लेने के लिए कहा था। ''हालांकि, ये बात कहता तो मैं हर जगह हूं लेकिन मुझे ये देख कर बहुत खुशी हो रही है कि इस बात का यहां जबरदस्त असर पड़ा है।''

इससे पहले, अस्पताल परियोजना की जानकारी देते हुए पीडीजी सागदेवन ने कहा कि मई में कोविड महामारी की दूसरी लहर के दौरान, जब इस क्षेत्र के - कोयंबटूर, सलेम और इरोड - लोग ऑक्सीजन लगाए हुए एम्बुलेंस में एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल में भटक रहे थे और खउण में बिस्तर नहीं मिलने की वजह से उनमें से कुछ रास्ते में ही दम तोड़ गए थे। रोटरी क्लब इरोड के एक सदस्य रो शिवबालन ने सरकारी अस्पताल के डीन डॉ मणि से संपर्क किया। उन्होंने रोटरी द्वारा 75 कोविड बेड दान करने का सुझाव दिया, लेकिन डीन ने कहा कि वह उन बिस्तरों को कहाँ रखेंगे और सुझाव दिया कि रोटेरियन उन बिस्तरों को रखने के लिए एक अस्पताल की इमारत भी उपलब्ध कराएं। इरोड में यह शैक्षिक अस्पताल 300 एकड़ में फैले विशाल परिसर में स्थित है।

> रोटरी में मेरे 36 वर्षों के दौरान, मुझे याद नहीं आता कि इस स्तर और परिमाण की एक भी परियोजना मैंने देखी हो।

अपार सीएसआर राशि

सगादेवन ने कहा कि 1,000 बिस्तर वाले इस अस्पताल में, दूसरी लहर के शिखर पर पहुँचने के दौरान मरीजों के लिए एक बिस्तर भी उपलब्ध नहीं था। हमने महसूस किया कि अगर अनुमानित तीसरी लहर आई तो इस क्षेत्र में कोविड रोगियों के इलाज के लिए अतिरिक्त क्षमता उपलब्ध होनी चाहिए। सरकारी अस्पताल ने भूमि उपलब्ध कराई और ₹75 लाख से शुरू हुई परियोजना जल्द ही **₹20 करोड़** में बदल गई, जिसमें दो टीआरएफ वैश्विक अनुदान के लगभग ₹1.5 करोड़ (200,000 डॉलर) शामिल थे।

धन की व्यवस्था करने के लिए जब रोटेरियन मंत्रणा कर रहे थे - ₹14.5 करोड़ भवन के लिए और शेष ₹5.5 करोड़ चिकित्सा उपकरणों के लिए - तभी एक बिल्डर, रोटरी क्लब तिरुपुर दक्षिण के एक एकेएस सदस्य रोटेरियन के नंदगोपाल ने सुझाव दिया कि इसका निर्माण प्री-कास्ट तकनीक से होनी चाहिए क्योंकि अस्पताल को शीघ्रातिशीघ्र खड़ा करना था। शुरू में निर्माण कार्य आरम्भ करने के लिए हमारे पास पैसे नहीं थे तो वे स्वयं आगे आए और इस परियोजना के लिए ₹1 करोड़ दान किये। हमने तुरंत एक ट्रस्ट का गठन किया - रोटरी हेल्थ केयर ट्रस्ट - और देखते ही देखते इरोड के सभी 125 रोटेरियनों ने ₹5-5 लाख का दान दिया और उन सभी को हमने इस का ट्रस्टी बना लिया।

इसके बाद, वे सीएसआर फंड के तहत **शक्ति मसाला समूह से ₹2 करोड़, ओलिरुम इरोडु फाउंडेशन से ₹2 करोड़ और आदित्य मसाला बनाने वाली नानी एग्रो फूड्स से ₹1 करोड़ की व्यवस्था करने में सफल रहे।**

सगदेवन संस्थापक ट्रस्टी हैं, रोटरी क्लब इरोड के पूर्व अध्यक्ष एस सेनगोट्टुवन, ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं, शिवबालन सचिव हैं, और हर व्यक्ति जिसने पर्याप्त राशि दान की है वह या तो एक कार्यकारी ट्रस्टी है या ट्रस्टी है। उन्होंने कहा कि अस्पताल को सुसज्जित करने में कोई कमी नहीं छोड़ी गई और सभी बिस्तर ऑक्सीजन आपूर्ति से लैस है; 58 आईसीयू बेड, 58 डायलिसिस बेड हैं। उन्होंने कहा, एक बार जब कोविड समाप्त हो जाएगा तो इसे एक गैर-कोविड रोटरी स्पेशलिटी हॉस्पिटल में परिवर्तित कर दिया जाएगा,

जिसमें परामर्श कक्ष, चार ऑपरेशन थिएटर आदि रहेंगे। अस्पताल का डिजाइन भविष्य की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए किया गया है, उन्होंने कहा।

ये कहते हुए वे भावुक हो गए, कि परियोजना में शामिल ''कोर टीम सबसे अधिक इस बात को ले कर उत्साहित थी कि यह स्थायी अस्पताल हमारे जाने के बाद भी लोगों की ज़िंदगी बचाना जारी रखेगा; यही हमारा उद्देश्य है। इसे रिकॉर्ड समय में तैयार करने के लिए जब हम दिन-रात काम कर रहे थे उस वक्त इस सरकारी अस्पताल में कोविड के 1,000 मरीज थे और हमारे परिवार के सदस्य हमारे संक्रमित होने के खतरे को ले कर बहुत चिंतित थे, लेकिन हमने परियोजना का निर्माण जारी रखा और इसे पूर्ण किया।''

उन्होंने डीजी के षणमुगसुंदरम और पीडीजी पीएम शिवशंकरन को उनके पूर्ण सहयोग और सहायता के लिए धन्यवाद दिया, यह कहते हुए कि इस अनूठी परियोजना ने न केवल रोटरी की सार्वजनिक छवि बढ़ाई है बल्कि रोटरी को विकसित करने के दोहरे उद्देश्य को भी प्राप्त किया था। जैसे ही निर्माण कार्य आरम्भ हुआ, कई गैर-रोटेरियन ने इसके लिए ₹5 लाख का अतिरिक्त योगदान दिया और बाद में रोटरी में शामिल हो गए; इस परियोजना के लिए रोटरी क्लब इरोड और इरोड सेंट्रल द्वारा 100 से अधिक नए सदस्यों को जोड़ा गया है। अन्य नज़दीकी मंडलों के रोटेरियनों ने ₹2 लाख का योगदान दिया और ट्रस्टी के रूप में जुड़े हैं; ट्रस्ट में अब 11 कार्यकारी न्यासी, 125 न्यासी और 200 से अधिक सदस्य हैं।

भारत में, हम लोग मंदिर बनाते हैं, लेकिन आपने 45 दिनों की अविश्वसनीय अत्यंत अल्प अवधि में सेवा, आशा और आरोग्य के मंदिर का निर्माण किया है।

महेश कोटबागी
रो ई निदेशक

उन्होंने कहा, ''हमने देखा है कि अक्सर क्लब के सदस्य परियोजनाओं के लिए सहयोग नहीं करते; लेकिन इस बार तो हर तरफ से पैसा आया इरोड क्लब और पड़ोसी क्लबों के सदस्य, हमारे सम्पूर्ण मंडल (3203) और पड़ोसी मण्डलों से भी जिसमें कई पीडीजी का योगदान शामिल था। दूसरे देशों से भी पैसा आया है। किसी भी देश से कोई भी व्यक्ति योगदान कर ट्रस्टी बन सकता है।

बैठक को संबोधित करते हुए, अस्पताल के डीन डॉ मणि ने कहा कि दूसरी लहर के दौरान, जब लोग अस्पताल में ऑक्सीजन के बिस्तरों की कमी की वजह से मर रहे थे, मैं बहुत तकलीफ में था और मुझे नींद नहीं आती थी। लेकिन दो चीजों में मेरा पूर्ण विश्वास है - प्रार्थना और कृतज्ञता। मैं रोटरी का और रोटेरियनों का अत्यंत आभारी हूं जो जरूरत के वक़्त हमारी मदद के लिए आगे आए। अब मैं चैन की नींद सो सकता हूँ क्योंकि मेरे पास 401 अतिरिक्त बिस्तर उपलब्ध हैं, इसके लिए रोटरी को धन्यवाद।

लेकिन, उन्होंने ये भी जोड़ा कि, इतना शानदार अस्पताल बनाने के बाद, आप रोटेरियनों से एक और गुजारिश है। कभी ना कभी तो मैं यहां से जाऊंगा, लेकिन वादा करें कि जो अस्पताल आप ने बनाया है, मेरे जाने के बाद आप उसकी देखभाल भी करेंगे।

आशा और आरोग्य का मंदिर

रो इ निदेशक महेश कोटबागी, जो खुद पुणे में स्वयं एक अस्पताल चलाते हैं, उन्होंने कहा: ''आज मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं, मैं निशब्द हूँ। भारत में, हम लोग मंदिर बनाते हैं, लेकिन आपने 45 दिनों की अविश्वसनीय अत्यंत अल्प अवधि में सेवा, आशा और आरोग्य के मंदिर का निर्माण किया है। 45 दिनों में ₹20 करोड़ इकट्ठा करने का मतलब है प्रत्येक दिन आधा करोड़ रुपये इकट्ठा करना। मैं आपसे आग्रह करूंगा कि वर्तमान क्षमता का विस्तार कर यहां 1 लाख वर्ग फुट का निर्माण करें।''

अपने पुणे अस्पताल में कोविड की दूसरी लहर के दौरान उपजी चिंता और पीड़ा को याद करते हुए,

रो ई अध्यक्ष मेहता ने RID कोटबागी, RID वेंकटेश की उपस्थिति में रोटरी स्पेशलिटी अस्पताल की चाबी इरोड सरकारी अस्पताल के डीन डॉ मणि को सौंपी।

कोटबागी ने कहा कि एक दिन जब उनके एक स्टाफ सदस्य ने उन्हें बताया कि हमारे आईसीयू में 160 मरीज हैं और अगले चार घंटों में तरल ऑक्सीजन ख़त्म हो जाएगी,मेरी धड़कनें रुक गई। यह सुनते ही मेरी सांस फूल गई। हम डॉक्टर एक ऐसे उद्योग में हैं जहां रोज़ाना हम उन लोगों से निपटते हैं जो दर्द, पीड़ा, तकलीफ ले कर आते हैं। अस्पताल बनाना एक मुश्किल काम है, लेकिन उससे भी कठिन है अस्पताल चलाना और उसका रखरखाव । इसलिए डीन, डॉ मणि ने रोटरी को अस्पताल का रखरखाव करने के लिए कहकर एक बहुत ही चतुराई का काम किया था ''और मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूं कि रोटरी ऐसा ही करेगी।''

रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश ने डॉ मणि के शब्दों का उल्लेख करते हुए कहा कि कोविड की दूसरी लहर के सबसे खराब दौर में वो सो नहीं पाते थे, उन्होंने रोटेरियनों को इस अद्भुत परियोजना के लिए बधाई दी। उनकी मदद के लिए आगे आकर आपने बहुत बड़ी सेवा की है। एक सच्चा रोटेरियन वो है, जब किसी बच्चे को स्कूल नहीं जाते हुए देखता है, तो वो उसे सिर्फ स्कूल में भर्ती कराने के बारे में ही नहीं सोचता बल्कि उस बच्चे के लिए एक स्कूल का निर्माण करने के बारे में भी सोचता है। आपने मूल रूप से दिए गए बिस्तरों को रखने के लिए अस्पताल का निर्माण कर, डॉ मणि को इस संकट से राहत दिला कर कुछ ऐसा ही महान कार्य किया है।

अध्यक्ष मेहता के लगातार दोहराए जाने वाले मंत्र अधिक करो और अधिक बढ़ो का उल्लेख करते हुए वेंकटेश ने कहा: ''वह छोटे मोटे काम से कभी संतुष्ट नहीं होते हैं, और वह हमारे मुंह पर कहने में संकोच भी नहीं करते । यही उत्साह और प्रेरणा उन्होंने सभी रोटेरियन को दी है। आज आपने इस परियोजना करके उनका सर ऊंचा कर दिया है और यह साबित कर दिया है कि यदि आपके पास कोई बेहतर वजह है, तो पैसा ज़रूर आएगा, जैसा कि यहां हुआ – कुल मिलाकर ₹20 करोड़। और आपने आधुनिक तकनीक से ये अस्पताल बना कर अद्भुत उपलब्धि प्राप्त की है, वो भी सिर्फ 45 दिनों में।''

बैठक को संबोधित करते हुए, टीआरएफ ट्रस्टी गुलाम वाहनवती ने कहा कि जिन लोगों ने इस परियोजना के लिए दान दिया है, उन्होंने उन्होंने अपनी विशाल हृदयता का परिचय दिया है, लेकिन मुझे एक और भी तसल्ली हुई है यहां, वो ये कि रोटरी फाउंडेशन ने भी अस्पताल में उपकरण और मशीनों के लिए दो जीजी, प्रत्येक में लगभग ₹75 लाख की राशि मंजूर कर इस परियोजना का भरपूर सहयोग किया है। जिस उत्साह और आसानी से आपने इस अनूठी परियोजना को साकार किया है, उस के लिए मैं आप सभी रोटेरियनों को बधाई देता हूँ।

मेहता के अंतिम शब्द, जब उन्होंने कहा: ''अगर कोविड की तीसरी लहर आती है... मुझे उम्मीद है कि नहीं आएगी, लेकिन अगर ऐसा होता है, तो इस अस्पताल को बनाकर आप कितने लोगों की जान बचाएंगे, समाज की कितनी बड़ी सेवा होगी और कितना बड़ा योगदान होगा आपका। अपने क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान करने के लिए रो इ निदेशक वेंकी और डॉ सागा को धन्यवाद... मैं आप दोनों को सलाम करता हूं।''

वो अक्सर कहते हैं कि ''सेवा का सबसे बड़ा पुरस्कार है सेवा के और अधिक अवसर। और सेवा की इस यात्रा का कोई लक्ष्य नहीं है, सिर्फ मील के पत्थर हैं जिन्हें पार करते जाना हैं। इसके बाद आपका अगला प्रोजेक्ट छोटा हो ही नहीं हो सकता, उसका आकार और बड़ा होना चाहिए।'' यदि ऐसा हुआ, तो मेहता ने अपने अध्यक्ष काल के दौरान, उस परियोजना का उद्घाटन करने के लिए एक बार फिर आने का वादा किया।

चार रिकॉर्ड

पीडीजी ई के सागादेवन ने कहा कि जैसे-जैसे परियोजना का निर्माण हो रहा था, ट्रस्टियों को पता था कि वे प्री-कास्ट, इनोवेटिव तकनीक के साथ 45 दिनों की अल्प अवधि में 69,200 वर्ग फुट के अस्पताल का निर्माण कर एक तरह का रिकॉर्ड बनाने जा रहे हैं। ''इसलिए हमने चार रिकॉर्ड के लिए आवेदन किया; जब निर्माण चल रहा था तब उनके प्रतिनिधि आए थे और साइट का निरीक्षण किया था और 45 दिनों के रिकॉर्ड समय में प्री-कास्ट तकनीक के माध्यम से बनाया गया सबसे बड़ा अस्पताल होने के कारण हमने चार रिकॉर्ड दर्ज करने में कामयाबी हासिल की है।''

इस परियोजना को एलीट वर्ल्ड रिकॉर्ड, एशियन रिकॉर्ड्स एकेडमी, इंडियन रिकॉर्ड्स एकेडमी और तमिलन बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा प्रमाणित किया गया है।

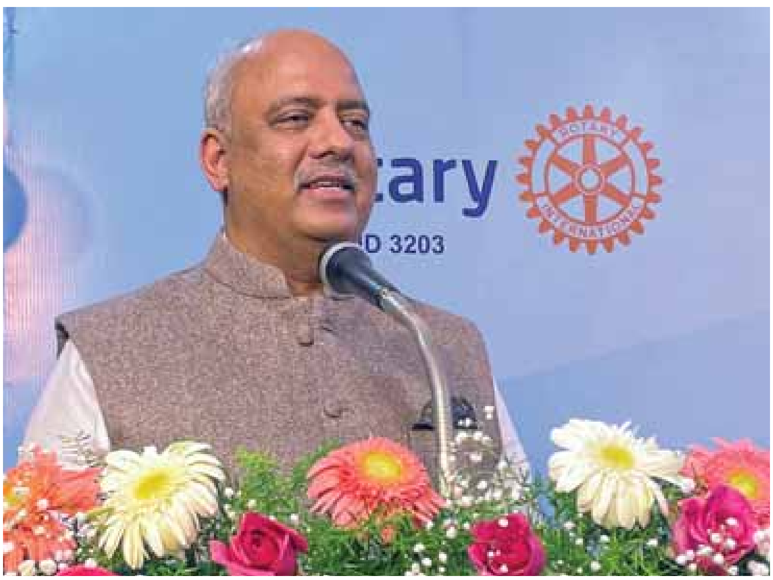

चित्र : रशिदा भगत

रो ई अध्यक्ष की इरोड यात्रा

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता कोयंबटूर हवाई अड्डे पर डीजी राजशेखर श्रीनिवसन, पीडीजी गण ए कार्तिकेयन, ए वी पथी, के ए कुरियाचन और रोटेरियन एस सेनगुट्टुवन के साथ। पीडीजी किशोर कुमार भी चित्र में शामिल हैं।

नीचे: *(बाएं से) RID ए एस वेंकटेश, रो ई अध्यक्ष मेहता और RID महेश कोटबागी पारंपरिक भोजन का आनंद लेते हुए।*

ऊपर:RID महेश कोटबागी (दाएं से तीसरे) और डीजी के षणमुगासुंदरम (RID 3203) की उपस्थिति में इरोड में अध्यक्ष मेहता Each One Bring One कार्यक्रम के प्रत्येक योगदानकर्ता को सम्मानित करते हुए।

बाएं: RID वेंकटेश, अध्यक्ष मेहता और RID कोटबागी इरोड में नवनिर्मित अस्पताल में। (ऊपर) RID वेंकटेश के साथ रो ई अध्यक्ष मेहता।

चित्र : रशिदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

Rotary PEOPLE OF ACTION

उम्मीद के 10 साल

जयश्री

गंगा अस्पताल, कोयंबटूर, के साथ साझेदारी में कार्यान्वित की जा रही रोटरी क्लब कोयंबटूर मेट्रोपोलिस, रोई मंडल 3201, की एक अनूठी प्रमुख परियोजना *होप आफ्टर फायर* (HAF) के माध्यम से 2012 से अब तक 600 से अधिक झुलस चुके लोगों को अत्यधिक लाभ हुआ है।

इस परियोजना का नेतृत्व क्लब के सदस्य डॉक्टर एस राजा सबापति ने किया जो अस्पताल के निदेशक और इसकी पुनर्निर्माण सर्जरी विंग के प्रमुख है। वह बताते है कि पुनर्निर्माण सर्जरी की एक श्रृंखला के बाद पीड़ित बेहतर स्थिति में घर लौटने में सक्षम होते है और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वे उत्पादक कार्य करने के लिए अपने अंगों का उपयोग करने में सक्षम होते है।

इस परियोजना के तहत 21 जुलाई को डॉ सबापति द्वारा निक्की देवी पर 1000वीं सर्जरी की गई थी। निक्की और उनके पति दोनों यूपी के रहने वाले है और अपने दो बच्चों के साथ वे इरोड में प्रवासी श्रमिक के रूप में बसे है। पांच साल पहले खाना बनाते समय एक भीषण आग लगने से निक्की का चेहरा खराब हो गया था। उसके बाएं हाथ की उंगलियां आपस में चिपक गई थी जिससे उसका हाथ पूरी तरह बेकार हो गया था। ''हमने एक बहुत बड़ी सर्जरी का पहला चरण पूरा किया है और छह महीने में कुछ और प्रक्रियाओं के बाद, वह ठीक हो जाएगी'', डॉक्टर सबापति मुस्कुराती है।

रोटरी क्लब कोयंबटूर मेट्रोपोलिस के अध्यक्ष पालनीअप्पन कहते है कि ये सर्जरियाँ जरूरतमंद मरीजों के लिए मुफ्त की जाती है। क्लब अस्पताल के खर्चों और उपभोग्य सामग्रियों का ख्याल रखता है, जबकि अस्पताल सर्जनों की फीस और अन्य पेशेवर शुल्क माफ करके अपना योगदान देता है। अगस्त 2021 तक इस परियोजना की कुल लागत ₹6.29 करोड़ (845,276 डॉलर) आई। क्लब के आगामी नेतृत्वकर्ताओं ने नियमित रूप से धनसंचयन (लगभग ₹3.99 करोड़) करके इस परियोजना का पूरा समर्थन किया है और अस्पताल ने 2012 से ₹2.3 करोड़ की सेवाओं का योगदान दिया है। अगस्त 2021 तक, 606 पीड़ितों पर 1,010 पुनर्निर्माण सर्जरियाँ की गई है।

''हम न केवल इसे जारी रखने के इच्छुक है बल्कि ऐसे और भी बहुत से लोगों को कवर करने के लिए इसकी पहुंच का विस्तार भी करना चाहते है। पैसा कोई बाधा नहीं है। हम HAF के बारे में जागरूकता फैलाना चाहते है ताकि इस पहल से अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हो सकें'', पालनीअप्पन कहते है।

आग दुर्घटना से जीवित बचे अधिकांश लोगों की यही इच्छा होती है कि जिंदा रहकर सामाजिक अस्वीकृति का सामना करने से तो अच्छा वे मर गए

हम HAF के बारे में जागरूकता फैलाना चाहते है ताकि इस पहल से अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हो सकें।

पलनियप्पन

अध्यक्ष, रोटरी क्लब कोयम्बटूर मेट्रोपोलिस

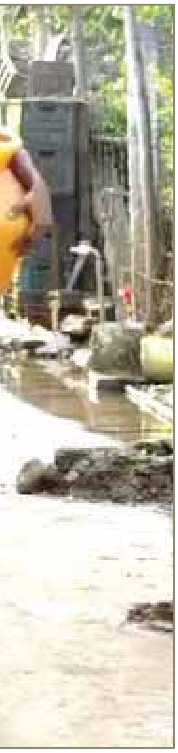

दक्षिणावर्तः डॉ एस राजा सभापति, निदेशक, गंगा अस्पताल, कोयंबटूर; HAF की लाभार्थीयं निक्की देवी, तिलकवती, और श्रीजा।

होते। जलने से विकृत होने के कारण, वे अवसाद से जूझते है और वृद्ध लोगों को आजीविका कमाने की अतिरिक्त चुनौती का सामना करना पड़ता है, सर्जन कहते है। सही उपचार से ऐसी विकृति को ठीक किया जा सकता है। लेकिन इसे केवल एक ही बार में ठीक नहीं किया जा सकता और इसमें अत्यधिक धैर्य और संकल्प की आवश्यकता होती है, वह आगे कहते है।

HAF ने PRIP राजेंद्र साबू और PRIP के आर रवींद्रन एवं PRID सी भास्कर जैसे वरिष्ठ रोटरी नेतृत्वकर्ताओं से जीवित बचे लोगों में कार्यात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रशंसा अर्जित की है। डॉक्टर सबापथी का कहना है कि इनमें से अधिकतर सामान्य जीवन जी रहे है और यहाँ तक कि परिवार की आर्थिक मदद भी कर रहे है।

''हमारे द्वारा उपचारित प्रत्येक रोगी के पास बताने के लिए एक कहानी है। लेकिन जब हम इसके प्रत्यक्ष परिणाम और इलाज से रोगियों और उनके आसपास के लोगों के चेहरों पर आई अपार खुशी को देखते है, तब हमें रोटरी की शक्ति और जादू का एहसास होता है'', वह आगे कहते है। HAF को *ब्रिटिश मेडिकल जर्नल्स* साउथ एशिया अवॉर्ड के लिए चुना गया है और उन्हें इसे जीतने की पूरी आशा है। ■

रोटरी क्लब दिल्ली साउथ ने शुरू की बेटी शिक्षा

रशीदा भगत

रोटरी वर्ष 2020-21 में, हमारे क्लब के सदस्यों ने लड़कियों को सशक्त बनाने के लिए अनायास ही एक परियोजना शुरू करने का फैसला किया क्योंकि यह बात सभी जानते है कि आजादी के 73 साल बाद भी कई भारतीयों के घरों में एक लड़की के जन्म की खुशी नहीं मनाई जाती है। चाहे बात उसकी शिक्षा की हो या स्वास्थ्य की, अक्सर उसे जन्म से ही उपेक्षित कर दिया जाता है और उसे हर समय भेदभाव, अपमान और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है'', रोटरी क्लब दिल्ली साउथ (2020-21) की सचिव कृति माखीजा कहती है।

प्राथमिक शिक्षा जैसे मामलों में भी निम्न मध्यम आय वर्गीय लड़कियों के सामने आने वाली बाधाओं को ध्यान में रखते हुए और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के *बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ* अभियान का पालन करते हुए, एवं महिलाओं की शिक्षा एवं स्वतंत्रता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को साकार करने के लिए, हमने बेटी को शिक्षा और सम्मान नामक एक परियोजना शुरू की। परियोजना का उद्देश्य वंचित परिवारों की 200 लड़कियों को छात्रवृत्ति देना था, वह कहती है।

इस योजना में वंचित परिवारों की 200 लड़कियों के लिए प्रति बच्चे पर लगभग ₹1,000 की मासिक फीस का भुगतान करना शामिल है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे स्कूल में रहें और अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर सकें।

यह परियोजना अनिल के. अग्रवाल की दिमाग की उपज है जो तब क्लब के अध्यक्ष-निर्वाचित थे। रोटरी क्लब दिल्ली साउथ में 64 सदस्य है और इसे स्थापित हुए 53 वर्ष हो चुके है, जिसके कारण यह दिल्ली का दूसरा सबसे पुराना रोटरी क्लब भी है। ''मुझे आपको यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि हमारे क्लब में लगभग 40 प्रतिशत नेतृत्व पदों पर महिलाएं आसीन है'', कृति मुस्कराती है।

जब क्लब के सदस्यों के साथ इस परियोजना के विवरण पर चर्चा की गई तो उन्होंने इस परियोजना को उत्साहपूर्वक स्वीकार किया और ''परियोजना के पहले वर्ष में हमें अपने सदस्यों और दानकर्ताओं से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली जो ज्यादातर उनके दोस्त या परिवार के सदस्य है।''

₹32.76 लाख की भारी भरकम राशि जमा हो गई; ''जो 273 बच्चों को छात्रवृत्ति प्रदान करने के लिए पर्याप्त है और यह 200 के हमारे लक्ष्य से काफी ऊपर था'', कृति मुस्कुराती है। वह कहती है कि क्लब के सदस्यों ने अपने दोस्तों, परिवार और परिचितों के समूह से आवश्यक धन प्राप्त करने हेतु अथक प्रयास किए। अग्रवाल आगे कहते है, ''जरूरतमंद परिवारों की लड़कियों को सशक्त बनाने हेतु इस सामुदायिक कल्याण परियोजना के लिए मिलकर काम करने वाले सदस्यों के बीच की एकजुटता अनुकरणीय थी।''

सही छात्राओं की पहचान करने के लिए, जो बहुत गरीब नहीं थी मगर निम्न मध्यमवर्गीय परिवारों से आती थी, साथ ही यह सुनिश्चित करने के लिए कि उम्मीदवार बुद्धिमान हो और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हो, क्लब ने एक योजना तैयार की। ''हमने जिन लड़कियों को चुना है वे वास्तव में झुग्गी-झोपड़ियों से नहीं आती, वे गरीबी रेखा से ऊपर है और पहले से ही स्कूल जाती है, लेकिन उन्हें बाहर निकाले जाने का खतरा है क्योंकि उनका परिवार आर्थिक दबाव में था और अपनी फीस का भुगतान करने के लिए संघर्ष कर रहा था। वे वास्तव में अपनी बेटियों को स्कूल भेजने में रुचि रखते थे और लड़कियों एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बीच पैसा ही एकमात्र कसौटी थी'', वह आगे कहती है।

इस योजना के दिशानिर्देश स्पष्ट थे; लाभार्थियों के पास योग्यता और कक्षा 6वीं से 8वीं तक एक अच्छा अकादमिक प्रदर्शन रिकॉर्ड होना चाहिए, और अपने परिणामों में लगातार कम से कम 65 प्रतिशत अंक प्राप्त करना चाहिए। ''या फिर उनके पास कला, खेल, संगीत आदि क्षेत्रों में असाधारण प्रतिभा होनी चाहिए। और बच्चे की पारिवारिक आय ₹20,000 प्रति माह से अधिक नहीं होनी चाहिए'', क्लब अध्यक्ष अग्रवाल कहते है।

छात्रवृत्ति के लिए चुनी गई लड़कियां NMDC (नई दिल्ली म्यूनिसपल कमिटी) के स्कूलों से थी और रोटेरियन आसपास के इलाके के NMDC स्कूलों की 200 मेधावी छात्राओं की पहचान करने के लिए NMDC पहुंचे।

लगभग 23 NMDC स्कूलों से 200 लड़कियों की पहचान करने के बाद, क्लब ने जनवरी 2021

से 1,000 मासिक शुल्क का भुगतान करना शुरू कर दिया।

सराहनीय बात यह है कि यह एक लंबे समय तक चलने वाली टिकाऊ परियोजना है। कृति कहती है, ''हमने तय किया है कि हमारे द्वारा किसी लड़की को छात्रवृत्ति के लिए चुन जाने के बाद हम हाई स्कूल तक उस पर ध्यान देंगे। कोविड प्रतिबंध हटने के बाद यह सुनिश्चित करने के लिए कि लड़कियां अपनी कक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन करें, रोटेरियनों का एक समूह जो इस परियोजना की मुख्य समिति भी बनाता है, नियमित अंतराल पर लाभार्थियों से मुलाकात करेगा और उनकी प्रगति पर नज़र रखेगा। हमें हमारे द्वारा समर्थित प्रत्येक छात्रा का त्रैमासिक रिपोर्ट कार्ड प्राप्त होगा, ताकि हम उनकी प्रगति पर नज़र रख सकें और जहाँ जैसी आवश्यकता हो उतने हस्तक्षेप के साथ उनका समर्थन कर सकें। हम उनकी जरूरतों और प्रगति को जानने के लिए उनके शिक्षकों के संपर्क में भी रहेंगे।''

अग्रवाल और कृति दोनों ही अपनी परियोजना को लेकर जुनूनी है और चाहते है कि यह एक स्थायी परियोजना हो, जिसका उद्देश्य लड़कियों को अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करते देखना हो। तो क्या कॉलेज के लिए भी मेधावी छात्राओं की मदद की जाएगी, मैंने कृति से पूछा।

''हमने अभी तक इस बारे में नहीं सोचा है। दूसरे चरण में हम उन छात्राओं तक पहुँचना चाहते है जो हाई स्कूल तक गई है और जिन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए कुछ परामर्श की आवश्यकता है ताकि वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो सकें। मगर हाँ निकट भविष्य में हम एक ऐसी परियोजना शुरू कर सकते है जहाँ हम कॉलेज जाने या व्यावसायिक

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में रुचि रखने वाली कुछ प्रतिभाशाली लड़कियों का समर्थन कर सकें,'' वह जवाब देती है।

संयोगवश, अग्रवाल और कृति दोनों ने वास्तव में *बेटी शिक्षा* परियोजना के लिए कड़ी मेहनत की है, और कुल एकत्रित धन का लगभग 80 प्रतिशत जुटाया है। अग्रवाल कहते है, हमें यह जानकर खुशी हो रही है कि हमारे सहयोग से ऑनलाइन कक्षाओं के लिए वाईफाई, किताबें, पाठ्यक्रम सामग्री, स्टेशनरी आदि जैसी उनकी जरूरतें पूरी हो रही है।

चूंकि एक बालिका की शिक्षा स्कूली शिक्षा से बढ़कर उसे स्वतंत्र एवं सशक्त बनाने की दिशा में कार्य करती है, इसलिए क्लब के सदस्यों ने ''श्रम बाजार में प्रतिस्पर्धा करने के लिए ज्ञान और कौशल प्रदान करने; बदलती दुनिया के हिसाब से चलने और उसके अनुकूल होने के लिए आवश्यक सामाजिक-भावनात्मक एवं जीवन कौशल सीखने; अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने; और अपने समुदायों और दुनिया के लिए योगदान देने के महत्व को भी महसूस किया।''

इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए, रोटरी वर्ष 2021-22 में क्लब की योजना 10वीं-12वीं कक्षा की छात्राओं को उनके भविष्य - आगे की शिक्षा या कार्यक्षेत्र का चयन - को लेकर योजना बनाने में उनका मार्गदर्शन करके एक बार पुनः समर्थन प्रदान करना है। उन्होंने कहा, ''हम छात्राओं के लिए उनकी मुख्य ताकत और रुचि के क्षेत्रों की पहचान करने में सक्षम बनाने के लिए साइकोमेट्रिक परीक्षण कराने के लिए संस्थानों के साथ गठजोड़ करने की संभावना का भी मूल्यांकन कर रहे है।''

इस परियोजना समिति के उत्साहित सदस्यों ने 2021-22 में 500 या उससे अधिक छात्राओं को शामिल करके इसका विस्तार करने की योजना बनाई है। ''यह युवा लड़कियों को उचित शिक्षा प्राप्त करने और जारी सरकारी योजनाओं/लाभों को जानने, समझने और उनका लाभ उठाने के लिए सशक्त बनाएगा ताकि जागरूकता की कमी के चलते उन्हें किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े।''

इस परियोजना से और भी बहुत सारी उम्मीदें जुड़ी है - देर से शादी होना जिससे कम उम्र में मातृत्व की रोकथाम हो सकें, बेहतर पोषण और स्वास्थ्य देखभाल, कम बच्चे, और महिलाओं का समग्र सशक्तिकरण। ■

गॉर्डन मेकिनली
रो ई अध्यक्ष 2023-24 चुने गए है

गॉर्डन आर मेकिनली, रोटरी क्लब साउथ क्वीन्सफेरी, लोथियन, स्कॉटलैंड, को 2023-24 के लिए रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष के लिए नामांकन समिति द्वारा चुना गया है। यदि कोई चुनौतीपूर्ण उम्मीदवार का सुझाव नहीं मिलता है तो 1 अक्टूबर को उन्हें अध्यक्ष-मनोनीत घोषित कर दिया जाएगा।

मेकिनली ने कोविड-19 महामारी के दौरान तकनीकी रूप से अनुकूल होने की रोटरी की क्षमता की प्रशंसा करते हुए कहा कि दृष्टिकोण का ज़ारी रहना और उसे हमारे पिछले सर्वोत्तम अभ्यासों के साथ मिश्रित होते रहना चाहिए क्योंकि रोटरी हमेशा बढ़ते रहने और लोगों को शामिल करने का प्रयास करती है।

हमनें जाना है कि समुदायों के अंदर एक दूसरे की देखभाल करने की इच्छा है, वह कहते है, और हमें इस बात को सुनिश्चित करना चाहिए कि हम उन लोगों को प्रोत्साहित करें जिन्होंने हाल ही में स्वयंसेवा की अवधारणा को अपनाया है ताकि वे सेवा देना जारी रख सकें।

मेकिनली कहते है कि वरिष्ठ नेतृत्वकर्ताओं की क्लब के सदस्यों के साथ सीधे ऑनलाइन संवाद करने की क्षमता रोटरी द्वारा किए गए परिवर्तनों की एक सकारात्मक विरासत होगी। परंतु, वह आगे कहते है, वैयक्तिक बैठकें की महत्ता बरकरार है, क्योंकि वे अधिक से अधिक पारस्परिक विचार-विमर्श को प्रोत्साहित करती है।

मेकिनली के अनुसार, सदस्यता में वृद्धि का सबसे अच्छा तरीका व्यस्तता है। वह कहते है, क्लबों को बेहतर समर्थन देने के लिए, रोटरी इंटरनेशनल, क्षेत्रीय नेतृत्वकर्ताओं और मंडल टीमों को उनके साथ जुड़ने की आवश्यकता है। सोशल मीडिया के माध्यम से जुड़ाव रोटरी के ब्रांड को मजबूत करेगा और इसके साथ आने वाले अवसरों को प्रदर्शित करेगा। और सरकारों, निगमों एवं अन्य संगठनों के साथ जुड़ाव सार्थक भागीदारी स्थापित करने में मददगार होगी। बेहतर जुड़ाव के माध्यम से, हम सदस्यता के साथ-साथ सार्थक सेवा प्रदान करने की हमारी क्षमता में भी विकास करेंगे।

वह आगे कहते है, सदस्यता हमारे संगठन की जीवन शक्ति है। मैं नई शैली के क्लबों को स्थापित करने के लिए अब मौजूद लचीलेपन के उपयोग को प्रोत्साहित करूंगा जो एक अलग प्रकार की जनसांख्यिकी को शामिल करने की अपील करेगी।

मेकिनली डंडी विश्वविद्यालय से दंत सर्जरी के स्नातक है और एडिनबर्ग में अपने स्वयं के दंत चिकित्सालय का संचालन करते थे। वह ब्रिटिश पेडोडोंटिक सोसाइटी के अध्यक्ष थे और वह विभिन्न शैक्षणिक पदों पर आसीन रहे है। उन्होंने एक प्रेस्बिटरी एल्डर, क्वींसफेरी पैरिश कांग्रेगेशनल बोर्ड के अध्यक्ष और चर्च की आम सभा के आयुक्त के रूप में भी काम किया है।

1984 से एक रोटरी सदस्य रहते हुए, मेकिनली ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड में रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष रहे है। उन्होंने रो ई निदेशक और कई समितियों के सदस्य या अध्यक्ष के रूप में भी काम किया है। वह वर्तमान में 2022 ह्यूस्टन कन्वेंशन कमेटी के सलाहकार और संचालन समीक्षा समिति के उपाध्यक्ष है।

मैकिलनी और उनकी पत्नी हीथर रोटरी संस्थान के प्रमुख दानकर्ता एवं परोपकारी है। वे बिक्रेस्ट सोसाइटी के सदस्य भी है। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

मुंबई में कोविड सेंटर के लिए चिकित्सा उपकरण

टीम रोटरी न्यूज़

मुंबई के वाशी में उनके कोविड केयर सेंटर में मरीजों के इलाज के लिए नवी मुंबई महानगरपालिका को रो ई मंडल 3142 के अंतर्गत, नेरुल के न्यू बॉम्बे सीसाइड रोटरी क्लब द्वारा ₹20 लाख मूल्य के चिकित्सा उपकरण दान किए गए। यह परियोजना 'जीएन हियरिंग इंडिया' के समर्थन से की गई थी, जिसने अपने सीएसआर वित्तपोषण के तहत इस कल्याणकारी हित के लिए दान किया था। यह क्रिटिकल केयर उपकरण जीएन हियरिंग इंडिया के डीजी मयूरेश वार्के और एमडी सुनील विंजानेकर ने निगम आयुक्त अभिजीत बांगड़ को सौंपे। डीजी ने कहा, ''यह सीएसआर गतिविधि समुदाय के लिए कुछ अच्छा करने के लिए संगठनों के एक साथ आने का एक अच्छा उदाहरण है।'' ■

रोटरी अध्यक्ष मेहता ने की घोषणा: सदस्य जोड़ने पर मान्यता

वी मुत्तुकुमारन

अपने अध्यक्षीय वर्ष में जोन - 4, 5, 6 और 7 में (भारतीय उपमहाद्वीप) रोटेरियन के लिए तीन सूत्री कार्यक्रम निर्धारित करते हुए, रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने घोषणा की, नए सदस्य लाने वालों को ईओबीओ पिन (हर एक लाये एक) और 'धन्यवाद' प्रमाण पत्र दिया जाएगा। 'धन्यवाद' प्रमाण पत्र मेहता और रो ई महासचिव द्वारा हस्ताक्षरित किए जाएंगे और 25 नए सदस्यों को लाने वालों की फोटो रो ई मुख्यालय, इवान्स्टन के वर्चुअल हॉल ऑफ फ़ेम में प्रदर्शित की जाएंगी।

डीजी, जोनल और मंडल के सदस्यता समन्वयकों, क्षेत्रीय नेताओं और क्लब अध्यक्षों के साथ ज़ूम पर एक अनौपचारिक बातचीत में, मेहता ने उनसे प्राथमिकता वाले दो और क्षेत्रों पर अपना ध्यान केंद्रित करने का आह्वान किया - लड़कियों को सशक्त बनाना और रोटरी डेज़ ऑफ़ सर्विस, जिस के अंतर्गत रोटरी की सार्वजनिक छ वि में वृद्धि करने के लिए हर तीन माह में अपने मंडल की हस्ताक्षर परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए क्लब के सभी सदस्य एकत्रित हो कर एक विशाल कार्यक्रम का आयोजन करें, जिसमें गैर-रोटेरियन बड़ी तादाद में हिस्सा लें।

अपने दौरे में RID 3011 (दिल्ली), 3141(मुंबई), और 3131 (पुणे) के पदस्थापन कार्यक्रमों के दौरान, उन्होंने नए मंडल अध्यक्षों को इस वर्ष अपने सदस्यता लक्ष्य में 2,000 से अधिक की शुद्ध वृद्धि (प्रत्येक मंडल के लिए) करने के लिए राजी किया था। ''पिछले 10-12 वर्षों में जहां हमने 40,000 नए सदस्य जोड़े, वहीं पिछले साल (2020-21) अपने सिर्फ चार जोन में 10,000 से अधिक रोटेरियन शामिल किये हैं। और वर्तमान वर्ष के पहले 25 दिनों में ये जोन 10,000 से अधिक नए सदस्य जोड़ चुके हैं। यदि प्रत्येक क्लब सिर्फ ईओबीओ को अपनाता है, हम और अधिक करने के लिए वास्तव में पहाड़ तोड़ने जैसा ये दुष्कर कार्य कर सकते हैं'', उन्होंने कहा।

यूपी के मुख्यमंत्री के साथ अपनी बैठक, हरियाणा सरकार के साथ समझौता ज्ञापन, पंजाब में 1,000 स्कूलों के लिए ई-लर्निंग सामग्री; और अगले पांच वर्षों में चेक डैम और जल निकायों में भारत सरकार की 10 प्रतिशत परियोजनाएं करने के संकल्प पर चर्चा करते हुए, उन्होंने कहा कि वह रोटरी इंडिया की महत्वाकांक्षा 2025 तक साक्षर भारत परियोजना से अवगत कराने के लिए प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को लिखेंगे।

मेहता ने मंडल अध्यक्षों से रोटरी के सात फोकस क्षेत्रों में परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए प्रायोजक ढूंढने और संसाधनयुक्त व्यक्तियों को खोजने के लिए RILM और RIHF की सहायता लेने का आग्रह किया।

रोटरी का व्यवसाय है मानवता की सेवा, ''सदस्यता हमारी सबसे बड़ी संपत्ति है और इसे सर्वोच्च प्राथमिकता मिलती है क्योंकि यही वो कच्चा माल है जिसकी मदद से हम अपने तैयार उत्पाद, यानी सेवा के साथ बाहर आते हैं'', रो ई में सदस्यता अध्यक्ष PRID कमल सांघवी ने कहा। रोटरी विश्व के गलियारों में एक नया मंत्र गूँज रहा है ईओबीओ और ''हमारे जोन इस चुनौती के लिए

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता (दाएं) RID ए एस वेंकटेश के साथ।

तैयार हैं क्योंकि सिर्फ एक महीने (23 जनवरी- 23 फरवरी, 2021) में हमने पॉल हैरिस मेम्बरशिप चैलेंज के तहत 6,000 से अधिक नए सदस्य बना चुके हैं।''

नेक्स्टजेन क्लब

क्लब के गठन में लचीला दृष्टिकोण रखने का आह्वान करते हुए, उन्होंने कहा, ''प्रत्येक मंडल में कम से कम 10-15 ई-क्लब होने चाहिए क्योंकि नई नीति DEI (विविधता, इक्विटी, समावेश) के तहत हम अपनी सदस्यता में विविधता लाने के प्रयास कर रहे हैं। अपने क्लबों में हमें और अधिक महिलाओं को लाने की आवश्यकता है क्योंकि विश्व की 48 प्रतिशत आबादी के मुकाबले हमारी वैश्विक सदस्यता में महिलाओं की संख्या सिर्फ 24 प्रतिशत हैं। भारत में महिलाओं की सदस्यता और भी कम है, सिर्फ 14-16 फीसदी से।'' उन्होंने विविधीकरण के अंतर्गत अपार्टमेंट समूह और आवासीय कॉलोनियों में रोटरी क्लब बनाने का विचार रखा।

संघवी ने सभी डीजीयों से रोटरी क्लबों में शामिल होने के लिए ''रोटरेक्टर्स में उत्साह'' का संचार कर ''प्रत्येक को कम से कम एक रोटेरियन और एक रोटरेक्टर लाने के लिए प्रोत्साहित करने का आग्रह किया। अपने ब्रांड संदेश और लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए उच्चकोटि -प्रभाव वाली परियोजनाओं के माध्यम से विशाल जन समूह के समक्ष निरंतर बने रहने की आवश्यकता है।'' सदस्यों को बनाए रखने के लिए, क्लब अध्यक्षों द्वारा सदस्यों को सेवा परियोजनाओं में शामिल होने का अवसर अवश्य देना चाहिए।

नए सदस्यों को लाने वाले रोटेरियन, क्लब, डीजी और मंडल के सदस्यता अध्यक्षों को नव प्रायोजित सदस्यों की संख्या के आधार पर (स्तर -1, 2, 3 आदि) मान्यता पिन के साथ मेहता द्वारा हस्ताक्षरित प्रशंसा पत्र दिए जाएंगे। इसी तरह, अगर डीजी और डीएमसी 10 नए क्लब बनाते हैं पिन के साथ स्टार प्रमाणन दिया जाएगा और उसके बाद गुणकों में । 100 प्रतिशत प्रतिधारण हासिल करने वाले मंडलों और क्लबों को रो ई अध्यक्ष हस्ताक्षरित प्रमाण पत्र के साथ विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया पिन मिलेगा।

''ईओबीओ रोटरी का नया धर्म बन गया है; महत्वपूर्ण परिवर्तन करने वाली अवधारणा का सूत्रपात करने के लिए मेहता का धन्यवाद'', उन्होंने कहा। ''रोटेरियन अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को अन्य शहरों और कस्बों में भी सदस्यता के लिए प्रेरित कर सकते हैं और विधिवत पुरस्कार प्राप्त कर सकते हैं

RID महेश कोटबागी (बाएं) PRID कमल संघवी के साथ।

वेबसाइटों के साथ डेटा सिंक करें

रो ई निदेशक महेश कोटबागी ने कहा कि क्लबों को रो ई की मान्यता प्राप्त करने के लिए, उन्हें अपने सभी अपलोड किए गए डेटा (सदस्यता, परियोजनाएं और कार्यक्रम) को *rotary.org* के साथ *rotaryindia.org* अधिकृत ऐप रोस्टर ऑन व्हील्स का उपयोग कर सिंक करना होगा। क्लबों को अपने प्रोजेक्ट और कार्य को *rotaryindia.org* पर सक्रिय रूप से अपलोड करना चाहिए और कहा कि 19 अगस्त से प्रत्येक बुधवार को इस पोर्टल और रोटरी ऐप का प्रभावी रूप से उपयोग करने के लिए डीजी, मंडल नेताओं और क्लब अध्यक्षों के लिए एक मास्टर क्लास कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

प्राथमिकता का एक अन्य क्षेत्र है रोटरी डेज़ ऑफ़ सर्विस जिसमें हर तिमाही के दौरान, कुछ क्लब मिल कर जनता के हितार्थ, मंडल की किसी विशाल परियोजना को प्रदर्शित करने के लिए जुड़ सकते हैं, इससे रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा मिलेगा, इस प्रक्रिया से नए सदस्यों को आकर्षित किया जाएगा। प्रत्येक मंडल या क्लबों का समूह हर तिमाही ऐसे 3-4 आयोजन कर सकता है ताकि आम जनता रोटरी द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना कर सके।

लड़कियों को सशक्त बनाना

रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश ने अपनी प्रस्तुति में कहा कि पिछले कुछ वर्षों में भारत में करीब **132 मिलियन लड़कियों** ने स्कूल छोड़ दिया, और एक अत्यंत गंभीर स्थिति थी। लड़कियों को सशक्त करने के लिए रोटरी के सभी फोकस क्षेत्रों का लाभ उठाया जा सकता है। इनमें आशा किरण कार्यक्रम के माध्यम से उन्हें वापस स्कूल भेजना, शैक्षणिक सामग्री का वितरण, लिंग-पृथक शौचालयों का निर्माण, साइकिल उपहार में देना और ग्रामीण घरों में सोलर लैंप लगाना शामिल हैं। ''किसी भी परियोजना में लड़कियों / महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए ये तीन तत्व - उपलब्धता, पहुंच और वहनीयता *(The three A's - Availability, Accessibility and ASffordability)* - महत्वपूर्ण हैं, उन्होंने कहा, साथ ही, आय का एक नियमित स्रोत प्रदान करने हेतु उनके लिए कौशल विकास कार्यक्रम शुरू किया जा सकता है, उन्होंने कहा।

वेंकटेश ने कहा कि रोटरेक्टर्स की मदद से टॉक शो, रैलियों, नुक्कड़ नाटक, कठपुतली शो और फ्लैश मॉब जैसे कई कार्यक्रम चलाये जा सकते हैं। इसी बीच मेहता ने सभी डीजीयों से कहा कि ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के उपायों पर अपने विचार और योजना को *rotaryindia.org* पर अपलोड कर साझा कर सकते हैं और सुझाव भी दे सकते हैं। वेबिनार में लगभग 1,200 क्लब अध्यक्षों, पीडीजी, गवर्नरों और रोटरी समन्वयकों ने भाग लिया।■

एक मैराथन पुरुष

राजेंद्र साबू

सदैव उत्साह और ऊर्जा से भरपूर, शारीरिक और भावात्मक स्तर पर, कभी ना थकने वाले, लंबी दौड़ के धावक थे, कार्लो रवीज़ा। वे कई हुनर जानते थे, जिनमें से कुछ उन्हें विरासत में मिले थे, उनका 96 वर्ष का जीवन काल अंतिम समय तक सक्रिय रहा। मैंने एक सहचर के रूप में हमेशा उनके सानिध्य का आनंद उठाया है साथ ही उनके रोटरी सफर का हमराही बन कर भी।

कार्लो का जन्म इटली के मिलान शहर के एक संपन्न परिवार में हुआ था। उनके पिता, वो भी कार्लो, स्विट्ज़रलैंड के सेंट गैलेन में पैदा हुए थे। प्रथम विश्व युद्ध के बाद सीनियर कार्लो मिलान आ गए थे। द्विभाषी परिवेश में बड़े होते हुए, घर पर विभिन्न भाषाओं में बोलने और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय स्कूलों में पढ़ने की वजह से कार्लो जल्द ही फ्रेंच, अंग्रेजी और पुर्तगाली में प्रवीण हो गए। कार्लो के पिता एक वास्तुकार थे और विरासत में मिले इस व्यवसाय के साथ-साथ ईमानदारी और अखंडता के मूल्य भी उन्हें अपने पिता से ही मिले थे। अपने व्यापार का विस्तार करने के दौरान कई बार तनाव की स्थिति उत्पन्न हुई जिसकी वजह से उन्हें अपने परिवार की उपेक्षा करनी पडी थी। तनाव कम करने के लिए एक दोस्त ने उन्हें रोटरी में शामिल होने की सलाह दी। इस तरह 1971 में वे रोटरी क्लब ऑफ़ मिलानो सुड-ओवेस्ट, इटली के सदस्य बन गए। जल्द ही वह 1972-74 में इसके अध्यक्ष बन गए और 1977-78 में मंडल अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया।

मैं 1976-77 में मंडल अध्यक्ष बना था और हमरी मुलाक़ात उस के आसपास ही हुई थी। मैं 1981-83 में रोटरी इंटरनेशनल डायरेक्टर था और वह 1984-86 में। इन वर्षों के दौरान हमारे बीच अक्सर बातचीत हुआ करती थी। व्यापार के सिलसिले में ज्यूरिख होते हुए मेरा दक्षिण जर्मनी जाना हुआ करता था। अक्सर मैं स्विटज़रलैंड के लुज़र्न में 2-3 दिन के लिए रूक जाता था। कार्लो का निवास और कार्यालय लुज़र्न के पास ही था और मैं दोपहर के भोजन पर उनसे मिलने चला जाता। अगर उषा मेरे साथ होती तो हमारे साथ रोसएना भी शामिल हो जाती थी। हमारे लिए शाकाहारी भोजन पकाने में उन्हें बड़ा मज़ा आता था। बेशक, हम रोटरी के दर्शन सहित, इसके बारे में ढेर सरी बातें किया करते थे। इस बात से हम दोनों ही सहमत थे कि रोटरी ने हमारे जीवन में एक शिक्षक की भूमिका निभाई है।

जब मुझे रो ई अध्यक्ष के रूप में नामांकित किया गया तो शीघ्र ही मुझे कन्वेंशन कमेटी का गठन करना था। कन्वेंशन मूल रूप से बार्सिलोना में आयोजित होना था, लेकिन इसके लिए शहर तैयार नहीं था और ये भी संभावना थी कि इसे बदल दिया जाएगा, विकल्प के रूप में हमारे पास अमेरिका के ऑरलैंडो, फ्लोरिडा थे। मैंने कार्लो को कन्वेंशन का उपाध्यक्ष नियुक्त किया। एक वास्तुकार और सिविल इंजीनियर के रूप में वह बार्सिलोना में व्यवहारिक जांच करे संभावना का आकलन करेंगे और यदि ऑरलैंडो निश्चित हुआ तो वह साइट पर रसद में सहायता करेंगे। मुझे उन पर और उनकी बहुआयामी प्रतिभा पर पूरा विश्वास था।

इसी बीच, कार्लो के रोटरी करियर में व्यवधान आ गया। उनके मंडल द्वारा रो ई अध्यक्ष (1993-94) के लिए उनका नाम प्रस्तावित किया गया था। लेकिन उनके बजाय, स्विट्ज़रलैंड के रॉबर्ट बार्थ मनोनीत हुए थे। 1991 में लंदन में RIBI और यूरोप के लिए, संयुक्त रूप से आयोजित रोटरी इंस्टिट्यूट में, जहां मैं रो ई अध्यक्ष के रूप में भाग ले रहा था। कार्लो ने कहा वो पूरी तरह से निराश थे। इंस्टिट्यूट में बोलते हुए, उनकी आंखों में आंसुओं के साथ साफ़ झलक रही उनकी हताशा को छिपाने का उन्होंने कोई प्रयास नहीं किया। बाद में, मैंने उन्हें तसल्ली दी और समझाया कि अगली बार जब नॉमिनेटिंग कमेटी यूरोप के सम्बन्ध में विचार करेंगी तो उनकी काबलियत और तज़ुर्बे की वजह से उन्हें मौका ज़रूर मिलेगा।

उन्हें 1998 में 1999-2000 के लिए रो ई अध्यक्ष के लिए मनोनीत किया गया था। वास्तव में, नई सहस्राब्दी का आगमन होने के कारण, यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण वर्ष बन गया। अपनी अंतर्राष्ट्रीय असेंबली में उन्होंने एक दूरदर्शी थीम की घोषणा की "रोटरी 2000: एक्ट विद कॅंसिस्टेंसी, क्रेडिबिलिटी, कॅंटीन्यूटी।"

कार्लो ने अपने सहयोगी के रूप में जोनाथन मजीयाबे को चुना, जो बाद में रो ई अध्यक्ष भी बने। कार्लो पूर्व में रो ई अध्यक्ष रॉबर्ट बार्थ द्वारा टीआरएफ ट्रस्टी के रूप में नियुक्त जॉन की उपलब्धियों से काफी प्रभावित थे। साथ ही कार्लो और जोनाथन अच्छे दोस्त भी थे। कार्लो ने बताया कि वह अफ्रीका से एक बुद्धिजीवी, प्रबुद्ध और सुविज्ञ रोटरी नेता चाहते थे। जोनाथन ने उस स्थान की कमी पूरी कर दी और उनके विश्वासपात्र और सलाहकार बन गए। रो ई अध्यक्ष रहते हुए कार्लो ने, रो ई अध्यक्ष का कार्यकाल भविष्य में तीन वर्ष करने का विचार रखा था।

PRIP राजेंद्र साबू के साथ PRIP कार्लो रवीज़ा और उनकी पत्नी रोसएना।

PRIP रवीज़ा, टीआरएफ अध्यक्ष के रूप में, रो ई अध्यक्ष ग्लेन एस्टेस (दाएं से चौथे) के साथ 2004 में, दिल्ली में RI प्रेसिडेंशियल पोलियो समिट में मुख्य अतिथि भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम के साथ। चित्र में (बाएं से): विनीता गुप्ता, PRIP साबू, रोसएना, PRID सुशील गुप्ता, PRID सुदर्शन अग्रवाल और PRIP कल्याण बेनर्जी भी शामिल है।

विचार असंगत था। बहरहाल, वह उनका दृष्टिकोण था।

कार्लो का कई बार भारत आना हुआ था। वे पोलियो उन्मूलन के प्रति अत्यंत संवेदनशील थे। भारत पोलियो वायरस संचरण की विश्व राजधानी था और प्रेसीडेंसी सर्किट में प्रवेश लेने से पूर्व कार्लो यहां आ चुके थे। कार्लो और रोसएना तत्कालीन रो ई निदेशक कल्याण बेनर्जी की अध्यक्षता में रोटरी इंस्टीट्यूट 1998 में भाग लेने आए थे। 9 दिसंबर, 1998 को रोटरी अवार्ड्स फॉर सर्विस के लिए 7वें रोटरी अवार्ड्स में भाग लेने के लिए वे कुछ दिन पहले आ गए थे। इंस्टिट्यूट के बाद कार्लो और रोसएना इटली के लिए रवाना हो गए।

कुछ ही दिनों के भीतर, रोसएना के साथ कार्लो, 1998 में 12 से 16 जनवरी तक दिल्ली में आयोजित उेङ में भाग लेने आये थे लेकिन इस बार रो ई अध्यक्ष- मनोनीत हो कर। उसके बाद, अनौपचारिक रूप से मित्रवत, कार्लो और रोसएना चंडीगढ़ आए। उन्होंने एक स्कूल में इंटरेक्ट क्लब की स्थापना में और करियर सेमिनार में भी मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। चंडीगढ़ से वो मेरे साथ दिल्ली के लिए निकले और PRID वाई पी दास के अंबाला स्थित आवास पर कुछ समय व्यतीत किया। इसके बाद हम दिल्ली रुके और प्रसिद्ध गणतंत्र दिवस परेड देखी।

रो ई के निर्वाचित अध्यक्ष के रूप में कार्लो जनवरी 1999 में पाकिस्तान पहुंचे और 29 जनवरी को उन्होंने वाघा बॉर्डर पार किया था, लाहौर से डीजी रियाज और डीजीएन अखनूर ने उन्हें विदाई दी थी। पाकिस्तान से भारत की कुछ मीटर की दूरी उन्होंने पैदल पार की और संयुक्त भूमि पर, दोनों देशों की सीमा पुलिस से सलामी ली। वाघा बॉर्डर (अटरी सीमा) पर डीजी अरुण कपूर के साथ और मंडल 3070 के अन्य नेताओं और उनकी पत्नियों के साथ, मैंने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया। अमृतसर में एक बड़ी बैठक सम्बोधित करने के बाद कार्लो और रोसएना, मेरे साथ, शताब्दी से नई दिल्ली आ गए। यहां स्टेशन पर डीजी संजीव खन्ना, सुशील गुप्ता, डीजीई रंजन ढींगरा और अन्य रोटरी नेताओं ने हमारा स्वागत किया था।

रो ई अध्यक्ष रहते हुए कार्लो 2 अप्रैल, 1999 को कोलकाता आए और उस समय कार्लो की टीम में मंडल अध्यक्ष रहे वर्तमान रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने उनका स्वागत अभिनन्दन किया। शेखर के संरक्षण में इस युगल ने परियोजनाओं का भ्रमण किया और एक रोटरी अस्पताल का उद्घाटन किया।

टीआरएफ के अध्यक्ष रहते हुए अगस्त 2004 में वे रो ई प्रेसिडेंशियल पोलियो समिट में भाग लेने दिल्ली पहुंचे और रो ई अध्यक्ष ग्लेन एस्टेस के साथ शामिल हुए। कार्यक्रम का आयोजन तत्कालीन रो ई निदेशक सुशील गुप्ता के नेतृत्व में किया गया था। भारत के राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम मुख्य अतिथि थे और पीआरआईपी बनर्जी भी वहां मौजूद थे। हमने भारत के राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह दोनों से मुलाकात की थी।

दिसंबर 2002 में कार्लो चेन्नई रोटरी इंस्टीट्यूट में भाग लेने आए थे। श्रोताओं को संबोधित करते हुए, ज्यादातर पूर्व मंडल अध्यक्षों से, उन्होंने कहा, रो ई अध्यक्ष के प्रतिनिधि के रूप में मेरा 55 डिस्ट्रिक्ट कांफ्रेंस में जाना हुआ हैं ...। बाद में, मित्रवत, मैंने उन्हें बताया कि अधिकांश पूर्व गवर्नर एक बार भी रो ई अध्यक्ष के प्रतिनिधि नहीं बने हैं। उन्होंने तत्काल अपनी गलती महसूस की और सलाह के लिए मुझे दिल खोलकर धन्यवाद दिया।

कार्लो को मैं एक व्यावहारिक दूरदृष्टा के रूप में जानता था। उनके पास दूरदृष्टि थी और एक सिविल इंजीनियर होने के नाते उन्होंने महसूस किया कि यथार्थ की तरह ही कल्पनाओं को भी किसी नींव की आवश्यकता होती है। उन्होंने अपने आदर्शों से कभी समझौता नहीं किया। कभी-कभी उन्हें गलत समझा जाता था कि वे कठोर हैं लेकिन उनके भीतर एक कोमल दिव्य हृदय धड़कता था। रोसएना उनके इस बाह्य को हमेशा निष्प्रभावी रखती थीं। वो बेहद नेकदिल महिला हैं। मुझे हमेशा मिस्टर प्रेसिडेंट कह कर बुलाती थीं। उषा और मेरे लिए यह दंपत्ति हमारे सवश्रेष्ठ मित्रों में से एक हैं।

एक बार इवान्स्टन की बात है, मैंने उनसे पूछा कि वह सुबह सैर पर कहाँ निकल गए थे। बोले, शिकागो, करीब 15 मील दूर। जब पूछा कि वापिस कैसे लौटे, उन्होंने जवाब दिया, ''वही, पैदल चल कर।'' दरअसल, कार्लो एक मैराथन वॉकर थे। किसी से जीतने के लिए नहीं बल्कि स्वयं को चुनौती देने के लिए। अपने जीवन में वो सही मायने में एक मैराथनर थे।

लेखक पूर्व रो ई अध्यक्ष है

अध्यक्ष मेहता के घर से मिली उन्हें विदाई

रशीदा भगत

वैश्विक सदस्यता के अध्यक्ष कमल संघवी द्वारा कोलकाता में आयोजित किए गए एक शानदार, भव्य कार्यक्रम में, भारत के वरिष्ठ रोटरी नेतृत्वकर्ताओं ने रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता और राशि को रो ई अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभालने के पहले दिन सम्मानित किया।

प्रतिभागियों में रो ई निदेशक महेश कोटबागी और उनकी पत्नी अमिता, TRF न्यासी गुलाम वाहनवटी, कई मंडल गवर्नर, पूर्व मंडल गवर्नर और मेहता के गृह क्लब कलकत्ता महानगर के रोटरी क्लब के सदस्य शामिल थे।

पुरानी यादों, अतीत के किस्सों, संगीत एवं नृत्य से भरे एक कार्यक्रम में हार्दिक शुभकामनाओं एवं प्रशस्तियों का जवाब देते हुए, एक पल के लिए मेहता के पास शब्द ही नहीं थे। लेकिन उन्होंने जल्द ही अपने आप को संयमित किया और रोटरी के लिए अपने सपनों को दोहराया - हर एक लाए एक-पहल के माध्यम से एक उच्च सदस्यता वृद्धि, बड़ी एवं साहसिक परियोजनाएं, रोटरी की सार्वजनिक छवि को शिखर पर ले जाने के लिए जोश के साथ एवं निष्ठुर होकर काम करना, ताकि यह NGO हर उस व्यक्ति की पसंद बन जाए जो कम भाग्यशाली लोगों की मदद करना चाहता है।

मेहता ने कहा कि हालांकि वह एक या दो सप्ताह में इवेन्स्टन के लिए रवाना होंगे, फिर भी वह रोटरी के लिए अपने मन में आए विचारों एवं परियोजनाओं पर चर्चा करने के लिए उनमें से कई को देर रात तक जगाने की अपनी प्रतिष्ठा पर खरा उतरना जारी रखेंगे।

उन्होंने बैठक में उपस्थित सभी लोगों को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद दिया, जिसके बिना वह रो ई के सर्वोच्च पद पर नहीं पहुंच पाते, उन्होंने कहा।

दक्षिणावर्तः रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता, रोटरी क्लब कलकत्ता महानगर के एमएचएम कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए। राशि, अमिता और रो ई निदेशक महेश कोटबागी भी मौजूद हैं; पीडीजी जॉन डेनियल, शोभा किशोर, अमिता, राशि और सोनल मनोरंजन कार्यक्रम में; एक आह्वान नृत्य; रो ई अध्यक्ष मेहता और राशि प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए; राशि, PRID कमल संघवी को केक का एक टुकड़ा खिलाती हुयी। टीआरएफ ट्रस्टी गुलाम वाहनवती, अमिता, सोनल, RID कोटबागी और रो ई अध्यक्ष मेहता भी चित्र में शामिल हैं।

बाएं से: *RID कोटबागी और अमिता, पीडीजी किशोर कुमार और शोभा द्वारा सम्मानित किये गए;*

(बाएं से) PRID कमल संघवी, अमिता, राशि, रो ई अध्यक्ष मेहता, RID कोटबागी और सोनल।

नीचे: *RID कोटबागी और अमिता, PRID कमल संघवी और सोनल के साथ।*

रो ई अध्यक्ष मेहता और राशि।

ऊपर: रो ई अध्यक्ष मेहता और राशि के साथ तस्वीरों के लिए पोज देते हुए मंडल नेता।

बाएं: (बाएं से) PRID कमल संघवी, RID कोटबागी, रो ई अध्यक्ष मेहता, राशी, अमिता, सोनल और शोभा।

चित्र : विशेष व्यवस्था द्वारा
रूपरेखा : एस कृष्णप्रतीश

रो ई मंडल 3291 में रोटरी-रोटरेक्ट तालमेल

जयश्री

रो ई मंडल 3291 में रोटरी क्लब सेवा परियोजनाओं को लागू करने और विभिन्न कार्यक्रमों को डिजाइन करने के लिए रोटरेक्ट क्लबों के साथ मिलकर एक प्रेरणास्रोत का निर्माण कर रहे है। ''इस साल की शुरुआत से ही रोटरेक्टरों के लिए यह एक रोमांचक यात्रा रही है, DRR अर्का कुमार नाग कहते है जो रोटेरियनों के साथ काम करने के लिए मंडल की रोटरेक्ट टीम का नेतृत्व करते है। उन्हें DG प्रबीर चटर्जी की नियुक्ति पर सम्मानीय अतिथि और 15 रोटरी क्लब अध्यक्षों की नियुक्ति के अवसर पर एक विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया, जिसे वह बहुत बड़ा सम्मान मानते है। रोटेरियन भी DRR के रूप में उनकी नियुक्ति में शामिल हुए, वह कहते है।

रोटरी को युवा पेशेवरों के लिए अधिक आकर्षक बनाने हेतु रोटरेक्ट की स्थिति में बढ़ोत्तरी 2019 विधान परिषद द्वारा अनुमोदित एक ऐतिहासिक निर्णय था, और ऐसा संभव PRIP बेरी रेसिन की वजह से हो पाया जिन्होंने औपचारिक रूप से रोटरी सदस्यता के लिए कदम उठाने का प्रस्ताव दिया ताकि रोटरी और रोटरेक्ट दोनों को शामिल किया जा सके और रोटेरियनों से आग्रह किया कि वे रोटरेक्टरों को बराबर समझे और उन्हें अपनी सामुदायिक गतिविधियों में शामिल करें। विधान परिषद के नतीजे में कई सकारात्मक नीतिगत बदलाव देखे गए जिनमें से एक रोटरेक्टरों को मंडल और रो ई समितियों में रोटेरियनों के साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल है।

रो ई मंडल 3291 की 18 रोटरी समितियों में से प्रत्येक में सह-अध्यक्ष के रूप में एक रोटरेक्टर है। ''इससे रोटरेक्टरों का मनोबल बढ़ा है। यह हमें रोटरी के समग्र लक्ष्यों में प्रभावी ढंग से योगदान देने का अवसर प्रदान करता है। उदाहरण के लिए रोटरी इंटरेक्ट समिति के सह-अध्यक्ष, जो एक रोटरेक्टर है, अधिक इंटरेक्टरों और इंटरेक्ट क्लबों को जोड़ने के लिए जिम्मेदार है। यह आसान हो जाता है क्योंकि रोटरेक्टर स्कूली बच्चों के साथ आसानी से जुड़ सकते है'', नाग कहते है। वहीं दूसरी तरफ PDGयों को मंडल रोटरेक्ट परिषद में मुख्य सलाहकार और मार्गदर्शक के रूप में नियुक्त किया गया है।

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता और RID 3291 के डीजी प्रबीर चटर्जी (बाएं) के साथ DRR अर्का कुमार नाग (दाएं)।

रो ई मंडल 3291 में रोटरी और रोटरेक्ट क्लब तीन महत्वपूर्ण सेवा परियोजनाओं पर एक साथ काम कर रहे है - एक विशाल रक्तदान शिविर; वीरांगना नामक लड़कियों/महिलाओं के लिए एक सशक्तिकरण कार्यक्रम जिसमें जीवन-कौशल प्रशिक्षण, आत्मरक्षा कार्यशालाएं और कानूनी परामर्श शामिल हैं; और हरियाली परियोजना जिसका लक्ष्य साल के अंत तक समस्त मंडल में 10,000 पौधे लगाने का है। ''विभिन्न परियोजना स्थलों पर हमारे DG और सहायक गवर्नरों के साथ जाना अच्छा था। ऐसे दौरों पर जाकर मैंने सेवा परियोजनाओं को डिजाइन करने और उन्हें लागू करने, योग्य लाभार्थियों का चुनाव करने और प्रतिस्पर्धी दरों पर आपूर्ति प्रदान करने के बारे में बहुत कुछ सीखा है।''

रोटरी-रोटरेक्ट दल पाकुर गांव में आदिवासी बच्चों के लिए एक हाई स्कूल स्थापित कर रहा है। यह स्कूल एक ईसाई मिशनरी द्वारा चलाया जाएगा और इसमें चार भारतीय रो ई अध्यक्षों - PRIP नीतीश लहरी, PRIP राजेंद्र साबू, PRIP कल्याण बेनर्जी और रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता के नाम पर हाउस (समूह) होंगे और सभागार पॉल हैरिस के नाम पर रखा जाएगा। स्कूल की नींव अगस्त के बीच में रखी गई थी।

नाग, एक दोहरे सदस्य, 2017 में RAC टॉलीगूंगे में शामिल हुए और उन्होंने लगातार तीन वर्षों तक इसके अध्यक्ष के रूप में सेवा दी। वह इस साल एक रोटेरियन के रूप में रोटरी क्लब

मंडल के वीरांगना कार्यक्रमों में से एक में DRR नाग और डीजी चटर्जी।

टॉलीगूंगे में शामिल हुए और क्लब के संघर्ष प्रबंधन अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वह पेशे से एक वकील है।

एक रोटरेक्टर के रूप में उन्होंने दुर्गा पूजा के दौरान पूरे कोलकाता में पंडालों के लिए दुर्गा जी की विशाल मूर्तियाँ बनाने वाले कलाकारों को सम्मानित करने के लिए अपने क्लब का नेतृत्व किया। ''हमने अपने मूल क्लब, रोटरी क्लब टॉलीगूंगे, और राज्य के श्रम विभाग के मार्गदर्शन में ऐसा किया।''

रोटरी इंटरेक्ट समिति के सह-अध्यक्ष, जो एक रोटरेक्टर है, अधिक इंटरेक्टरों और इंटरेक्ट क्लबों को जोड़ने के लिए जिम्मेदार है। यह आसान हो जाता है क्योंकि रोटरेक्टर स्कूली बच्चों के साथ आसानी से जुड़ सकते है।

उनके नेतृत्व के दौरान की गई अन्य रोटरेक्ट परियोजनाओं में 500 नलों को ठीक करना और पूरे कोलकाता में खुले पाइपों से पानी के प्रवाह को नियंत्रित करना; नेत्रहीनों को ब्रेल लिपि में किताबें और सफेद बेंत उपलब्ध कराना; और RotaLaw (रिसर्च ऑर्गनाइजेशन फॉर टीचिंग एंड एडवांसमेंट ऑफ लॉ) के सहयोग से समुदाय में कानूनी जागरूकता पैदा करना शामिल है।

DRR के रूप में उनके एजेंडे में पूरे साल में नेत्र कल्याण शिविर आयोजित करना और चश्में वितरित करना शामिल है। ''शुरुआत के लिए हमनें कोलकाता और सुंदरबन के पुलिस कर्मियों और नगर निगम कर्मचारियों के लिए आंखों की जांच शुरू की है। हमारा लक्ष्य अपने रोटरेक्ट क्लबों के माध्यम से 20,000 चश्में दान करने का है और कार्यक्रम की सफलता के आधार पर रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने इसे देश भर में विस्तारित करने में हमारी मदद करने का वादा किया है'', वह कहते है।

मेहता के सुझाव से उत्साहित होकर नाग दोहरे सदस्यों के रूप में अधिक रोटरेक्टरों को रोटरी में शामिल करने का आग्रह कर रहे है। पिछले साल इस मंडल में 47 दोहरे सदस्य थे और उन्हें इस साल भी काफी अच्छी संख्या में दोहरे सदस्यों को शामिल करने की उम्मीद है। ''हमारा लक्ष्य 2029 तक रोटरेक्ट सदस्यता को 1 मिलियन तक बढ़ाने का है। जब मैंने अध्यक्ष को यह बताया कि हम रोटरेक्टर भी हर एक लाए एक (EOBO) पर काम करेंगे, उन्होंने इसे EOBOR के रूप में संशोधित किया - यानी प्रत्येक रोटरेक्टर रोटरी में एक दोहरा सदस्य लाएगा। इससे रोटरेक्ट और रोटरी सदस्यता दोनों में वृद्धि होगी'', DRR कहते है।

नाग रोटरेक्ट ब्रांडिंग के लिए उत्सुक है और रोटरी एवं रोटरेक्ट की सार्वजनिक छवि को हर संभव तरीके से बढ़ाने की योजना बना रहे है। रोटरी-रोटरेक्ट क्लब रोटरेक्ट के सह-अध्यक्ष रवि वाडलामानी के सुझाव के अनुसार स्कूलों में बेंच और डेस्क वितरित करने की योजना बना रहे है। सभी फर्नीचर पर रोटरी और रोटरेक्ट लोगो लगे होंगे। यह लोगो प्रत्येक 10,000 पौधों के चारो ओर लगाए जाने वाले ट्री गार्ड पर भी अंकित किए जाएंगे।■

Rotary PEOPLE OF ACTION

नासिक के गांवों में पर्यावरण-अनुकूल चूल्हे

किरण ज़ेहरा

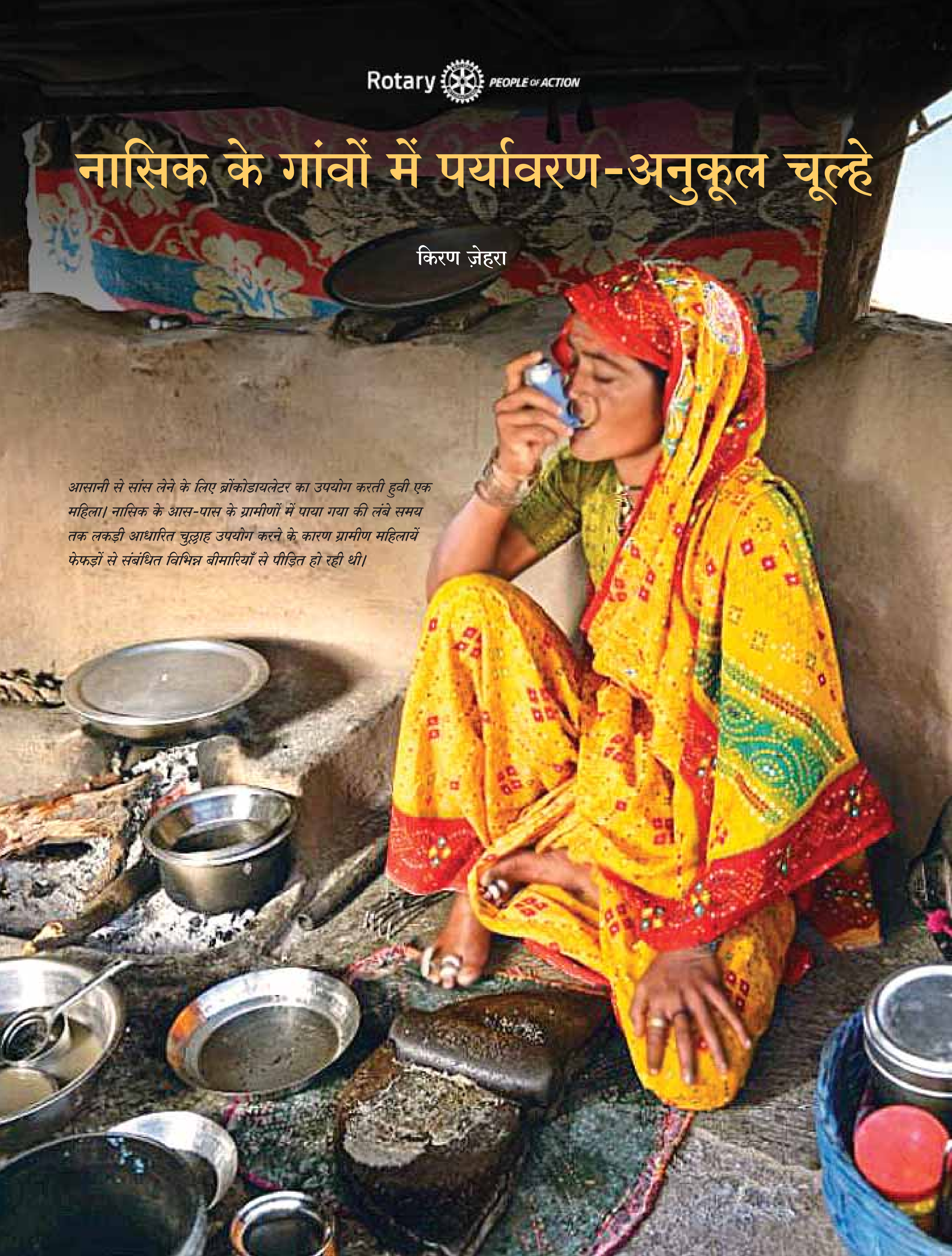

आसानी से सांस लेने के लिए ब्रोंकोडायलेटर का उपयोग करती हुवी एक महिला। नासिक के आस-पास के ग्रामीणों में पाया गया की लंबे समय तक लकड़ी आधारित चुल्हाह उपयोग करने के कारण ग्रामीण महिलायें फेफड़ों से संबंधित विभिन्न बीमारियाँ से पीड़ित हो रही थी।

गांव में धुंआ मुक्त चूल्हा बांटते हुए रोटरी क्लब नासिक के सदस्य।

महाराष्ट्र के नासिक के पास ज़री, अंबास, बेहेड़पाड़ा, नवीनपाड़ा, और पलशीखुर्द गांवों में धुंआ रहित चूल्हों ने जहरीले अंदरूनी वायु प्रदूषण को कम करके एवं जलाऊ लकड़ी को खत्म करके गांव की महिलाओं के जीवन में सुधार किया है। रोटरी क्लब नासिक, रो ई मंडल 3030, को धन्यवाद जिसने इन गांवों में 250 धुएं रहित स्टोव वितरित किए।

नासिक से 150 किमी दूर स्थित एवं पश्चिमी घाटों के पेठ जंगल के केंद्र में बसे ये गांव किसी पक्की सड़क से नहीं जुड़े है। ''खाना पकाने के लिए जलाऊ लकड़ी की खपत में पिछले कुछ वर्षों में वृद्धि हुई है, जो चिंताजनक है, और पक्की सड़कों की कमी के कारण गरीब परिवारों तक सरकारी योजनाओं की पहुंच भी सुप्रचालनिक रूप से चुनौतीपूर्ण है।'' CSR परियोजनाओं (2020-21) के प्रभारी प्रफुल बर्दिया कहते है, ''जब लोगों को खराब सड़कों पर कई किलोमीटर की यात्रा करना पड़े तो उन तक LPG सिलेंडर पहुंचना भी मुश्किल होता है।''

एक साल पहले, जब क्लब ने पांच गांवों में जीवन संवहनीयता सर्वेक्षण किया, तो उन्होंने ग्रामीणों के स्वास्थ्य और तेजी से वनों की कटाई के बीच एक सीधा संबंध पाया। ''महिलाएं नज़र में धुंधलापन, खांसी और छाती में जमाव की शिकायत करती थी। हम यह जानकर हैरान रह गए कि धुएं का दुष्प्रभाव शिशुओं पर भी पड़ रहा था, विलेज एडॉप्शन के पूर्व क्लब निदेशक विवेक पेंडसे कहते है। अध्ययन से पता चला कि खाना पकाने हेतु जलाऊ लकड़ी के लिए बड़ी संख्या में पेड़ों को काट दिया गया था। प्रत्येक गाँव में 50 घर है और उनमें से प्रत्येक को साल में तीन पेड़ लकड़ी की आवश्यकता होती है। जिसका मतलब था कि इन गांवों में सालाना 150 पेड़ काटे जा रहे थे।''

इस अध्ययन के बाद, पारंपरिक चूल्हों से होने वाले स्वास्थ्य खतरों के बारे में उन्हें जागरूक करने के लिए ग्रामीणों, विशेष रूप से महिलाओं के साथ, कई बैठकें की गई। क्लब फंड का उपयोग करते हुए, प्रायोगिक परियोजना के रूप में प्रत्येक गांव में दो परिवारों को दो धुआँ मुक्त स्टोव दिए गए। नए पर्यावरण-अनुकूल चूल्हों का इस्तेमाल करने से, इन घरों में दैनिक जलाऊ लकड़ी की खपत 5-7 किलोग्राम से घटकर 1.5 किलोग्राम रह गई थी। ''नए चूल्हों का उपयोग करने वाली महिलाएं बहुत खुश थी और ग्राम प्रधानों ने अनुरोध किया कि सभी घरों - लगभग 250 - में ये नए चूल्हें उपलब्ध कराए जाएं।''

नए पर्यावरण-अनुकूल चूल्हों का इस्तेमाल करने से, इन घरों में दैनिक जलाऊ लकड़ी की खपत 5-7 किलोग्राम से घटकर 1.5 किलोग्राम रह गई थी।

क्लब के CSR दल ने ऑटोकॉम्प इंडिया को शामिल किया, जिसने एक स्थानीय डीलर से नए धुंआ रहित चूल्हें खरीदने के लिए 3 लाख का योगदान दिया। जब जून 2021 में लॉकडाउन हटा लिया गया, तब IPP मुग्धा लेले और बर्दिया ने क्लब के कुछ सदस्यों और कंपनी के अधिकारियों के साथ लाभार्थियों को नए स्टोव वितरित किए। ''इस परियोजना ने हमारी महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार किया है क्योंकि अब वे धुएं या अन्य हानिकारक पदार्थों के संपर्क में नहीं है, अंबास गांव की एक गृहिणी नंदा मुस्कुराती है। इस पर्यावरण प्रेमी परियोजना से, हर गांव में करीब एक हजार ग्रामीण लाभान्वित होंगे। इसके अलावा, हजारों पेड़ों को काटे जाने से भी बचा लिया गया'', पेंडसे मुस्कुराते है।

कोविड टीकाकरण शिविर

रोटरी क्लब नासिक के रोटरी चैरिटेबल ट्रस्ट, HCG मानवाता अस्पताल और इंडियन वाल्व ने संयुक्त रूप से एक टीकाकरण अभियान चलाया, जिसमें लगभग 630 वंचित लोगों को टीका लगाया गया। नासिक स्थित JDC बाइटको कॉलेज के RAC से 40 रोटेरियनों एवं 10 रोटरेक्टरों की एक टीम ने परियोजना को कार्यान्वित किया। ■

रो ई मंडल 3141 पालघर के ग्रामीणों के लिए कम लागत वाले घरों का निर्माण करता है

टीम रोटरी न्यूज़

महाराष्ट्र के पालघर जिले में विभिन्न पाड़ों (बस्तियों) में मिट्टी से बनी झोपड़ियों में रहने वाले आदिवासी परिवारों के लिए रो ई मंडल 3141 की एक महत्वाकांक्षी कम लागत वाली आवास परियोजना *आशियाना* के तहत अब तक 110 पक्के, कंक्रीट के घर बनाए जा चुके है, जबकि 215 घर अभी निर्माणाधीन है। मंडल परियोजना निदेशक राज खोसला के नेतृत्व में परियोजना दल को 425 मकान बनाने की सहमति मिल गई है। ''जल्द ही बचे हुए 100 घरों पर काम शुरू हो जाएगा। मंडल के रोटेरियनों की दरियादिली और निरंतर समर्थन की वजह से, हमें नए घर बनाने के लिए नई प्रतिबद्धताएं प्राप्त हुई है, जिन्हें उचित समय पर स्वीकार किया जाएगा'', IPDG सुनील मेहरा ने कहा।

खोसला को निरामन की अनुमति के लिए स्थानीय अधिकारियों से संपर्क करने, वास्तुकारों को शामिल करने और निर्माण ठेकेदारों का चयन करके परियोजना शुरू करने का काम सौंपा गया था। काम शुरू करने से पहले, उन्हें आदिवासी लाभार्थियों को प्रधान मंत्री आवास योजना का लाभ उठाने के लिए राजी करना पड़ा, जो ग्रामीण गरीबों को कम लागत वाले घर प्रदान करती है। आशियाना परियोजना भारत सरकार की इस आवास योजना के दायरे में लागू की गई थी।

आशियाना परियोजना के एक लाभार्थियों अपने पुराने घर में।

₹2 लाख की लागत वाली एक इकाई के लिए भारत सरकार ने ₹1.2 लाख सब्सिडी दी और परियोजना के शुरुआती चरणों में ही बाधाओं का सामना करना पड़ा क्योंकि कोई भी ठेकेदार आवास योजना की मौजूदा शर्तों के तहत काम करने को तैयार नहीं था। मंडल सचिव अनिल जैन ने ''गेम ऑफ हाउसी' नामक एक धन संचयन कार्यक्रम आयोजित करने का एक शानदार विचार प्रस्तुत किया, जिसे पूरे मंडल में पासे पलट कर खेला गया। और इस खेल में शामिल होने की शर्त यह थी कि एक क्लब को एक घर का वादा करना होगा। पहले महीने में ही, 50 घरों के लिए मंडल के क्लबों से प्रतिबद्धताऐं प्राप्त हुई, और खेल को अभूतपूर्व सफलता मिली'', मेहरा ने कहा।

आशाएं 'दिल में होगी'

परंतु जुटाई गई धनराशि पर्याप्त नहीं थी और ऐन मिनी खोसला ने *आशाएं दिल में होगी* नामक एक संगीतमय अनुदान संचयन समारोह की रूपरेखा तैयार की, जिसने कॉरपोरेट्स से बड़ी मात्रा में CSR राशि एकत्रित की।

परियोजना दल ने ज़िला परिषद के अधिकारियों के साथ मिलकर सरकारी हिस्से का निधीयन स्वीकृत करते रहने के लिए काम किया, मकान मालिकों को अपने मौजूदा आवासों को ढहाने के लिए राजी किया और आवास परियोजना के लिए सही ठेकेदारों को शामिल किया। पालघर, दहानू और वाडा के रोटरी क्लबों ने टीम की ग्राम पंचायत सरपंच सहित स्थानीय अधिकारियों के साथ बैठक करने में मदद की।

''पहले 50 घरों को पूरा करना सबसे कठिन था। लेकिन शुरुआती जद्दोजहद के बाद, आशियाना टीम ने एक उत्कृष्ट प्रणाली स्थापित की और वहां

से निर्माण सुचारू रूप से चला'', मेहरा ने कहा। उपलब्ध स्थान का सर्वोत्कृष्ट उपयोग सुनिश्चित करने और सुंदर रूप प्रदान करने के लिए घरों को डिजाइन करते समय अत्यधिक सावधानी बरती गई।

खुशी का पल

पहला घर सौंपते समय उऋ मेहरा को शर्मिंदगी महसूस हुई, हालांकि खुशी भी हुई, जब 80 वर्षीय एक महिला लाभार्थी ने रोटरी के प्रति कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में उनके पैर छुए। उन्होंने नारियल फोड़ा और गृह प्रवेश करने से पहले एक छोटी पूजा की। पूजा पूरी करने के बाद, उन्होंने पेड़े का एक डिब्बा निकाला और एक पेड़ा मेहरा को खिलाया। ''वह अपने जीवन में पहली बार अपने नए घर में कदम रखकर खुश थी।''

क्लब के अध्यक्ष, जो पूरे हो चुके घरों को सौंपने गए थे, ने लाभार्थियों के लिए अनेक सेवा परियोजनाओं की घोषणा की - एक 3H परियोजना (स्वास्थ्य, भूख और स्वच्छता) जहां अनाज और दोबारा इस्तेमाल किए जा सकने वाले सैनिटरी पैड

प्रोजेक्ट आशियाना के तहत बनाया गया कम लागत वाले अपने घर एक लाभार्थी।

वितरित किए गए; लगभग 1,600 बच्चों को कुपोषण से निपटने के लिए पौष्टिक भोजन दिया गया; सभी घरों में नल से पानी की आपूर्ति के लिए बोरवेल खोदे गए और पाइपलाइन बिछाई गई; और आदिवासी परिवारों के लिए सामुदायिक और चिकित्सीय केंद्रों का निर्माण किया गया। रोटरी क्लब बॉम्बे हैंगिंग गार्डन के रोटेरियन दिलीप शाह ने रोटरी आशियाना घरों में ट्यूब लाइट और पंखे लगवाने की व्यवस्था की। ■

ओडिशा में रोटरी ऑक्सीबैंक ने कोविड रोगियों को बचाया

IPDG सौम्या राजन मिश्रा ऑक्सीजन सिलेंडर और मेडिकल सहायक उपकरण एक रोटरी क्लब के ऑक्सीबैंक को सौंपते हुए।

कोविड की दूसरी लहर के दौरान, अधिकांश अन्य शहरों की तरह, भुवनेश्वर भी ऑक्सीजन की कमी से जूझ रहा था और बढ़ती मांग के साथ, ऑक्सीजन सिलेंडरों की कीमत आसमान छू रही थी और संजीवनी गैस के लिए ब्लैक मार्केटिंग हो रही थी।

ऐसे माहौल में तत्कालीन डीजी सौम्या राजन मिश्रा के नेतृत्व में रो ई मंडल 3262 ने जिले भर में रोटरी क्लबों के माध्यम से ऑक्सीबैंक स्थापित करने का विचार रखा। परियोजना संयोजक प्रदीप पंडा और एसएस खडगरे ने मंडल के विभिन्न रोटरी क्लबों के बीच वितरित किए जाने के लिए मुंबई से 500 ऑक्सीजन सिलेंडर की खरीद की रणनीति पर काम किया। क्लब होम आइसोलेशन के तहत और ग्रामीण क्षेत्रों में कोविड रोगियों की ऑक्सीजन की जरूरतों को पूरा करेंगे। बाजार में ₹16,000 की लागत वाले सिलेंडरों को क्लबों ने जिला कार्यालय से बातचीत के बाद ₹8,400 में खरीदा था।

''सिलेंडर मई के अंत तक भुवनेश्वर पहुँचने वाले थे। बारामुंडा आरसी की सदस्य स्मिता सिन्हा ने कहा, लेकिन ओडिशा तट पर चक्रवात यास की वजह से परिवहन व्यवस्था बाधित होने के कारण डिलीवरी में देरी हुई। दो रोटेरियन जिनके पास ऑक्सीजन प्लांट थे-आर सी कटक मिडटाउन और देबव्रत स्वेन ने सिलेंडरों को मुफ्त में रिफिल करने में मदद की।''

इस पहल की रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता और रोटरी इंडिया कोविड टास्क फोर्स के अध्यक्ष अशोक महाजन ने सराहना की। ■

असम के गांवों में सोलर लाइटें हाथियों को दूर रखती है

किरण ज़ेहरा

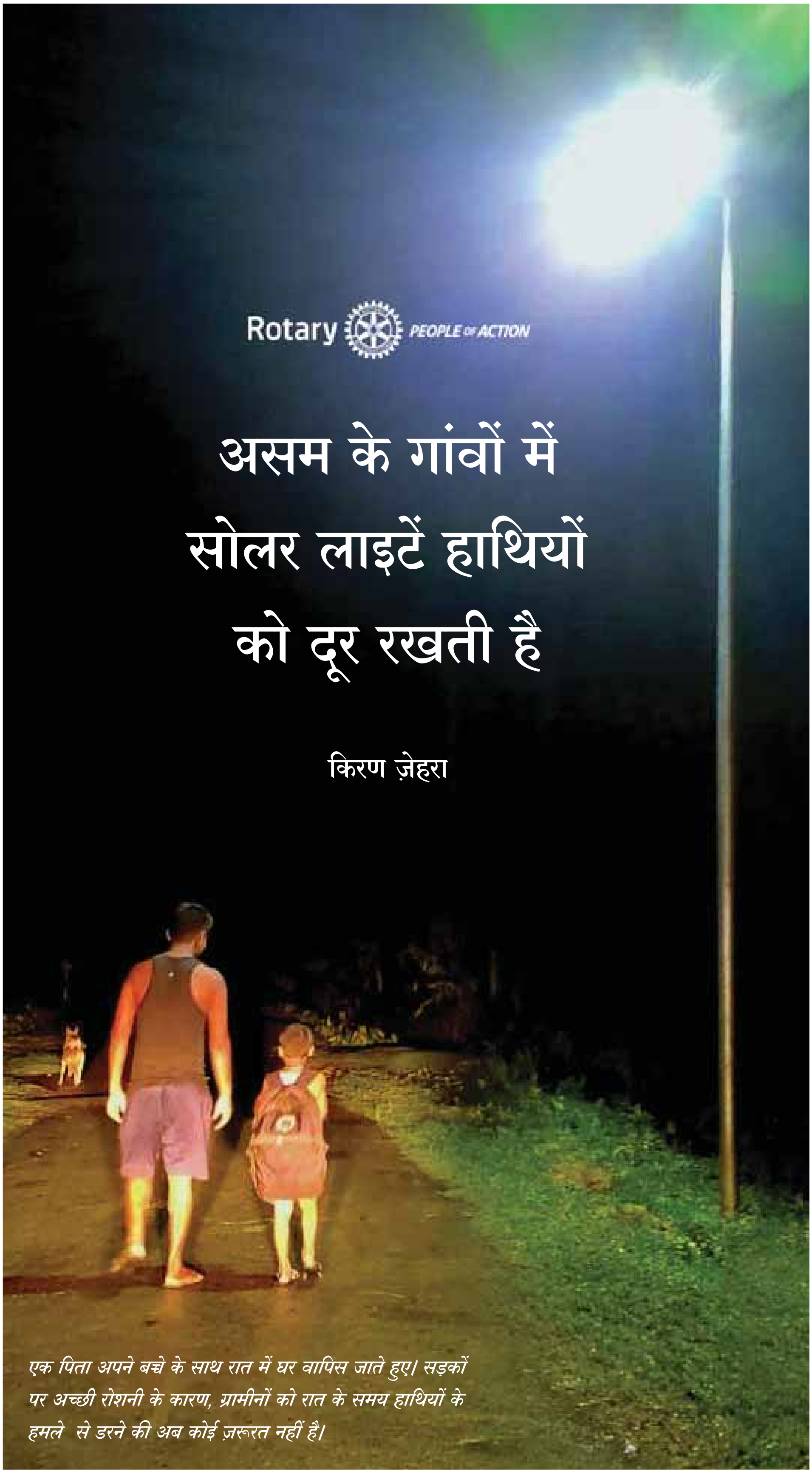

एक पिता अपने बच्चे के साथ रात में घर वापिस जाते हुए। सड़कों पर अच्छी रोशनी के कारण, ग्रामीनों को रात के समय हाथियों के हमले से डरने की अब कोई ज़रूरत नहीं है।

असम के तिनसुकिया ज़िले के डिगबोई के पूर्व में स्थित 10 गांवों के समूह खेरजान और ढेकियाजान में मिट्टी से बनी झोपड़ियों में रहने वाले ग्रामीण जंगली हाथियों के डर से रात के दौरान कंक्रीट के घरों में शरण लेते है। ''हम में से कुछ लोगों ने धान के खेतों में जाना भी बंद कर दिया था क्योंकि जानवरों ने हमारी फसल बर्बाद कर दी थी'', गांव के एक युवा रिकिराज गोगोई कहते है।

उनका गांव जंगल के करीब है और कभी यह हाथियों का मार्ग हुआ करता था। ''वनों की कटाई और हाथियों के गलियारों के लगातार अतिक्रमण के कारण डिगबोई के पास स्थित गांवों में मानव-वन्यजीव संघर्षों में वृद्धि देखी गई है'', रोटरी क्लब डिगबोई, रो ई मंडल, 3240 के अध्यक्ष सत्यकाम डेवोरा कहते है। पिछले दो वर्षों में हाथियों द्वारा पांच लोगों के मारे जाने के बाद, क्लब ने दस गांवों की मदद करने का फैसला किया। जानवरों को भगाने के लिए वे पटाखे फोड़ते है और ढोल पीटते है; और अपनी खेतिहर भूमि की रक्षा के लिए पूरी रात निगरानी करते

चूंकि अब गाँव रात में सोलर लैंप की चमक के साथ जगमगाता है, हाथियों ने हमारी फसलों को बर्बाद करना और घरों में तोड़फोड़ करना बंद कर दिया है।

जॉयचन्दा बोराह
ग्राम मुखिया

है। ''लेकिन ये उपाय हाथियों को गांवों में तबाही मचाने से नहीं रोक सकें। हमने धान, फलों और सब्जियों की खेती बंद कर दी थी क्योंकि ये सब जानवरों के लिए चारा बन गया था'', गोगोई कहते है।

ग्रामीणों के साथ हुई एक बैठक के दौरान ''हमनें उन्हें समझाया कि प्राकृतिक वास में आई कमी, अवैध शिकार और मानव बस्तियों एवं निर्माण गतिविधियों द्वारा किए जा रहे अतिक्रमण की वजह से हाथी अब कम जगह तक सीमित होकर रह गए है'', डेवोरा कहते है। इस चुनौती का समाधान खोजने के लिए दो आभासी सेमिनार आयोजित किए गए। एक सुझाव यह था कि जानवरों का गांवों में प्रवेश रोकने के लिए सड़कों को रोशन किया जाए। ''हमें भारत सरकार के नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की एक योजना के बारे में भी पता चला, जिसने ग्रामीणों के लिए उम्मीद की एक किरण जगाई'', वह कहते है।

महिलाएं धान के खेतों में काम पर वापस आ गई हैं।

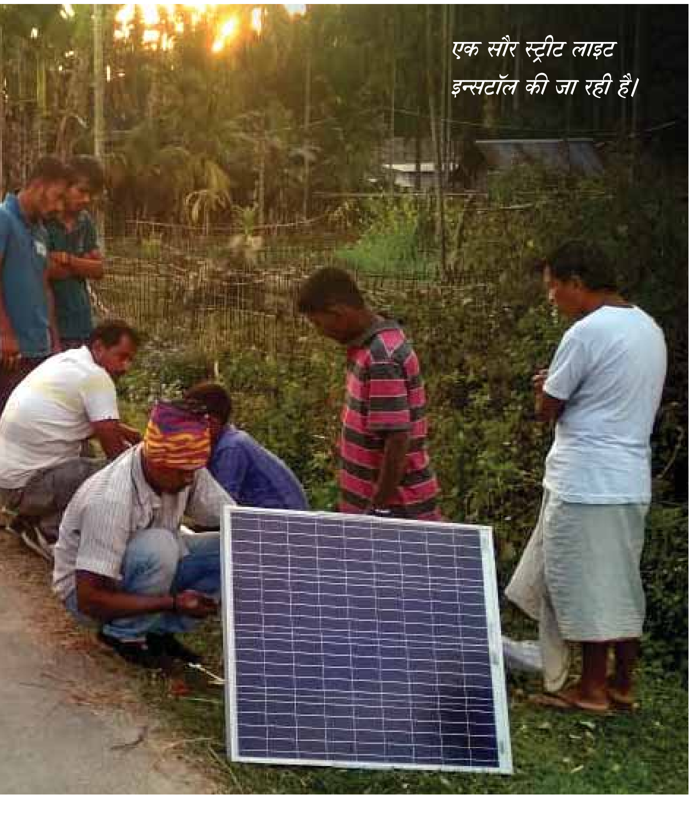

एक सौर स्ट्रीट लाइट इन्सटॉल की जा रही है।

जल्द ही असम एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी (AEDA) के अधिकारियों को शामिल किया गया और *परियोजना पोहर* (असमिया में अर्थ है 'प्रकाश') ने आकार लिया। क्लब ने 12 वाट फोटवोल्टैइक सेल द्वारा संचालित 100 LED लैंप स्थापित करने का निर्णय लिया। इन झत सेलों को दस गांवों में सुविधाजनक स्थानों पर लिथियम बैटरियों द्वारा चार्ज किया जाता है। ''हमें सब्सिडी वाली AEDA योजना के तहत ₹2.7 लाख में सोलर लाइटें मिल गई, वरना ये हमें ₹27 लाख में पड़ती। IPDG सुभाषिश चटर्जी की बदौलत डोवेरा को रो ई मंडल ₹3240 फाउंडेशन से ₹2 लाख मिले, और शेष 70,000 क्लब ने सदस्यों के दान से जुटाए।

AEDA ने इन लैंपों को लगाने का काम शुरू कर दिया है और यह पांच साल तक इनका रखरखाव भी करेगा। परियोजना के क्षेत्र पर्यवेक्षण के लिए गांव के युवाओं को शामिल किया गया। उन्हें लैंपों को साफ करने और एक हाई मास्ट लैम्प लगाने का प्रशिक्षण दिया गया। ''इन लाईटों को सुचारू रूप से स्थानांतरित करने के लिए स्थापना के बाद ग्रामीणों के साथ बैठकें की गई, और नियमित रखरखाव के लिए दो दलों का गठन किया गया।''

अब हाथी दूर रहते है

चूंकि अब गाँव रात में सोलर लैंप की चमक के साथ जगमगाता है, ''हाथियों ने हमारी फसलों को बर्बाद करना और घरों में तोड़फोड़ करना बंद कर दिया है।'' रोटरी ने हमारे लिए जो किया, सरकार उसे वर्षों से नहीं कर सकी, 80 वर्ष से अधिक उम्र के ग्राम प्रधान जयचंद बोरा कहते है। जहां बुजुर्ग लोग वापस खेती करने लगे है, युवा अब देर रात घर लौटते समय जंगली हाथियों द्वारा पीछा किए जाने के डर के बिना डिगबोई में ईव्निंग कॉलेज में जाते है। क्लब की इसी तरह की समस्याओं को झेल रहे अन्य गांवों में सोलर लैंप परियोजना शुरू करने की योजना है।■

Mahabs 2021

FEEL THE HERITAGE

Rotary

ROTARY INSTITUTE 2021

Zone 4,5,6 & 7 | 10-12 Dec 2021 | Mahabalipuram | Tamil Nadu

Team Mahabs is all set and ready to organize the Institute in a magnificent manner. Each and every moment at the Institute is meticulously planned to keep you engaged and ignited. We have a distinguished group of keynote speakers from all over the world to deliver insightful sessions on various topics.

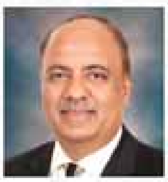

Shekar Mehta
RI President (2021 -22)

RID.AS. Venkatesh
Convenor

PDG.Muruganandam.M (MMM)
Chairman

ROTARY INSTITUTE IS ON

REGISTER EARLY

to avoid last minute rush !!

Great Speakers
Enthralling and inspiring sessions by eminent speakers

Networking
Build long-term, mutually beneficial relationships across India.

Heritage
Feel the Heritage in and around Mahabalipuram

Have Fun
Relax and have fun - entertainment Unlimited.

PDG.MURUGANANDAM. M (MMM)
Chairman | +91 - 93825 50001

PDG.SURENDRA BOMMIREDDY
Co-Chair | +91 - 98481 05690

PDG.KANNAN.RVN
Chair - Registration | +91 - 73737 66666

PDG.MADHAV CHANDRAN.R
Secretary | +91 - 98460 31667

PDG.PINKY PATEL
Chair - Promotion | +91 - 9376210325

HOW TO REGISTER

1. Visit www.riinstitutemahabs21.org
2. Select your District Number and your name
3. Check programmes that you will be attending
4. Select choice of hotels / Check in - Check out dates
5. Select your preferred payment option and complete your registration.

Mahabs 2021
FEEL THE HERITAGE

www.riinstitutemahabs21.org
Register Now

Programme Schedule

Date	Program	Venue	Single (INR)	Couple (INR)
7-9/12-2021	DG Elect Training Seminar (Incl Accommodation @ Raddison Blu for 7th & 8th Night Only)	@ Raddison Blu	--	75,000
9/12/2021	DG Nominee Training Seminar (Includes Accommodation @ Raddison Blu / Chariot Beach Resort - for 9th Night Only)	@ Raddison Blu	--	25,000
9/12/2021	DG Mid-Year Review Meet	@ Raddison Blu	4,000	7,000
9/12/2021	District Trainers Seminar	@ Raddison Blu	4,000	7,000
9/12/2021	Council on Legislation	@ Raddison Blu	4,000	7,000
9/12/2021	The Rotary Foundation Dinner	@ Raddison Blu	4,000	6,000
10/12/2021	The Rotary Foundation Seminar	@ Raddison Blu	3,000	6,000
10-12/12/2021	Rotary Institute 2021 - Mahabs 21	@ Four Points Convention Centre	19,000	30,000

Accommodation Choice

Hotel Name	Room Type	Tariff
Four Points	Deluxe / Garden View	8,500
GRT Radisson Blu	Deluxe Garden View	10,400
Chariot Beach Resort	Standard Room	8,000
	Deluxe Room	8,500
	Deluxe Sea View	9,500
	Deluxe Cottage	10,500
Ideal Beach Resort	Garden View Room	6,800
	Deluxe Rooms	9,500
	Sea view Villas	14,800

Four Points Resorts, Mahabalipuram

GRT Radisson Blu, Mahabalipuram

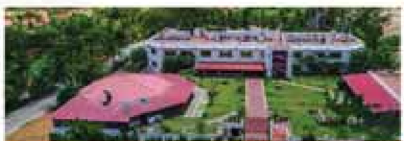

Chariot Beach Resort, Mahabalipuram

Ideal Beach Resort, Mahabalipuram

SUPPORT (MMM'S OFFICE)

PRIMARY SUPPORT:
Rtn.Sareesh Agarwal : +91 - 90255 05051

SECONDARY SUPPORT:
Rtn.Ruthi Rani : +91 - 93825 50006
Kaneeza : +91 - 98416 77403

अन्नपूर्णा की चोटी पर लहराया रोटरी का झंडा

जयश्री

भगवान चावले (39) से मिलिये जिन्होंने हाल ही में दुनिया के 10वें सबसे ऊंचे पर्वत अन्नपूर्णा को फतह किया। वह रोटरी क्लब पुणे गांधी भवन, रो ई मंडल 3131, के एक सदस्य है।

अन्नपूर्णा पर्वत नेपाल-हिमालय शृंखला पर स्थित एक पुंजक है जिसकी एक चोटी 8,091 मीटर ऊंची और दूसरी 7,000 मीटर ऊंची है। हमारे दल में 87 सदस्य थे। ''लेकिन हम में से केवल 67 ही शिखर पर पहुंच सके और बाकि लोगों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण वापस जाना पड़ा,'' चावले कहते है। इस चढ़ाई की दो अनूठी उपलब्धियां थी - ''पहली सतारा की एक पर्वतारोही प्रियंका मोहिते इस पर्वत को फतह करने वाली पहली भारतीय महिला बनी और दूसरी हम आठ भारतीयों ने शिखर पर पहुंचकर पहले के चार भारतीयों के रिकॉर्ड को तोड़ा।''

चावले ने इससे पहले एक साल पूर्व किए गए एक असफल प्रयास के बाद 2018 में एवरेस्ट फतह किया था। ''2017 में, मैं चोटी से बस 100 मीटर दूर था।'' खराब मौसम के कारण उन्हें अंतिम पड़ाव छोड़ना पड़ा और उनके दो साथियों की मृत्यु ने उनके दुख में और अधिक वृद्धि की।

हाल के अभियान के लिए उन्होंने और उनके साथी पर्वतारोहियों ने मई के अंत तक पोखरा, नेपाल, छोड़ दिया और 16 अप्रैल को चोटी पर पहुंचने से पहले प्रत्येक शिविर में एक सप्ताह के लिए पर्यनुकूलन पूरा किया। ''हम भाग्यशाली रहे कि इस बार कोई जनहानी नहीं हुई क्योंकि माउंट अन्नपूर्णा काफी विकट है। जब मैं वहां शिखर पर खड़ा हुआ तो मुझे जो खुशी महसूस हुई उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। वे सभी दुविधाएं - जोखिम भारी ढलानें, ठंडी हवाएँ, हिमस्खलन और शीतदंश - छूमंतर हो गई। मेरी प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं था, और जब मैंने

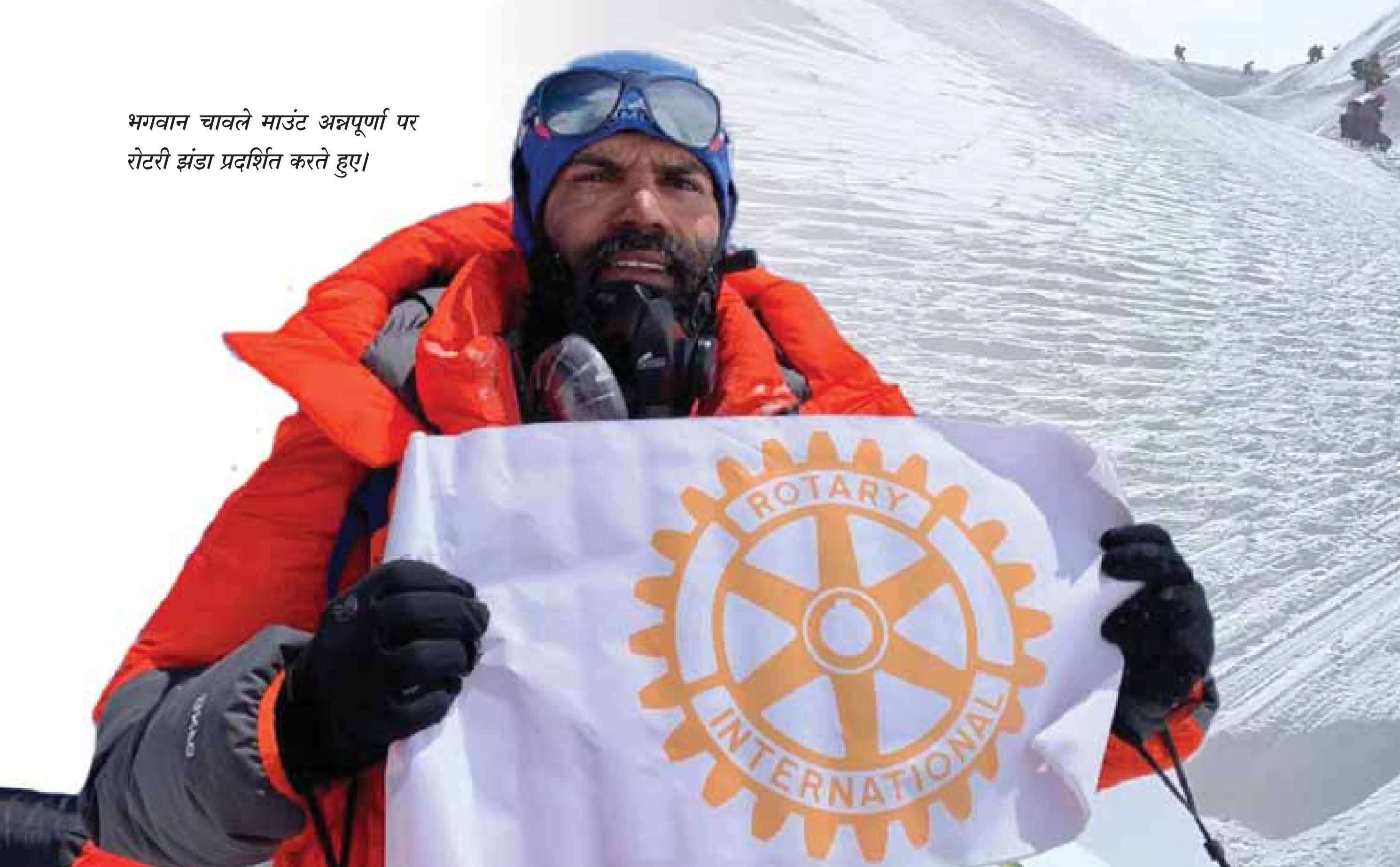

भगवान चावले माउंट अन्नपूर्णा पर रोटरी झंडा प्रदर्शित करते हुए।

रोटरी और भारतीय झंडा वहां फहराया, तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए,'' चावले निश्चल गर्व के साथ कहते है।

हालांकि इन पहाड़ों पर लगे कूड़े के ढेर चिंता का विषय है। लोगों को इस सुहाने वातावरण को साफ रखने के लिए थोड़ा अधिक संवेदनशील होना चाहिए और बेस कैंप के लिए उतरते समय कम से कम अपना कचरा साफ करनी की जिम्मेदारी लेनी चाहिए, खाली ऑक्सीजन की बोतलें, तंबू, कैन और रैपर इकट्ठा करके नीचे लाकर अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाते हुए वह कहते है। हमें 1,000 डॉलर प्रतिदेय कचरा शुल्क के रूप में जमा करना पड़ा जो हमारे द्वारा कचरा वापस ना लाने की सूरत में जब्त कर लिया जाता। लेकिन पर्वतारोही जमा राशि को पुनः प्राप्त करने के लिए केवल थोड़ा सा ही कचरा वापस लाते है,

वह आगे कहते है। सफाई अभियान नियमित रूप से आयोजित किए जाते है और कभी-कभी कचरा लेकर उतरने वालों को आर्थिक पुरस्कार भी दिया जाता है।''

खर्च के बारे में बात करते हुए चावले कहते है कि उन्होंने इस अभियान के लिए करीब ₹14 लाख खर्च किए थे। उनके रोटरी क्लब ने 50,000 से मदद की थी। ''दोस्तों और परिवार जनों से मदद के अलावा, मैंने कर्ज लिया और अपनी बचत से भी पैसे निकाले। जब भी मैं एक अभियान की योजना बनाता हूं, तो मैं मितव्ययी बन जाता हूं और जितना संभव होता है उतना बचाता हूं,'' वह मुस्कुराते हुए आगे कहते है कि एवरेस्ट अभियान के दौरान उन्होंने 11,000 डॉलर नेपाल माउन्टनीरिंग एसोसिएशन का पर्मिट लेने में खर्च किए और चढ़ाई के लिए कुल ₹30 लाख खर्च किए। उनकी फिटनेस दिनचर्या में तीन घंटे की दौड़, साइकिलिंग और ताकत प्रशिक्षण शामिल है।

LIC, पुणे, में एक विकास प्रबंधक के रूप में कार्यरत, चावले ने अपने कॉलेज के उन दिनों में पर्वतारोहण एवं अन्य साहसिक गतिविधियों के लिए एक जुनून विकसित किया जब वह एक NCC कैडेट थे। वह राइफल शूटिंग में स्वर्ण पदक और नौकायन में कांस्य पदक के साथ एक राष्ट्रीय विजेता है। वह एक ट्रायथलॉन एथलीट है और सप्ताहांत में साहसिक शिविरों का आयोजन करते है। उनके अन्य पर्वतारोहण अभियानों में हिमालय की कंचनजंगा, धौलागिरी, स्टोक कांगड़ी और बागीरथी-2 चोटियाँ एवं सह्याद्री पर्वतमाला पर वानरलिंगी, वजीर, लिंगन और तैलबैला चोटियाँ शामिल है।

माउंट एवरेस्ट के शिखर पर पहुंचने पर चावले गर्व से भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को प्रदर्शित करते हैं।

''मेरी बड़ी बेटी, राज नंदिनी, मेरी सबसे बड़ी प्रशंसक है और वह मेरे साथ छोटी चढ़ाइयों पर जाना पसंद करती है। मेरी पत्नी जो शुरूआत में इसके खिलाफ थी, अब मेरी सबसे अच्छी चीयर लीडर है,'' चावले मुस्कुराते है और अब वह नेपाल-हिमालय पर्वतमाला पर स्थित माउंट मानसलू की चढ़ाई के 4 सितंबर से शुरू होने वाले 40-दिवसीय अभियान के लिए पूरी तरह तैयार है। ■

रोटरी क्लब बॉम्बे जटिल बाल हृदय सर्जरी में सहायता करता है

रशीदा भगत

जब 4-वर्षीय बच्चे हेमंत नाइक, जिसका परिवार घाटकोपर में मुंबई की झुग्गी बस्ती में रहता है, को एक जटिल हृदय सर्जरी की आवश्यकता थी, रोटरी क्लब मुंबई घाटकोपर रो ई मंडल 3141 ने उसे रोटरी क्लब बॉम्बे के पास भेजा, जिसके पास बच्चों की हृदय सर्जरी के लिए एक जारी वैश्विक अनुदान है। ''बच्चे को एक जटिल हृदय सर्जरी के लिए कोकिलाबेन अंबानी अस्पताल रेफर किया गया था; उसकी पहले ही वाडिया अस्पताल में 4 बैलून प्रक्रियाएं और एक ओपन हार्ट सर्जरी हो चुकी थी'', रोटरी क्लब बॉम्बे के वैश्विक अनुदान के प्रभारी निदेशक और पूर्व अध्यक्ष वी के जटिया कहते है।

बच्चा एक बहुत ही जटिल हृदय विकार के साथ पैदा हुआ था जिसे ठीक करने लिए कई चरणों में सर्जरी की जाने की आवश्यकता थी। यह उच्च जोखिम वाली एक अत्यंत जटिल सर्जरी थी। माता-पिता को सर्जरी से पहले जोखिमों के बारे में बताया गया और परामर्श दिया गया। रोटरी क्लब बॉम्बे के सदस्य DGE संदीप अग्रवाल (रो ई मंडल 3141) बताते हैं कि यह बच्चा हाइपोप्लास्टिक लेफ्ट हार्ट सिंड्रोम (HLHS) नामक एक जटिल बीमारी के साथ पैदा हुआ था। यदि ऐसे बच्चों का इलाज ना किया जाए, तो ऐसे बच्चे जीवित नहीं रहते है। ''दिल के बाएं हिस्से को ठीक नहीं किया जा सकता है, इसलिए सर्जरी का लक्ष्य दिल के कुछ हिस्सों का पुनर्निर्माण करना और रक्त प्रवाह को पुनः निर्दिष्ट करना है।''

4-वर्षीय हेमंत नाइक

जटिया कहते है कि बच्चे की होने वाली सर्जरियों में आखिरी सर्जरी होने वाली थी, जिसे फॉन्टन प्रक्रिया कहते है। ''बच्चों में इसे ग्लेन प्रक्रिया के बाद किया जाता है, आमतौर पर जब वे 18 से 36 महीने के होते है। फॉन्टन प्रक्रिया, जो एक प्रकार की ओपन-हार्ट सर्जरी है, में लक्ष्य यह होता है कि रक्त शरीर के निचले हिस्से से सीधे फेफड़ों में चला जाए। इससे रक्त हृदय से गुजरे बिना ऑक्सीजन ले पाता है।''

हाइपोप्लास्टिक लेफ्ट हार्ट सिंड्रोम वाले शिशुओं में, शरीर के निचले हिस्से से कम ऑक्सीजन वाला रक्त उच्च ऑक्सीजन वाले रक्त के साथ मिलता है। फॉन्टन प्रक्रिया के बाद, निम्न-ऑक्सीजन वाला रक्त और उच्च-ऑक्सीजन वाला रक्त मिश्रित नहीं होता है। इससे हृदय शरीर में केवल उच्च ऑक्सीजन वाला रक्त पहुंचाता है, वह कहते है।

बच्चे हेमंत को रेफर करने के लिए रोटरी क्लब मुंबई घाटकोपर का और रोटरी क्लब मुंबई लेकर्स की रोटरी एन नताशा सेजपाल को पूरी प्रक्रिया का समन्वय करने के लिए धन्यवाद देते हुए, जटिया ने कहा, ''हम सभी को यह जानकर बहुत राहत मिली कि हमारे सभी प्रयासों को सफलता मिली है; सर्जरी सफल रही और बच्चा घर जा चुका है।''

सर्जरी की लागत - लगभग ₹2.75 लाख - को रोटरी क्लब बॉम्बे के वैश्विक अनुदान द्वारा, और ऑपरेशन से पूर्व होने वाली जाँचों एवं PPE किट इत्यादि के लिए ₹40,000 का अतिरिक्त खर्च माता-पिता द्वारा वहन किया गया।

जटिया कहते है कि रोटरी क्लब बॉम्बे ने मुंबई के अस्पतालों के साथ-साथ वापी, गुजरात, स्थित हरिया रोटरी अस्पताल में अब तक 270 बाल हृदय सर्जरियाँ प्रायोजित की है, जिसमें कुल ₹2.36 करोड़ खर्च किए गए है।■

चिंता से ग्रसित कोविड रोगियों की मदद

किरण ज़ेहरा

अधिकतर मामलों में, कोविड रोगियों को क्वॉरन्टीन के दौरान मानसिक पीड़ा और अवसाद का सामना करना पड़ता है और इसलिएमानसिक तनाव को दूर करने के लिए उन्हें मनोरंजन के साथ-साथ परामर्श की आवश्यकता होती है, रोटरी कलब बैंगलोर मान्यता, रो ई मंडल 3190,के पूर्व अध्यक्ष मोहम्मद तसलीलकहते है। प्रोजेक्ट *को-हील* के अंतर्गत, क्लब ने बेंगलुरु की प्रेसीडेंसी यूनिवर्सिटी और ग्लोबल्स नामक एक IT फर्म के साथ मिलकर राजीव गांधी मेडिकल अस्पताल में एक कोविड देखभाल केंद्र स्थापित किया है। ₹1.75 करोड़ की लागत वाले इस केंद्र की खासियत यह है कि इसमें प्रारंभिक देखभाल के लिए यहां भर्ती होने वाले लक्षणहीन और अल्प प्रभावित रोगियों के लिए एक मनोरंजन केंद्र है।

मोहम्मद तसलील, रोटरी क्लब बैंगलोर मान्याता के पूर्व अध्यक्ष, एक परिवार को किराना किट बाँटते हुए।

केंद्र कोविड रोगियों को समग्र उपचार प्रदान करता है। ''वायरस के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए क्वॉरन्टीन होना आवश्यक है, लेकिन कोविड से जुड़ी भ्रांतियों एवं कलंक के कारण रोगियों को मानसिक यातना नहीं झेलनी चाहिए। कुछ लोग सोचते है कि उनकी मृत्यु होने वाली है। इस सोच से उनका स्वास्थ्य लाभ प्रभावित होता है'', तसलील समझाते है। जब 70 ऑक्सीजन बेड, 15 सामान्य बेड, और 15 उच्च निर्भरता इकाइयों (HDU), BiPP मशीनों, ऑक्सीजन कन्सन्ट्रैटरों, डॉक्टरों के लिए एक लाउंज, प्रयोगशाला और फार्मेसी के साथ अत्याधुनिक सुविधाओं की व्यवस्था की जा रही थी, ''तब हमनें रोगियों के लिए एक मनोरंजन केंद्र स्थापित किया ताकि वे अलगाव की अवधि के दौरान खुद को व्यस्त रख सकें।''

डॉ शोभा, स्कूल ऑफ होम साइंस, महारानी विश्वविद्यालय की निदेशक और रोटरी क्लब बैंगलोर प्लेटिनम सिटी की सदस्य इस केंद्र में मरीजों को परामर्श दे रहे है। ''मनोवैज्ञानिक लक्षणों से पीड़ित रोगियों के लिए कोई जादुई उपचार या दवा नही होती है। यदि टेस्ट पाज़िटिव आता है, तो वे अनिश्चितताओंसे घिरने लगते है और इससे कई अन्य परेशानियाँ हो सकती है'', वह बताती है।

सागर, जो अपने 10 साल के बेटे निरुता के साथ केंद्र में भर्ती थे, कहते है, ''मुझे अपने बेटे की चिंता थी। मैं लगातार डॉक्टरों एव नर्सों से उसकी हालत की जानकरी लेता रहता था। मुझे ऑनलाइन परामर्श सत्रों, योग, श्वास और मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत करने वाले व्यायामों के बाद बेहतर महसूस हुआ। इन सत्रों से मुझे चिंता को दूर करने में मदद मिली। मैं अपने बेटे के साथ कैरम या शतरंज के खेल का भी आनंद ले सकता था... कुछ ऐसा जो मैंने लंबे समय से नहीं किया था। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद भी मेरा बेटा और मैं ये खेल एक साथ खेलते है,'' वह मुस्कुराते है।

एक सप्ताह से भी कम समय में स्थापित हुए इस केंद्र को बृहत बेंगलुरु महानगर पालिका द्वारा मान्यता प्राप्त हुई है जो इस सुविधा में दवाइयों एवं अन्य उपभोग्य सामग्रियों का खर्च वहन कर रहा है। जहां बेंगलुरू का सुहास जनरल एंड चैरिटेबल हॉस्पिटल सुविधा के संचालन की

देखरेख कर रहा है, वहीं रोटरी क्लब अपने ट्रस्ट के माध्यम से मरीजों एवं कर्मचारियों को भोजन उपलब्ध करा रहा है। ''हम सुनिश्चित करते है कि गैर-चिकित्सीय कर्मचारियों (हाउसकीपिंग और सिक्युरिटी) को भी वेतन का भुगतान किया जाए। केंद्र चिकित्सीय एवं गैर-चिकित्सीय कर्मचारियों को ठहरने की व्यवस्था भी प्रदान करता है'', तसलील कहते है। ऑक्सीजन प्रवाह प्रमापक और पाइपलाइन चौबीसों घंटे सेवा प्रदान करती है और जिन रोगियों की हालत गंभीर होने लगती है उन्हें उन्हें बड़े अस्पतालों में भेजा जाता है। बिस्तर की अनुपलब्धता के कारण जिन मरीजों को भर्ती नहीं किया जाता है,उनके घर ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर भेज दिया जाता है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने केंद्र का उद्घाटन किया था। कोविड टीकाकरण का पंजीकरण करने के लिए क्लब ने लोगों के लिए *www.healthdiaries.org* पोर्टल बनाया है। ■

क्लब द्वारा स्थापित कोविड केयर सेंटर में आरामदेह व्यायाम करते हुए कोविड रोगी।

नेत्रहीनों को डिजिटल-सेवी बनाना

टीम रोटरी न्यूज़

बैठी (बाएं से): परिमाला भट, संस्थापक स्नेहंकित हेल्पलाइन; केदार विदवान, अध्यक्ष, रोटरी क्लब थाना वेस्ट; डीजीई कैलाश जेठानी और जयंत जोशी, क्लब सचिव, लाभार्थियों के साथ।

रोटरी क्लब ठाणे पश्चिम, रो ई मंडल 3142, ने रोटरी क्लबों ठाणे ग्रीन सिटी, खारगर मिडटाउन और क्रीकसाइड, के साथ मिलकर ठाणे और मुंबई से 15 नेत्रहीनों के लिए ब्रेल मी उपकरण वितरित किये।

ब्रेल मी एक बहुभाषी डिजिटल उपकरण है जो दृष्टिबाधित लोगों को किताबों, फाइलों और नोट्स तक पहुंचने में मदद करता है। यह एक स्टैंड-अलोन के रूप में काम कर सकता है या इसे कंप्यूटर या स्मार्टफोन से जोड़ा जा सकता है।

डिवाइस 6-डॉट ब्रेल सेल, ब्लूटूथ और एक एसडी कार्ड सुविधा से लैस है। ''दृष्टिबाधित अब इस डिवाइस का उपयोग करके व्हाट्सएप या एसएमएस पर संदेश भेज सकते हैं। यह उन्हें टेक्स्ट फाइल और एक्सेल शीट साझा करने में भी मदद करता है'', साधना वाज़े, प्रोजेक्ट लीड और रोटरी क्लब ठाणे वेस्ट की पूर्व अध्यक्ष कहती हैं।

रोटरी क्लब ठाणे वेस्ट इस साल अपनी स्वर्ण जयंती मना रहा है और ''इस अवसर को चिह्नित करने के लिए हम इस डिवाइस को 50 लोगों को वितरित करने की योजना बना रहे हैं, वह कहती हैं, प्रत्येक डिवाइस की कीमत ₹30,000 है। नेत्रहीनों को सशक्त बनाने की दिशा में काम करने वाला एक गैर सरकारी संगठन स्नेहंकित क्लब को लाभार्थियों की पहचान करने में मदद कर रहा है। ■

रोटरी उत्तराखंड की मदद करेगी

टीम रोटरी न्यूज़

उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी के साथ चर्चा में रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता। राशि मेहता, RID महेश कोटबागी, PRID कमल संघवी, और पीडीजी गण विवेक तन्खा और हेमंत अरोड़ा; और डीजी अजय मदान भी चित्र में शामिल हैं।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पर्वतीय राज्य के युवाओं को स्वरोजगार उपलब्ध कराने में रोटरी की मदद मांगी है, ताकि इस तरह ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों और अन्य राज्यों में पलायन के रुझान को रोका जा सके। यह बात रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता को तब बताई गई जब उन्होंने एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए सीएम धामी से देहरादून स्थित अपने आवास पर मुलाकात की।

व्यापक चर्चा के दौरान धामी ने रोटरी से शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और जल संरक्षण में राज्य की मदद करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड में सीमावर्ती क्षेत्रों से पलायन को रोकना महत्वपूर्ण है क्योंकि इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की 'सीमा प्रहरियों' के रूप में विशेष भूमिका है। इस चर्चा में दूरदराज के गांवों को टेलीमेडिसिन सुविधाएं उपलब्ध कराने, ई-लर्निंग, लड़कियों के लिए मार्शल आर्ट प्रशिक्षण और साक्षरता अभियान जैसे क्षेत्रों को भी शामिल किया गया।

उपहार के रूप में गुलदस्ते को पेश करने के बजाय पौधे को बढ़ावा देने के लिए धामी की प्रशंसा करते हुए मेहता ने कहा कि रोटरी क्लब द्वारा उत्तराखंड में 10 हजार से अधिक पेड़ लगाए जाएंगे। उन्होंने सीएम को आश्वासन दिया, ''राज्य सरकार को सहयोग देने के लिए क्लबों द्वारा हर संभव प्रयास किए जाएंगे।''

मेहता के साथ राशि, रो ई निदेशक महेश कोटबागी, प्रिड कमल सांघवी, राज्यसभा सदस्य पीडीजी विवेक तन्खा, आईटीवी मीडिया नेटवर्क के संस्थापक-चेयरमैन कार्तिकेय शर्मा, डीजी अजय मदान, पीडीजी हेमंत के अरोड़ा, अरुण शर्मा, रवि लांगर और रोटेरियन राजीव अग्रवाल, सुनीता धर्मा, सविता मदान, पवित्रा अरोड़ा और सुशांत आहूजा भी मौजूद थे। ■

योगी आदित्यनाथ ने ''राष्ट्र निर्माण'' के लिए रोटरी की प्रशंसा की

रो ई अध्यक्ष मेहता ने मंत्रियों जय प्रताप सिंह (दाएं) और सतीश चंद्र द्विवेदी (बाएं से दूसरे) की उपस्थिति में यू पी के सीएम योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की; और अरविंद विक्रम चौधरी, IPP, रोटरी क्लब गोरखपुर भी चित्र में शामिल हैं।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ में रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता से मुलाकात के दौरान राष्ट्र निर्माण में रोटरी की सक्रिय भूमिका और सामाजिक प्रगति की दिशा में उसके योगदान की सराहना की। मेहता को सीएम ने सम्मानित किया और प्रदेश के आधिकारिक अतिथि का दर्जा दिया। बैठक के दौरान उन्होंने स्वास्थ्य, साक्षरता, जल और स्वच्छता जैसे क्षेत्रों में तेजी से विकास पर चर्चा की, जहां रोटरी भारत में सबसे अधिक आबादी वाले राज्य की सरकार के साथ काम कर सकती है।

बैठक के दौरान राज्य के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जय प्रताप सिंह, प्राथमिक शिक्षा राज्य मंत्री सतीश चंद्र द्विवेदी और रो ई मंडल 3120 के अंर्तगत, रोटरी क्लब गोरखपुर के तत्काल पूर्व अध्यक्ष, रोटेरियन अरविंद विक्रम चौधरी भी मौजूद थे।■

टोक्यो ओलंपिक में रोटेरियनों का जादू

टीम रोटरी न्यूज़

रोटेरियन वांग ची-लिन और उनके साथी ली चांग ने टोक्यो ओलंपिक में पुरुष युगल बैडमिंटन के फाइनल में चीन के ली जुन्हुई और लियू युचेन को हराकर स्वर्ण पदक जीता। वांग, रो ई मंडल 3521 के तहत, रोटरी क्लब यूनिटी ताइपे के सदस्य हैं। वह 1912 के स्टॉकहोम ओलंपिक में 100 मीटर फ्रीस्टाइलीतैराकी के लिए रोटरी क्लब होनोलूलू, हवाई, संयुक्त राज्य अमेरिका के ड्यूक कहानमोकू के बाद ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाले तीसरे रोटेरियन बन गए, और 1988 सियोल ओलंपिक में भाला फेंक के लिए फिनलैंड के लापुआ किविरिस्टी रोटरी क्लब से टैपियो कोरजस ने स्वर्ण पदक जीता था।

भारत में ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय हॉकी टीम के गोलकीपर रोटेरियन पीआर स्रीजेश खेल के अंतिम 50 सेकंड में दो पेनल्टी कॉर्नर बचाकर खेल के स्टार बने थे। वह रो ई मंडल 3201 के तहत, रोटरी क्लब किलक्कम्बलम के सदस्य हैं। यूएई स्थित भारतीय उद्यमी डॉ शमशीर वायलिल ने गोलकीपर के लिए ₹1 करोड़ के इनाम की घोषणा की है। ■

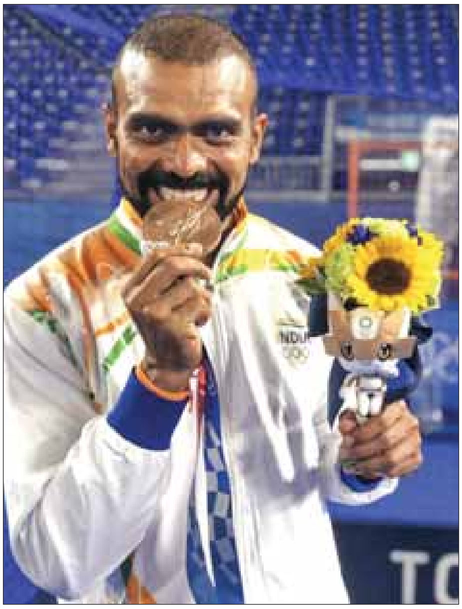

भारतीय हॉकी टीम के गोलकीपर पी आर श्रीजेश।

चेन्नई में एक अत्याधुनिक डायलिसिस सेंटर

डीआरएफसी एम अंबालावनन (दाएं से दूसरे), रोटरी क्लब चेन्नई कैपिटल के अध्यक्ष राजीव संपत और रोटेरियन विनोद सरावगी के साथ नए डायलिसिस सेंटर में डीजी जे श्रीधर (दाएं से पांचवां)।

गरीबों के लिए डायलिसिस सेवाओं को किफायती बनाने के उद्देश्य से रोटरी क्लब चेन्नई कैपिटल, रो ई मंडल 3232 ने मद्रस वेस्ट राउंड टेबल 10 और सत्यलोक चैरिटेबल ट्रस्ट के साथ मिलकर 3 करोड़ की लागत से चेन्नई के पोरूर में सत्यलोक चैरिटेबल ट्रस्ट डायलिसिस सेंटर की स्थापना की। जहां निजी अस्पतालों में डायलिसिस का खर्च ₹1000 से ₹1,500 प्रति सीटिंग के बीच हो सकता है, वहीं सेंटर इसे ₹375 प्रति सत्र की दर से प्रदान करेगा।

5,000 वर्ग फुट की यह बिल्डिंग अत्याधुनिक डायलिसिस उपकरणों से लैस है और इसका संचालन एवं और प्रबंधन तमिलनाडु किडनी रिसर्च (TANKER) फाउंडेशन के द्वारा किया जाएगा। 20 बिस्तरों वाला यह सेंटर प्रतिदिन 40 मरीजों को सेवा प्रदान करेगा।

डीजी जे श्रीधर, रो ई मंडल 3232 उद्घाटन में उपस्थित थे।■

आपके गवर्नर्स

ए आर रवींद्र भट

होटल व्यवसायी-बिल्डर, रोटरी क्लब सेंट्रल मैसूर, RID 3181

वह पुत्तूर को एक स्वच्छ शहर में परिवर्तित कर देंगे

उनके मंडल के 85 में से 70 से अधिक क्लबों ने भौतिक रूप से साप्ताहिक बैठकें पुनः प्रारम्भ कर दी हैं और 100 प्रतिशत सदस्यों का टीकाकरण हो चुका है। अगस्त के अंत तक, हम कम से कम 10 नए क्लब चार्टर करेंगे, और ''मुझे विश्वास है कि इस रोटरी वर्ष की समाप्ति से पहले 20 नए क्लब जुड़ जायेंगे। मैं अपने कार्यकाल में 1,400 नए सदस्यों को जोड़ कर इसकी कुल सदस्यता 4,000 तक ले जाने के लिए के प्रति आशान्वित हूं,'' रवींद्र भट का कहना है।

उनकी महत्वाकांक्षी योजना है, पुत्तूर को एक मेगा 'स्वच्छ पर्यावरण शहर' में परिवर्तित करना, जहां गीले, सूखे और विषैले कचरे को पृथक किया जाएगा और जैविक खाद बनाने के लिए उस कचरे का पुनर्नवीनीकरण किया जाएगा जिससे कृषि और अन्य उपयोगों के लिए कई टन खाद उपलब्ध हो सकेगी। पुत्तूर नगर पालिका के साथ हमने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं, जिन्होंने हमें मशीनरी लगाने और रीसाइक्लिंग प्रक्रिया शुरू करने के लिए दो एकड़ जमीन दी है। उनका कहना है कि इस पायलट प्रोजेक्ट (जीजी: ₹8.92 करोड़) में रोटरी के साथ स्थानीय निवासी कंधे से कन्धा मिला कर काम करते हुए दिखेंगे। इसे शुरू करने के बाद यहां कोई डंप यार्ड या कचरा भरण क्षेत्र (लैंडफिल साइट) नज़र नहीं आएगी।

उनकी एक और प्रिय परियोजना है सम्पूर्ण मंडल के कब्रिस्तानों का पुनर्निर्माण कर उनका स्वरुप निखारना। उनका कहना है कि डीडीएफ और ग्लोबल ग्रांट मिला कर उस राशि से 40 कब्रिस्तानों में मृतकों के परिजनों के लिए सुविधाएं विकसित की जाएंगी। एक अन्य मैचिंग ग्रांट परियोजना (1,25,000 डॉलर) के माध्यम से जेएसएस अस्पताल सहित मैसूरु के तीन प्रमुख अस्पतालों को चिकित्सा उपकरण और अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। कम से कम 50 प्रतिशत एन्स को रोटरी के साथ जोड़ने के लिए भट उनके लिए विशेष क्लब बनाने के लिए प्रयासरत हैं। चूंकि तालाबंदी के कारण स्कूल और कॉलेज बंद थे, मैं अभी भी रोटरैक्टर्स और इंटरेक्टर्स की संख्या के आंकड़े एकत्र कर रहा हूं। लेकिन कम से कम 50 नए रोटारक्ट क्लब अवश्य बनाए जाएंगे। टीआरएफ में दान देने का उनका लक्ष्य 500,000 डॉलर हैपूर्व में रोटरेक्टर रहे भट, 2002 में उनके होटल व्यवसायी-मित्र रोटेरियन एन पी विश्वनाथ के कहने पर रोटरी में सम्मिलित हुए थे।

पंकज शाह

इंजीनियर, रोटरी क्लब पुणे सरसबाग, RID 3131

सदस्यों को आकर्षित करने के लिए रोटरी एक्शन ग्रुप को बढ़ावा देना

पंकज शाह कहते हैं, रोटरी में सदस्यता बढ़ाने का और नए रोटेरियनों को सेवा गतिविधियों में संलग्न करने का एक तरीका है, विभिन्न एक्शन ग्रुप्स का प्रसार जिसे रोटरी इंटरनेशनल द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। ''हमें इन एक्शन ग्रुप्स के बारे में जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है जो विशिष्ट गतिविधियां जैसे ट्रेकिंग, साइक्लिंग और अन्य संयुक्त प्रयास करते हैं। उनके लक्ष्यों में 30 नए क्लब और 1,000 नए रोटेरियन शामिल हैं जिससे सदस्यता 4,700 से अधिक पहुँच जाएगी।'' सैटेलाइट क्लबों पर भी वह अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जो युवा पेशेवरों की आवश्यकताओं के अनुरूप पर्याप्त लचीले हैं।

महामारी के चलते वर्तमान में स्कूल और कॉलेज बंद हैं, मैं 500 से अधिक रोटरेक्टर्स की वृद्धि के साथ इस वर्ष 20 समुदाय-आधारित रोटरेक्ट क्लबों को चार्टर्ड करूंगा।

उनका एक महत्वपूर्ण क्षेत्र होगा जीजी और सीएसआर फंडिंग के सहयोग से 10-12 डायलिसिस केंद्र शुरू करना। हम आधुनिक डायलिसिस उपकरण उपलब्ध करा के बड़े अस्पतालों में रोटरी द्वारा पहले से मौजूद 10 केंद्रों का पुनर्निर्माण कर उनकी क्षमता में भी वृद्धि करेंगे, वे कहते हैं।

''ग्रामीण क्षेत्रों में चल रही 12 हैप्पी विलेज परियोजनाओं के पूरी हो जाने के बाद, हम सामुदायिक आकलन करेंगे और स्थानीय लोगों की जरूरतों के आधार पर, ग्राम परिवर्तन के लिए 10 हैप्पी विलेज और लिए जाएंगे,'' शाह बताते हैं। स्कूलों में छात्रों की संख्या बढ़ाने के उद्देश्य से मंडल के ग्रामीण क्षेत्रों में 25 हैप्पी स्कूल भी शुरू करेंगे। महामारी तो आती - जाती रहेगी, लेकिन रोटरी की सेवा परियोजनाएं गांवों में असर डाल रही हैं। उन्होंने अपना टीआरएफ लक्ष्य रखा है 2 मिलियन डॉलर। आगामी 10 वर्षों में पश्चिमी भारत में कुल सदस्यता दोगुनी हो जाएगी, उन्होंने भविष्यवाणी की। शाह 'समाज सेवा करने के लिए आत्म-प्रेरित' हुए थे, और 2009 में रोटरी में सम्मिलित हुए थे।

से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

संतोष प्रधान

एयर कंडीशनिंग, रोटरी क्लब उधना, RID 3060

फ़ज़ल महमूद

आर्किटेक्ट, रोटरी क्लब बैंगलोर मेट्रो, RID3190

गुजरात के शहरों, कस्बों में वनों का सृजन

हर एक, लाये एक, रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता की एक क्रांतिकारी अवधारणा है और इस EOBO अवधारणा ने मेरे मंडल में चमत्कार कर दिया है, संतोष प्रधान कहते हैं। सिर्फ जुलाई में, मंडल ने 500 नए सदस्य जोड़े हैं, और हमारे मंडल में 1,500 सदस्यों की शुद्ध वृद्धि होगी जो इस रोटरी वर्ष के अंत तक हमारी सदस्यता को लगभग 6,400 तक ले जाएगी । वह 5-6 नए क्लबों को चार्टर कर उनकी कुल संख्या 118 तक ले जायेंगे।

प्रधान ने पूरे गुजरात के शहरों और कस्बों में 5-7 शहरी वन का सृजन करने के लिए स्थानीय गैर सरकारी संगठनों के साथ करार किया है। सामाजिक वानिकी विकसित करने के लिए गुजरात की भौगोलिक स्थिति के अनुरूप मियावाकी अवधारणा को अनुकूलित किया जाएगा जो शहरों के प्रमुख स्थलचिह्न होंगे, वे कहते हैं। इसके लिए फंडिंग सदस्यों के सहयोग से होगी।

कम से कम 50,000 ग्रामीण महिलाओं को आजीविका के लिए सूक्ष्म-ऋण प्रदान कराने हेतु मंडल ने गुजरात सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। बालिकाओं के सशक्तिकरण के लिए पीडीजी दीपक अग्रवाल के नेतृत्व में प्रभावकारी परियोजनाएं शुरू की जाएंगी। रोटरेक्ट के मोर्चे पर, वह 250 नए रोटरेक्टर्स के साथ 15-20 नए क्लबों को जोड़ने के आश्वस्त है जिसके बाद 2,250 से अधिक सदस्यों के साथ क्लबों की कुल सख्या 75 होने जा रही हैं। उनका लक्ष्य है टीआरएफ के लिए 1.5 मिलियन डॉलर इकट्ठा करना।

हालाँकि रोटरेक्टर तो वह 1990 में ही बन गए थे, पर जब मैं गुजरात में यहां शिफ्ट हुआ तो मेरा रोटरी से संपर्क टूट गया था। ''एक ट्रेन यात्रा के दौरान, भूतपूर्व अध्यक्ष रोटेरियन धर्मेश काचीवाला ने मुझे इतना प्रभावित किया कि मैं 2008 में अपने होम क्लब में शामिल हो गया'', वह मुस्कुराते हैं।

महामारी में नूतन अवसरों की तलाश

एक और रोटरेक्टर हैं ये जो मंडल अध्यक्ष बने हैं। फ़ज़ल महमूद कहते हैं, ''महामारी से उत्पन्न चुनौतियों के बावजूद गांवों में अधिक से अधिक प्रभावशाली सेवा परियोजनाओं को हाथ में लेने के लिए क्लबों और मंडल की टीम को प्रोत्साहित करने की तैयारी कर रहे हैं।'' हाल ही में, ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए उन्होंने एक विशेष सैटेलाइट क्लब का गठन किया, हाशिए पर बैठे इस वर्ग के लिए रोटरी में शायद ऐसा पहला समूह। 25 नए क्लब बनाना और सदस्यता में 30 प्रतिशत की वृद्धि हासिल करना उनका लक्ष्य है।

प्रोजेक्ट जीरो हंगर, प्रवासी और वंचित परिवारों को किराने का सामान, भोजन के पैकेट और अन्य आवश्यक वस्तुएं रोज़ाना वितरित कर रहा है। महमूद कहते हैं, ''मंडल की प्रथम महिला के नेतृत्व में क्लबों की एन्स अपने घरों में खाना बनाती हैं और अस्पतालों में पहुंचाती हैं। *प्रोजेक्ट होसा बेलाकू* (नई रोशनी) के अंतर्गत, सामाजिक विकास के तहत प्रत्येक क्लब एक झुग्गी झोपड़ी इलाके में और नज़दीकी पुलिस स्टेशन में सभी आवश्यक नागरिक सुविधाएं मुहैया कराने की व्यवस्था करेगा।

एक और नवाचार, *प्रोजेक्ट सहयोग,* दो सिटी क्लब एक ग्रामीण क्लब के साथ साझेदारी करेंगे ताकि उस गांव में सात फोकस क्षेत्रों के तहत परियोजनाएं शुरू कर सकें। हमारे द्वारा निर्मित सभी सुविधाओं को बनाए रखने के लिए उस गांव में एक आरसीसी का गठन करेंगे । ऐसी प्रत्येक परियोजना के लिए मंडल अपने डीडीएफ से 1,000 डॉलर आवंटित करेगा। रोटारैक्ट के मोर्चे पर, वह डेटा एकत्र कर रहे है और लगभग 2,500 रोटारैक्टर्स को जोड़ने की उम्मीद रखते है। कई वैश्विक अनुदान परियोजनाएं विचाराधीन हैं और हम रोटरी डेज़ ऑफ़ सर्विस भी शुरू करने जा रहे हैं । टीआरएफ के लिए उन्होंने 1.25 मिलियन डॉलर का लक्ष्य रखा है। स्कूली बच्चों को प्रभावी संचार के लिए उन्हें अंग्रेजी भाषा सिखाने के लिए एक बड़े कार्यक्रम पर कार्य चल रहा है। 1979-88 तक रोटरेक्टर रहने के बाद 1993 में अपने सपनों को पंख देने के लिए उन्होंने रोटेरियन बनने का फैसला किया।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

अफ्रीका के परिवर्तन एजेंट

जेफ रूबी

फरवरी के अंतिम सप्ताह में यूगांडा के कंपाला में रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के नए शांति केंद्र के उद्घाटन सत्र के लिए 15 रोटरी शांति दूत मेकेरी विश्वविद्यालय में एकत्रित हुए। उनमें से शांति केंद्र के पहले दल ने 11 देशों का प्रतिनिधित्व किया और अंग्रेजी के अलावा लुगांडा, स्वाहिली और ज़ुलु सहित एक दर्जन अफ्रीकी भाषाओं मे बात की। रोटरी क्लब कंपाला नाल्या की सदस्य और मेकेरी यूनिवर्सिटी शांति केंद्र की मेजबान समन्वयक ऐनी नकुतु ने कहा, ''विविध पृष्ठभूमि से आने के बाद भी अफ्रीका में शांति की इच्छा साझा करने की वजह से ये लोग विविधता में एकता के प्रतीक है।''

40 वर्ष की औसत आयु में जब उन्हें इस कार्यक्रम में शामिल किया गया था, तब सभी शांति मित्र स्थापित पेशेवर थे जिनके पास शांति और विकास में न्यूनतम पांच वर्ष का अनुभव था। वे पहले से ही एक पहल पर कार्य करते हुए या शांति स्थापित करने वाले एक विचार के साथ मेकेरी विश्वविद्यालय - शांति और संघर्ष अध्ययन में एक प्रमाणित कार्यक्रम चलाने वाला स्थल - पहुंचे जो कार्यस्थल या समुदाय के भीतर शांति या सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देता है। शांति केंद्र के निदेशक हेलेन नंबलिरवा नकाबाला ने कहा, ये शांति मित्र शांति निर्माण के व्यावहारिक पक्ष में अधिक रुचि रखते है। सैद्धांतिक पहलुओं में अधिक रुचि रखने वाले हमारे नियमित विद्यार्थियों के मुकाबले, वे देखना चाहते है कि चीजें कैसे की जाती है। इसलिए ये शांति मित्र वास्तव में परिवर्तन के एजेंट के रूप में सामने आते है।

मेकेरी आने से पहले, शांति मित्रों ने दो सप्ताह के ऑनलाइन सत्र के साथ अपनी पढ़ाई शुरू की, जो शांति निर्माण, संघर्ष परिवर्तन और विकास में रोटरी के साल भर चलने वाले नए सर्टिफिकेट कार्यक्रम का पहला चरण है। (बैंकॉक में चुलालोंगकोर्न विश्वविद्यालय का शांति केंद्र, जो पहले तीन माह का प्रामाणिक कार्यक्रम चलाता था, ने भी इस नए मॉडल को अपनाया।) कंपाला में 10-सप्ताह के सत्र के बाद, वे अपनी सामाजिक परिवर्तन पहल को लागू करने के लिए घर लौटेंगे और अपने प्रशिक्षकों एवं साथी छात्रों के साथ समय-समय पर विचार-विमर्श करेंगे। कार्यक्रम को पूरा करने के लिए वे वर्ष 2022 की शुरुआत में मेकेरी लौटेंगे।

इस साल की शुरुआत में, जब वे कंपाला जाने की तैयारी कर रहे थे, तब *रोटरी* पत्रिका ने छह शांति मित्रों के साथ ज़ूम और व्हाट्सएप के माध्यम से बात की। यह बातचीत अफ्रीकी इतिहास और राजनीति का एक क्रैश कोर्स थी। वे एक प्रेरणा भी थे, जो उन संभावनाओं की एक झलक पेश कर रहे थे जो इन शांति मित्रों - और आगामी वर्षों में आने वाले शांति मित्रों - के सामने खड़ी थी जब वे मेकेरी में अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद उनके द्वारा सीखे गए ज्ञान को साझा करने के लिए पूरे महाद्वीप में प्रसारित होंगे।

पैशन्स रुसारे

पैशन्स रुसारे को पहली बार अपने मूल ज़िम्बाब्वे में जनजातिवाद का सामना तब करना पड़ा जब वह पहली कक्षा में थी। नदेबेले लोगों की वर्चस्वता वाले शहर, बुलावेयो, में रहने वाले शोना जनजाति का हिस्सा होने के नाते उनका परिवार स्थानीय भाषा के साथ-साथ पड़ोसी स्थानीय भाषा भी नहीं बोलता था। 32 साल की रुसारे याद करती है, ''मैंने कक्षा में एक प्रश्न का उत्तर दिया और दूसरे बच्चे हँसे और मेरा एक अपमानजनक नाम रख दिया। मैंने घर जाकर अपने माता-पिता से पूछा: क्या हमारे साथ कुछ गलत है? आप देख सकते है कि तनाव घर से आ रहा था, और बच्चे उसे स्कूल तक लेकर आ रहे थे।''

पच्चीस साल बाद, रुसारे हरारे स्थित एक समाचार पत्र *द पैट्रियट* की एक संपादक और एक वरिष्ठ राजनीतिक पत्रकार बनी। 2013 में, व्यावसायिक लेख लिखने के वर्षों बाद, उन्होंने अपना ध्यान कहीं ओर केंद्रित करना शुरू किया।

उन्होंने संघर्षों को कवर करना शुरू कर दिया चाहे वो 2014 और 2015 में लेसोथो और माली का राजनीतिक संकट हो, 2016 में युगांडा का दहशत भरा चुनाव हो या फिर 2017 में उनके मूल स्थान जिम्बाब्वे का तख्तापलट हो, अक्सर वह वर्तमान स्थिति की व्याख्या करने के लिए दशकों पीछे जाकर अंतर्निहित मुद्दों का पता लगाती थी।

''लोग समझदारी भरे निर्णय नहीं ले रहे थे'', रुसारे कहती है। जानकारी का अभाव लोगों को हताश कर सकता है और ऐसे लोगों के दिमाग से आसानी से खेला जा सकता है। जैसा कि उन्होंने निष्पक्ष तरीके से लिखा है, उन्होंने अपनी कहानियों में उपलब्ध जानकारी और सार्वजनिक नीति के बीच प्रत्यक्ष संबंध देखना शुरू कर दिया। रुसारे कहती है, लेसोथो में बोत्सवाना स्थित सदर्न अफ्रीकन डेवलपमेंट कम्यूनिटी नामक एक अंतर सरकारी संगठन द्वारा आयोजित एक मध्यस्थता से उस प्रस्ताव का जन्म हुआ जो उस कहानी से प्रभावित था जिसे उन्होंने *द पैट्रियट* के लिए लिखा था। ''मुझे लगता है कि मैंने वास्तव में दुनिया में सकारात्मक बदलाव लाई हूँ, वह कहती है। उन्हें लेसोथो में स्थायी शांति देखने को मिली है।''

2019 में, शांति सौदों के महत्वपूर्ण पहलुओं को सीखने की उम्मीद में, उन्होंने शांति, नेतृत्व

और संघर्ष समाधान में मास्टर डिग्री प्राप्त की। रुसारे कहती है, ''मैंने एक अधिक न्यायपूर्ण एवं शांतिपूर्ण दुनिया बनाने हेतु मीडिया का उपयोग करने का स्वयं से वादा किया है।''

जब जिम्बाब्वे में 2020 से पुनर्निर्धारित किए गए विशेष चुनाव होने वाले थे, तो रुसारे ने वहाँ ठीक वैसा ही आदिवासी संघर्ष देखा जैसा उन्होंने अपने बचपन में देखा था। अपनी सामाजिक परिवर्तन पहल के माध्यम से, रुसारे जिम्बाब्वे में पत्रकारिता के दृष्टिकोण को बदलना चाहती है। ''हमें 'जो दिखता है, वहीं बिकता है' इस विचार से छुटकारा पाना होगा और शांति अभ्यासियों के रूप में काम करना होगा'', वह कहती है। एक सकारात्मक शांति गाथा लोगों को एक समाचार पत्र खरीदने के लिए प्रेरित कर सकती है यदि उसमें पर्याप्त रूप से मानव-हित निहित हो। उनकी 20 पत्रकारों को संघर्ष रिपोर्टिंग की कला में प्रशिक्षित करने की योजना है, नडेबेले और शोना पत्रकारों का एक साथ कार्य करने वाला एक समूह, जो एक साथ कार्य करता हो और एक दूसरे का हौसला बढ़ाता हो ताकि वे बाहर जाकर अपने बीच लोगों में पत्रकारिता को जन्म दे सकें और देश दुनिया में इस पहुँच को फैला सकें।

रुसारे 8 साल और 3 साल के अपने बच्चों के लिए कहती है, ''मैं नहीं चाहती कि मेरे बच्चे उस दौर से गुजरें जिससे मैं गुजरी हूँ। मैं चाहती हूँ कि वे ऐसे माहौल में बड़े हों जहाँ सभी लोग अपने जातीय समूह की परवाह किए बिना एक-दूसरे से प्यार करते हो।'' उन्हें पता चल जाएगा कि हम सब विविध होते हुए भी एक है।

पीटर पाल

आघात के बारे में बात करना पीटर पाल के व्यक्तित्व में नहीं है। जब वह अपने दुखदायी अनुभवों - 1989 में अपने मूल सूडान में गृहयुद्ध से भागना, प्रियजनों और दोस्तों को मरते हुए देखना, जिंदा रहने के अलावा किसी और लक्ष्य के बिना इथियोपिया में एक शरणार्थी शिविर में 11 साल बिताना - की बात करते है, तो वह यह आश्चर्यजनक रूप से स्पष्टवादिता के साथ ऐसा करते है। ''आप इसके माध्यम से जीना सीखते है ताकि आप मजबूत बन सकें'', वह कहते है।

शिविर छोड़कर ऑस्ट्रेलिया जाते समय जब पाल ने आपको 2001 में उस दिन के बारे में बताया तब आपने सोचा होगा कि वह कभी पीछे मुड़कर नहीं देखेंगे। लेकिन आप गलत है। ''मैं दक्षिण सूडान को स्थिरता प्रदान करना चाहता हूँ और वहाँ के लोगों के जीवन में सुधार लाना चाहता हूँ, 52 वर्षीय पाल कहते है। अगर मुझे मदद करने का अवसर मिले, तो मैं करूंगा। क्योंकि मैं उनमें से ही एक हूँ।''

दक्षिणपूर्वी ऑस्ट्रेलिया में विक्टोरियन चुनाव आयोग के लिए एक सामुदायिक शिक्षक के रूप में कार्यरत, पाल को शांति निर्माण और कूटनीति में प्रशिक्षण प्राप्त है। ''अच्छी सरकार के लिए, सही नेतृत्व चुनने के लिए और लोकतंत्र को जीवित रखने के लिए चुनावी प्रक्रिया महत्वपूर्ण है'', वह कहते है। लोगों को इस बात पर अंतिम निर्णय लेने का अधिकार है कि उनके लिए क्या सही है। जब उन्होंने रोटरी शांति फेलोशिप के बारे में सुना तो उन्होंने वैश्विक स्तर पर अपने कौशल का उपयोग करने के अवसर को पहचाना - और इसे लगभग 8,000 मील दूर अपने देश वापस ले जाने के बारे में ठाना।

दक्षिण सूडान की 2017 की यात्रा पर, पाल यह जानकर हैरान हुए कि पूर्व में जो ग्रामीण क्षेत्र स्वस्थ थे उन्हें आवश्यक स्वास्थ्य सुविधाओं एवं शैक्षिक अवसरों के बिना ही शहरीकृत कर दिया गया था। छोटे शहरों को सरकार ने पूरी तरह से उपेक्षित कर दिया था। वह शांति को बढ़ावा देकर इस उपेक्षा का सामना करने की कल्पना करते है - न केवल युद्ध और आदिवासी घुसपैठ की अनुपस्थिति, बल्कि दिन-प्रतिदिन कि स्थिरता जहाँ स्वास्थ्य देखभाल, भोजन और पानी जैसी आवश्यक सेवाएं उपलब्ध हो। पाल कहते है, ''इन चीजों के बिना लोग हमेशा आपस में ही लड़ेंगे। जब इस तरह की शांति होती है, केवल तब ही आपको शिक्षा के बीज बोने का अवसर मिलता है।''

अपनी सामाजिक परिवर्तन पहल के हिस्से के रूप में, वैकल्पिक विवाद समाधान का पता लगाने के लिए पाल पेशेवर शांति निर्माताओं के साथ जुड़ने की योजना बना रहे है। दक्षिण सूडान के निरंतर संकट से सर्वाधिक पीड़ित: माताओं और बच्चों - का सम्मान बहाल करने की आवश्यकता पर विशेष ध्यान दिया गया। ''अफ्रीका में अज्ञानता उन्हें अमानवीय बना रही है'', पाल कहते है। ''महिलाएं लगातार उन बच्चों को जन्म देती है जिनका वास्तव में विकास नहीं हो पाता। और चूंकि वे राजनीति का हिस्सा नहीं होती,

इसलिए एक अंधाधुंध युद्ध में लोगों की मृत्यु होने पर वे सर्वाधिक पीड़ित होती है।''

पाल के इन सभी अनुभवों के बावजूद वह आशान्वित है। और क्यों न हो? बीस साल पहले, वह अफ्रीका के एक हिंसक गृहयुद्ध से बच गए थे, और अब वह एक शांति निर्माण मिशन पर लौट आए है। ''अगर हम आशावादी नहीं रहते है, तो हम सभी समाज की बेहतरी के लिए लागू किए जा सकने वाले विकल्पों की तलाश करने के बजाय अपने पास मौजूद अवसरों पर ध्यान केंद्रित करने में ही फंसकर रह जाएंगे। और यह बेहतरी केवल दक्षिण सूडान के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण अफ्रीका के लिए होगी।''

ज्यू मुंडे

दक्षिणी अफ्रीका का एक लोकतांत्रिक देश, जाम्बिया, महिलाओं के अधिकारों पर अपने रिकॉर्ड के लिए नहीं जाना जाता है। ज्यू मुंडे बताते है कि देश में गहन रूप से अंतर्निहित पितृसत्तात्मक मूल्यों ने पारंपरिक रूप से महिलाओं को कुछ हिंसक और कुछ व्यवस्थित तरीकों से अधीन बनाया है। उनका कहना है कि जाम्बिया के समाज में लैंगिक भेदभाव रच बस गया है और इसी के चलते चुनाव के समय महिलाओं की आवाज सुनने को नहीं मिलती।

''चुनावी प्रक्रिया में महिलाओं को भागीदारी का उचित हिस्सा नहीं मिला है'', जाम्बिया के चुनाव आयोग के शांति और संघर्ष प्रबंधक, 50 वर्षीय मुंडे कहते है। ''और अगर महिलाएं राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल नहीं होंगी, तो उनकी शिकायतें बढ़ती रहेंगी। अब समय आ गया है कि महिलाएं राजनीतिक रूप से अपने लिए कदम उठाएं।''

ज़ाम्बिया के हालिया चुनाव हिंसा और धमकी से ग्रसित हुए जिससे मुंडे का दिल टूट गया है। लुसाका के मूल निवासी इस व्यक्ति ने अपना लगभग आधा जीवन जाम्बिया सेंटर फॉर इंटर-पार्टी डायलॉग (ZCID) में सलाहकार रहते हुआ गुजारा है; लुसाका स्थित इस NGO के साथ काम करते हुए, वह स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने हेतु एक बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए समर्पित है चाहे वह राजनेताओं के साथ मिलकर उन्हें लिंग असंतुलन के प्रति संवेदनशील बनाना हो या चुनावी प्रक्रिया में संघर्ष का प्रबंधन करने के लिए लोगों को प्रशिक्षण देना हो। दो दशकों के बाद, ZCID के कई कानूनी

फ़िकिरी नोज़ॉयसेंग

कैथरीन बैन ओमुगिशा

शांति साथियों ने कंपाला की घनी आबादी वाली झुग्गियों और दक्षिण सूडान की युगांडा सीमा के पास बीड़ी बीड़ी शरणार्थी बस्ती का दौरा किया।

पॉल मुशाहो

पैशन्स रूसारे

सुधार प्रस्ताव संसद द्वारा कानून के रूप में पारित किए है।

लेकिन महिलाओं को राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल करना मुंडे के मिशन का ही हिस्सा है। वह युवा पीढ़ी को भी अपने साथ जोड़ना चाहते है। राजनीति मुख्य रूप से जाम्बिया में बूढ़े लोगों के लिए है, मनोविज्ञान और शांति एवं संघर्ष अध्ययन में डिग्री धारी मुंडे कहते है। बेरोजगार युवा हिंसा को अंजाम देने वाले एवं उससे पीड़ित दोनों होते है। उन्हें व्यस्त रखने के लिए, ZCID सोशल मीडिया पहुँच और युवा-उन्मुख सामुदायिक रेडियो स्टेशनों पर ध्यान केंद्रित करता है; यह युवाओं के कौशल विकास में भी मदद करता है ताकि उन्हें एक उत्तम करियर तलाशने में मदद मिल सकें। ''यदि आप बदलाव लाना चाहते है, तो लोगों को इस बात का एहसास दिलाए कि उनके पास कुछ करने का अधिकार है'', मुंडे कहते है।

यदि उनकी शांति फैलोशिप के दौरान सब कुछ योजनाबद्ध तरीके से होता है, तो मुंडे ZCID को एक वैधानिक निकाय में परिवर्तित करने में मदद करने का ज्ञान हासिल करना चाहते है: एक स्थायी शांति संरचना जो जाम्बिया की राजनीति में संवाद और मध्यस्थता के लिए एक आधिकारिक मंच प्रदान करती है। मुंडे कहते है, ''मैंने राजनेताओं और युवाओं को अभिव्यक्ति के अपने अधिकारों के प्रयोग पर बात करते हुए सुना। यह हमें बताता है कि हम जो करते है उसका लोगों पर प्रभाव पड़ता है। कोई भी जाम्बियों की तब तक मदद नहीं करेगा जब तक कि वे स्वयं की मदद नहीं करते।''

पॉल मुशाहो

दुनिया भर में 11,000 से अधिक रोटरेक्ट क्लब है; उनमें से एक अफ्रीका की शरणार्थी बस्ती में है। 2016 में नकीवाले - दक्षिण-पश्चिम युगांडा का एक विशाल ग्रामीण शिविर जहाँ लगभग 150,000 लोग कोलकाता के जितने क्षेत्र में लगभग 75 गांवों में रहते है - में स्थापित इस क्लब में आधा दर्जन अफ्रीकी देशों के सदस्य है। क्लब के सह-संस्थापक पॉल मुशाहो कहते है, ''नकीवाले एक मिनी-संयुक्त राष्ट्र की तरह है। युद्ध के कारण लोगों को अपने घरों से भागना पड़ा और यहाँ तक आने में उन्होंने आघात का सामना किया।''

2016 में, व्यावसायिक सूचना प्रणाली और कंप्यूटर इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त छात्र मुशाहो, माई-माई सेना समूह से मौत की धमकी मिलने के बाद अपने मूल देश, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, से भाग गए। नकीवाले पहुंचने के बाद मुशाहो ने शरणार्थियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के अवसरों को देखा। उनकी दो शुरुआती परियोजनाओं में एक धन-हस्तांतरण सेवा और शहद बेचने के लिए एक मधुमक्खी पालन व्यवसाय शामिल था। कंपाला में उस दूसरी परियोजना ने रोटेरियनों को आकर्षित किया।

जल्द ही अमेरिकी शरणार्थी समिति (जिसे आज अलाइट नाम से जाना जाता है) और युगांडा एवं मिनेसोटा के रोटरी क्लबों की सहायता से मुशाहो ने नकीवाले में अपना स्वयं का रोटरेक्ट क्लब शुरू किया। इसके सदस्यों ने खेती और मिस्त्री गिरी के कौशल सिखाए, पेड़ लगाए, एक महिला सामुदायिक केंद्र की स्थापना की और उन लोगों को कंबल और गद्दे वितरित किए जो अनाथ बच्चों को पाल रहे है। मुशाहो कहते हैं, मैं उनसे कहता हूँ: ''समुदाय में आपके द्वारा किए गए सभी कार्यों के लिए हमने आपको केवल प्रशंसा का एक प्रतीक दिया है।''

29 वर्ष के करिश्माई व्यक्ति मुशाहो में मदद करने के तरीके खोजने की अलौकिक क्षमता है। जब उन्होंने देखा कि शिविर की बुजुर्ग आबादी खुद को अलग-थलग महसूस कर रही है, तो उन्होंने दोपहर के भोजन का आयोजन किया जहाँ वे पूर्व राजनयिकों, इंजीनियरों, शिक्षकों और डॉक्टरों के रूप में अपने अनुभव साझा कर सकते थे। जब उन्होंने देखा कि विभिन्न देशों के युवा शरणार्थी बातचीत नहीं कर रहे है तो उन्होंने एक सॉकर टूर्नामेंट आयोजित करने में मदद की। हाल ही में मुशाहो की टीम ने नकीवाले में कोविड-19 के प्रसार को कम करने के लिए 14,000 मास्क और 8,000 साबुन बनाकर वितरित किए। मुशाहो कहते है, ''मैं उन लोगों को देखता हूँ जो उसे पाकर खुश है जो उन्हें मिलना चाहिए। हम उन लोगों में आशा पैदा कर रहे है जिन्होंने अपनी आशा खो दी है।''

2018 में, मुशाहो को नैरोबी में संयुक्त राष्ट्र अफ्रीका मुख्यालय में आमंत्रित किया गया था, जहाँ उन्हें छह रोटरी पीपल ऑफ़ एक्शन: यंग इनोवेटर्स में से एक के रूप में सम्मानित किया गया था। ''हमारे

ज्यू मुंडे (दाएं), शांति साथियों के साथ कंपाला स्लमस में।

शरणार्थी समुदाय ने महसूस किया कि हमारी स्थानीय चुनौतियों को स्थानीय समाधान की आवश्यकता है, उन्होंने अपने भाषण में कहा। हम याचक नहीं हैं; हम परिवर्तन और प्रेरणा की पीढ़ी है।''

मुशाहो को मेकेरी में नकीवाले के अपने वातावरण का प्रतिबिंब दिखता है, जहाँ वह ऐसे अभिनव, बहुसांस्कृतिक लोगों से घिरे हुए थे जिनके पास विचारों और ऊर्जा की कोई कमी नहीं थी, वे सभी उन अड़चनों को हटाने के तरीकों की तलाश कर रहे थे जो शांति को बढ़ावा देने में बाधा डालते थे। मुशाहो कहते है, ''मैं शिविर में जो कर रहा हूँ उसके साथ यह फेलोशिप काफी हद तक मेल खाती है। जब मैं वापस जाऊंगा तो मुझे पता होगा कि विभिन्न समुदायों में उनके मानदंडों और विश्वासों के आधार पर विभिन्न चुनौतियों से कैसे निपटा जाए। मेरे सपने और उम्मीदें बढ़ गई है।''

कैथरीन बैन-ओमुगिशा

कैथरीन बैन-ओमुगिशा कहती है, ''अगर लोग शांत नहीं रहेंगे, तो किसी को कुछ भी हासिल नहीं होगा।'' इस मामले में, 45 वर्षीय कंपाला की यह वकील अपनी कानूनी विशेषता की बात कर रही है - संघर्ष शमन और पारिवारिक मसलों में उचित विवाद समाधान - परंतु शायद वह अपने व्यक्तिगत मार्ग के बारे में भी बात कर रही होंगी।

अपने शांतचित्त आचरण और व्यावहारिक दृष्टिकोण के साथ, बैन-ओमुगिशा युगांडा में कानून की पुरुष-प्रधान दुनिया से एक मजिस्ट्रेट, एक उपदेशक, मिनिस्ट्री ऑफ जस्टिस एंड कान्स्टिट्यूशनल अफेर्स में तकनीकी सलाहकार के रूप से सेवा देते हुए आगे बढ़ी, और वर्तमान में वह कंपाला स्थित अपनी स्वयं की परामर्श फर्म में एक निजी व्यवसायी के रूप में कार्यरत है।

इन सबके बीच, उनका दृष्टिकोण एक ही रहा है: संयम बनाए रखें। सुनें, दूसरों को प्रोत्साहित करें और समाधान खोजें। चीजों को करने के नए तरीके तलाशते रहे। इसे आज़माएं। अगर यह काम करता है, तो इसका उपयोग करें। वर्ष 2000 में, दक्षिणी युगांडा में मसाका मुख्य मजिस्ट्रेट कोर्ट में एक मजिस्ट्रेट के रूप में सेवा करते हुए बैन-ओमुगिशा चेन लिंक्ड इनिशिएटिव नामक एक प्रायोगिक कार्यक्रम में शामिल हो गई; आपराधिक न्याय तक पहुंच बढ़ाने के लिए इसने पुलिस, अभोयोक्ताओं, जेलों, परिवीक्षा अधिकारियों, कल्याण एजेंसियों और न्यायपालिका के बीच सहयोग को प्रोत्साहित किया। यह कार्यक्रम इतना सफल हुआ कि इसे पूरे देश में लागू किया गया।

अब वह उम्मीद कर रही है कि उनकी फेलोशिप उन्हें एक बड़े पैमाने पर सहयोग की भावना को लागू करने में सक्षम बनाएगी। इस समय युगांडा में हम विधि नियमों के सम्मान, मानवाधिकारों के सम्मान और भ्रष्टाचार के मुद्दों से निपट रहे है, बैन ओमुगिशा कहती है। उनकी प्रमुख चिंता घरेलू हिंसा है जो अनेक कारकों के संयोजन से उत्पन्न होने वाली एक चालू समस्या है। वे कारक है: सांस्कृतिक और लिंग पक्षपात, आर्थिक कठिनाइयां और घरेलू हिंसा के कारणों के बारे में जागरूकता की कमी। घरेलू हिंसा भड़काने वाले कारकों और इसके प्रभावों के साथ-साथ इसके कानूनी और नीतिगत ढांचे के बारे में सामुदायिक नेतृत्वकर्ताओं को शिक्षित करके वह इस जुर्म के होने के बाद इसे संबोधित करने के बजाय इसकी रोकथाम पर ध्यान केंद्रित करने की उम्मीद करती है।

उबंटू नामक एक दक्षिणी अफ्रीकी धारणा यह कहती है, ''मैं हूं क्योंकि आप हैं।'' यह हमें याद दिलाता है कि कोई भी व्यक्ति अकेला नहीं जी सकता। बैन-ओमुगिशा कहती है कि इस फेलोशिप ने उन्हें उस अवधारणा के मूल्य को एक घरेलू शांति दृष्टिकोण के रूप में फिर से खोजने में मदद की है और वह इसे लागू करने की योजना बना रही है। ''मैं अकेले युगांडा की दिशा नहीं बदल सकती'', वह कहती है। ''लेकिन मानवाधिकारों को लेकर आम नागरिकों के दृष्टिकोण को बदलने के लिए मैं जो भी हस्तक्षेप करती हूँ, वह एक बढ़िया योगदान है। अगर हमारे पास ऐसा करने वाले बहुत से लोग मौजूद हो, तो हम महत्वपूर्ण बदलाव ला सकते है।''

फ़िकिरी नोज़ॉयसेंगा

बड़े होने के दौरान जब भी फिकिरी नोजोयसेंगा बर्तन धोते थे तो उनके दोस्त उनका मजाक उड़ाते थे:

एक नए शांति केंद्र का उपहार

अप्रैल में जहाँ मेकेरी विश्वविद्यालय के शांति केंद्र ने शांति मित्रों के उद्घाटन वर्ग की मेजबानी की, वहीं रोटरी संस्थान ने घोषणा की कि ओटो और फ्रैन वाल्टर फाउंडेशन ने मध्य पूर्व या उत्तरी अफ्रीका में एक रोटरी शांति केंद्र शुरू करने के लिए 15.5 मिलियन डॉलर देने का वादा किया है।

''रोटरी ने लंबे समय से यह देखा है कि हम दुनिया के उस क्षेत्र में एक ठोस योगदान कैसे दे सकते है जहाँ शांति का तत्व इतना मायावी लग रहा हो'', 2020-21 रोटरी संस्थान न्यासी अध्यक्ष के आर रवींद्रन ने कहा। ओटो और फ्रैन वाल्टर फाउंडेशन की अपार उदारता के कारण ''अब यह अवसर हमारे पास आ गया है। हम एक ऐसा केंद्र बनाने के अवसर का पूरा फायदा उठाएंगे जहाँ हम अपने शांति साथियों को उनकी भावना को उड़ान देने हेतु प्रेरित कर सकें और उन्हें ऐसी कार्यवाही का समर्थन करने में सक्षम बना सकें जो शांति और सद्भावना को बढ़ावा देती हो।''

2024 में रोटरी संस्थान ओटो और फ्रैन वाल्टर रोटरी शांति केंद्र की मेजबानी के लिए एक सहयोगी शैक्षणिक संस्थान का चयन करेगा और 2026 की शुरुआत में वहाँ पर प्रथम रोटरी शांति मित्रों के अध्ययन शुरू करने की उम्मीद है। यह नया केंद्र एक पेशेवर विकास प्रामाणिक कार्यक्रम की पेशकश करेगा जो इस क्षेत्र में शांति निर्माण और विकास के मुद्दों पर केंद्रित होगा। बूथबे हार्बर, मेन, स्थित वाल्टर फाउंडेशन का यह योगदान केंद्र की स्टार्ट-अप लागत और परिचालन व्यय के साथ-साथ एक अक्षय निधि का निधीयन करेगा जो हर साल 40 विद्यार्थियों को स्थायी रूप से शांति फैलोशिप प्रदान करेगी।

ओटो वाल्टर का जन्म 1907 में जर्मनी में हुआ था और उन्होंने एक वकील के रूप में काम किया। नाजी सरकार द्वारा यहूदी पेशेवरों को उनकी नौकरी से बाहर करने वाले कानूनों को लागू किए जाने के बाद वाल्टर को बर्खास्त कर दिया गया था। वह 1936 में संयुक्त राज्य अमेरिका में आकर न्यूयॉर्क में बस गए। चूंकि उनके नए घर में उनकी कानून की डिग्री को मान्यता नहीं मिली इसलिए वाल्टर ने एक प्रमाणित सार्वजनिक लेखाकार का लाइसेंस प्राप्त किया और एक लेखा फर्म शुरू की।

अपने व्यवसाय में विभिन्न कानूनी मुद्दों का सामना करते हुए वाल्टर ने न्यूयॉर्क लॉ स्कूल में संध्या कक्षाओं में भाग लेना शुरू किया जहाँ से 1954 में उन्होंने एक JD के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की। अगले वर्ष उन्होंने अपनी पत्नी, फ्रांसेस डूनन वाल्टर के समर्थन से एक कानूनी फर्म शुरू की जिसने बाद में विकसित होकर 40 वकीलों को रोजगार दिया। वह 1971 में रोटरी क्लब न्यूयॉर्क के सदस्य बने।

बाद में ओटो और फ्रैन ने अपनी परोपकारी संस्था पर ध्यान केंद्रित किया और उनके द्वारा वित्त पोषित किए जाने वाले अनुदान में वे व्यक्तिगत रूप से शामिल हो गए। 2003 में वाल्टर की मृत्यु के बाद उनके एक कानून सहयोगी और मित्र, फ्रैंक हेलमैन, उनकी संस्था के अध्यक्ष और निदेशक बने। वह और उनकी पत्नी, मार्था ''मार्टी'' हेलमैन, इस संस्था की वर्तमान अध्यक्ष, ने रोटरी संस्थान को 15.5 मिलियन डॉलर का उपहार देकर मदद की। हेल्मन्स रोटरी क्लब बूथबे हार्बर के सदस्य है।

''संघर्ष से जूझ रहे दुनिया के एक हिस्से, मध्य पूर्व, में रोटरी शांति केंद्र स्थापित करके ओटो और फ्रैन एवं उनकी विरासत को सँजोय रखने का और कोई बेहतर तरीका नहीं हो सकता'', मार्टी हेलमैन कहती है, जो रोटरी संस्थान के शांति केंद्रों की प्रमुख उपहार पहल समिति की अध्यक्ष के रूप में भी सेवारत है। ''वाल्टर संस्थान एक छोटा पारिवारिक संस्थान है। विश्व स्तरीय शांति केंद्र बनाने के लिए हमें रोटरी की साझेदारी की आवश्यकता थी।''

रायन हाईलैंड

तुम बर्तन क्यों साफ कर रहे हो? यह महिलाओं का काम है। वह केवल अपने कंधे उचकाकर रह जाते थे। उनके घर में, काम लड़कियों और लड़कों दोनों के लिए होते थे, ठीक वैसे ही जैसे उनके पिता और सौतेली माँ खाना पकाने और अन्य घरेलू कार्यों को एक साथ करते थे। ''यह सामान्य नहीं था'', नोजोइसेंगा कहते है। दूसरे घरों की तुलना में मेरे घर में चीजें बहुत अलग थी। यह दूसरे तरीके से भी अलग था: बहुसंख्यक हुतु समूह के एक सदस्य उनके पिता और तुत्सी समुदाय की उनकी सौतेली माँ की शादी का खंडन कर दिया गया था। उनका बेटा कहता है, उन्होंने फिर भी यह दिखाने के लिए शादी की कि इसमें कोई समस्या नहीं है।

बुरुंडी जैसे कट्टर पितृसत्तात्मक देश में, उनके परिवार के विद्रोही उदाहरण ने एक बड़ी छाप छोड़ी। बुरुंडी के तीन प्रांतों में लिंग-आधारित हिंसा के खिलाफ काम करने वाले बुजुंबुरा-आधारित एक युवा गठबंधन, सेमेरेरा, के संस्थापक और कार्यकारी निदेशक, 36 वर्षीय नोजोइसेंगा कहते है, ''मैं आज जो कुछ भी हूँ अपने पिता और सौतेली माँ की परवरिश की वजह से हूँ। मेरे समुदाय की महिलाओं को हमारी बुरुंडी संस्कृति से जुड़ी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता था जिसके अनुसार महिलाओं को पुरुषों से कम समझा जाता था, वह कहते है। इसलिए मैं महिलाओं के अधिकारों के लिए एक वकील बनना चाहता था।''

नोज़ोयसेंगा ने एक अस्थिर बचपन जिया जिसमें बुरुंडी और डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (जहाँ वह पांच साल तक रहे) के गृहयुद्ध शामिल थे, उन्होंने कानून की पढ़ाई की और महिला सशक्तिकरण संगठनों के लिए स्वयंसेवा देना शुरू किया। कुक समय पश्चात ही वह सामुदायिक संगठनकर्ता बन गए। स्पार्क माइक्रोग्रांट्स के माध्यम से उन्होंने बुरुंडी के दो दर्जन से अधिक गांवों के लगभग 3,000 परिवारों को सशक्त बनाने वाले

कार्यक्रमों का नेतृत्व किया। सेमेरारा के साथ 14 सदस्यों की एक टीम ने सामाजिक आर्थिक पहल, नेतृत्व सशक्तिकरण और दुर्व्यवहार एवं भेदभाव के शिकार लोगों को नि:शुल्क कानूनी सहायता प्रदान करके 8,200 से अधिक महिलाओं और लड़कियों की सहायता की है।

नोज़ोयसेंगा परिवर्तन लाने के एक और महत्वपूर्ण पहलू - लैंगिक असमानताओं पर पुरुषों को शिक्षित करना - की अनदेखी नहीं करते। हम सभी लोगों को सम्मान के साथ जीने और अपने समुदायों के विकास में योगदान करने का अवसर दिए बिना शांति के बारे में बात नहीं कर सकते, वह कहते है। ''हम इस समस्या का हिस्सा है, इसलिए हमें समाधान का हिस्सा भी'' बनना होगा।

अपनी रोटरी फेलोशिप को पूरा करने के बाद, नोजोइसेंगा की अपने काम को बुरुंडी के दो और प्रांतों में विस्तारित करने की योजना है जहाँ वह शांतिपूर्ण सहवास, संबंध और मानवाधिकारों के अभियानों के माध्यम से अन्य युवाओं का मार्गदर्शन करेंगे। ''मेरे पिता ने मुझे सहिष्णुता और स्वीकृति के साथ बिना किसी भेदभाव के दूसरों का सम्मान करना सिखाया, वह कहते है। हमें उम्मीद है कि समय के साथ बुरुंडी में और अधिक पुरुष एवं महिलाएं यह समझेंगे कि चीजों को बदलने की आवश्यकता है।''

जैसे ही उन्होंने मेकेरी विश्वविद्यालय में अपना 10-सप्ताह का सत्र पूरा किया, शांति मित्रों ने रोटरी के नए शांति केंद्र में उनके समय के बारे में एक अपडेट प्रदान किया। या कम से कम उन्होंने कोशिश की। रुसारे ने कहा, ''मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकती कि यह मेरे लिए कितना अद्भुत अनुभव रहा है। इस फ़ेलोशिप ने मुझे शांति पत्रकारिता पर अपनी सामाजिक परिवर्तन पहल को आगे बढ़ाने के लिए अधिक दृढ़ बना दिया। यह प्रारूप अब एक अंतिम रूप ले रहा है।''

हालांकि महामारी की वजह से लगे प्रतिबंधों के कारण रवांडा की एक नियोजित यात्रा रद्द कर दी गई, शांति साथियों के पास इस क्षेत्र में काम करने के कई अवसर थे, जिसमें दक्षिण सूडान के साथ युगांडा की सीमा के पास बीड़ी बीड़ी शरणार्थी बस्ती का दौरा करना और देश के बुडूडा मंडल में विनाशकारी भूस्खलन से बचे लोगों से मिलना शामिल था। बैन-ओमुगिशा ने कहा, ''इन अभियानों ने हमें प्रवासन और पर्यावरणीय आपदाओं के साथ-साथ लिंग आधारित हिंसा से प्रभावित समुदायों में शांति निर्माण और संघर्ष परिवर्तन पर प्रत्यक्ष रूप से जुड़ने में सक्षम बनाया है।''

इन शांति मित्रों ने स्थानीय रोटेरियनों के साथ भी बातचीत की जिन्होंने नए आगंतुकों के लिए परामर्शदाता के रूप में सेवा देने के लिए शांति केंद्र की मेजबान क्षेत्र समिति के साथ काम किया। उन्होंने उन्हें कंपाला के आसपास का क्षेत्र दिखाया और ''इन साथियों को उनके घरों और क्लबों में आमंत्रित किया'', नकुतु ने कहा। संघर्ष के इतिहास वाले देश में रहने के बावजूद रोटेरियन इस बात को लेकर स्पष्ट नहीं है कि वे कैसे सम्मिलित हो सकते है। शांति केंद्र ने उन विभिन्न तरीकों को जानने में रुचि पैदा की जिससे रोटेरियन शांति और संघर्ष की रोकथाम को बढ़ावा दे सकते है।

''यह उद्घाटन दल बहुत जोशीला है'', नंबलिरवा नकाबाला ने आगे कहा। ''वे जल्द ही एक दूसरे के साथ आराम से रहने लगे। उन्होंने एक दूसरे की समर्थन प्रणाली बनकर व्यक्तित्व और संस्कृतियों में अपने मतभेदों को अच्छाई के लिए इस्तेमाल किया।'' शांति मित्रों के बीच वह सौहार्द - एक शाब्दिक फैलोशिप - पूरे 2021 तक रहेगा क्योंकि वे अपने मूल देशों में अपनी पहलों पर काम करेंगे। यह मेकेरी में शांति मित्रों के अगले समूह के लिए एक मॉडल के रूप में भी काम करेगा।

मंडल 9211 (तंजानिया और युगांडा) द्वारा प्रकाशित मासिक समाचार पत्र, *द वेव* को मुशाहो ने बताया, मेकेरी विश्वविद्यालय में एक शांति केंद्र का होना अफ्रीका के लिए बहुत बड़ी बात है। ''अफ्रीकियों के लिए यह सीखने और समझने का एक शानदार अवसर है कि शांति हर विकास की नींव है।''

शांति मित्र 2022 की शुरुआत में मेकेरी लौट आएंगे। फिर हम देखेंगे कि उन्होंने क्या हासिल किया है - और रोटरी एवं अफ्रीका के लिए आगे क्या करना है।

चित्र: टोबिन जोंस

©Rotary

अन्य मेकेरी शांति मित्रों से मिलिये

ओलुसीना अजाओ
नाइजीरिया; सुरक्षा और संकट प्रबंधन

एलेनोर कर्ल
यूनाइटेड किंगडम; मनोसामाजिक समर्थन और आघात उपचार

सनी दादा
नाइजीरिया; संघर्ष परिवर्तन और हिंसा की रोकथाम

रोनाल्ड कसुले
युगांडा; विकलांगता अधिकार और समावेशन समर्थन

पिंकी मोथिबेडि
बोत्सवाना; सामुदायिक सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय

स्टीफन सेम्पांडे
युगांडा; युवा संरक्षण और सामाजिक सेवा विकास

थॉमस सिथोल
जिम्बाब्वे; मीडिया और सूचना साक्षरता

नोबंटू टेलर
लाइबेरिया; नागरिक समाज व्यस्तता और कौशल निर्माण

अमीना वारसामे
सोमालिया; लैंगिक समानता और मानवाधिकार नीति सभी रोटरी शांति केंद्रों पर फेलोशिप के लिए वर्ष

2023-24 का आवेदन फरवरी 2022 में उपलब्ध होगा। रोटरी संस्थान को अपना पूर्ण आवेदन जमा करने के लिए उम्मीदवारों के पास 15 मई 2022 तक का समय होगा। मंडलों को 1 जुलाई तक रोटरी संस्थान को अनुमोदन प्रस्तुत करना होगा। अधिक जानकारी के लिए *rotary.org/peace-fellowships* पर जाएं।

Rotary | JCI

रोटरी इन्टरनेशनल में शामिल हो गए जूनियर चैंबर इंटरनेशनल वाईस प्रेसिडेंट

आर.आई निदेशक ए.एस. वेंकटेश, ईपीएनसी पीडीजी डॉ.सगा, 3203 डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रोटरीयन एमडी. के. शन्मुगसुन्दरम् व रोटरी ईरोड सेंट्रल प्रसिडेंट रोटरीयन एमडी वी. राजमन्णिकम के उपस्थिति में

जेसीआई वाईस प्रसिडेंट कवीन कुमार कुमरवेल रोटरी ईरोड सेंट्रल में शामिल हो गये।

मैं रोटरी में 116 साल की सेवा, अखंडता, दोस्ती, व्यापार और नेतृत्व के अवसरों के पूरे विश्व में समृद्ध इतिहास के कारण शामिल हुआ हूँ।

– कवीन कुमार कुमरवेल

रोटरी वर्लड रेकार्ड प्रॉजेक्ट
रोटरी स्पेशालिटी हास्पिटल,
पेरुंदुरई के लिए
रोट्री क्लब ऑफ ईराड सेन्ट्रल का
नं1 प्रमुख योगदान

Rtn. MD. V. राजमाणिकम्
President, Rotary Erode Central , RID 3203 .
Rotary Athma- Modern Crematorium- Since 2008
Rotary Blood Bank-Erode Central
93630 26986, 99441 15000

सेवा में शामिल हों।

हवा द्वारा संचालित

प्रीति मेहरा

एक साधारण पवन ऊर्जा उपकरण घर की ऊर्जा जरूरतों को पूरा कर सकता है।

आज की दुनिया में, चाहे घर हो या कार्यस्थल हो, ऊर्जा हमारी सभी जरूरतों को पूरा करने का मूल स्रोत बन गई है - चाहे वह विद्युत बल्ब, रेफ्रिजरेटर, मिक्सर, मोबाइल या लैपटॉप हो और जैसा कि जलवायु परिवर्तन का खतरा हमारे सिर पर मंडरा रहा है, दुनिया के सभी हिस्सों में इसे महसूस किया जा रहा है, यहां तक कि जलवायु परिवर्तन के संकट को हमारे शहरों तक में महसूस किया जा रहा है, इसलिए नवीकरणीय ऊर्जा से अधिकांश ऊर्जा को प्राप्त करना सब से अच्छा विकल्प होगा। बिजली के बिलों को कम करने के अलावा, यह दुनिया को पर्यावरण के अनुकूल बनाने के प्रति हमारी प्रतिबद्धता से अवगत कराने की दिशा में एक बड़ा कदम होगा।

पिछले अंक में हमने घर पर सौर ऊर्जा प्रणाली को स्थापित करने के सबसे आसान तरीके और सूर्य द्वारा प्रदान किए गए आर्शीवाद का आनंद उठाने के बारे में बात की थी। आइए इस बार हम अन्य अपरंपरागत ऊर्जा स्रोतों को देखते हैं। इनमें से कुछ शहरी घरों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते हैं लेकिन अन्य स्रोत हमारे बिजली बिलों के लिए बहुत ही अनुकूल बैठ सकते हैं, उदाहरण के लिए पवन-ऊर्जा। इसे अब घरेलू उपयोग के एक विकल्प के रूप में माना जा रहा है और इस तकनीक के पीछे वह युवा दिमाग हैं जो इस नवीन तकनीक को हमारे दरवाजे पर लाएं हैं।

लेकिन पवन ऊर्जा के बारे में बात करने से पहले, मुझे लगता है कि हरित तरीके से चीजों के प्रति ग्रामीण बिहार में मेरा अनुभव एक दिलचस्प विषयांतर हो सकता है। कुछ साल पहले, पश्चिमी चंपारण क्षेत्र का एक बड़ा क्षेत्र बिजली ग्रिड से अलग था और वहां के ग्रामीणों के पास बिजली नहीं थी। दिन में वह बिजली के बिना रहते थे और रात में वे मिट्टी के तेल वाली लालटेन जलाते थे या अधिक उपयोग हेतु वे डीजल जनरेटर का इस्तेमाल करते थे। बच्चों को शाम के बाद पढ़ाई करना मुश्किल हो जाता था, मनोरंजन करने के लिए टेलीविजन नहीं था और लोग अपने मोबाइल फोन को चार्ज करने के लिए मीलों पैदल चल कर जाते थे।

फिर एक दिन, क्षेत्र के कुछ युवा जो अब प्रोफेशनल हो चुके थे उन्होंने इस क्षेत्र को अक्षय ऊर्जा स्रोतों से जगमगाने का फैसला किया। अपने शोध के दौरान उन्होंने व्यापक रूप से उपलब्ध चावल की भूसी पर अपने ध्यान को केंद्रित किया। उन्होंने समस्त क्षेत्र में कई छोटे-छोटे भूसी से चलने वाले बिजली संयत्र (चावल की भूसी बिजली संयत्र) स्थापित किए, उन्होंने स्थानीय लोगों को इन यंत्रों को चलाने हेतु प्रशिक्षित किया, बिजली पैदा की जो गांवों को रोशन करती थी। बिजली आपूर्ति से फोन चार्ज होने लगे, अब टीवी देखा जाने लगा और यहां तक कि बिजली रहने के कारण अब दुकानें देर रात तक खुली रहने लगीं। जब मैंने इस क्षेत्र का दौरा किया तो मैंने पहली बार पाया कि कैसे इस पहल ने लोगों के जीवन को रूपांतरित कर दिया है।

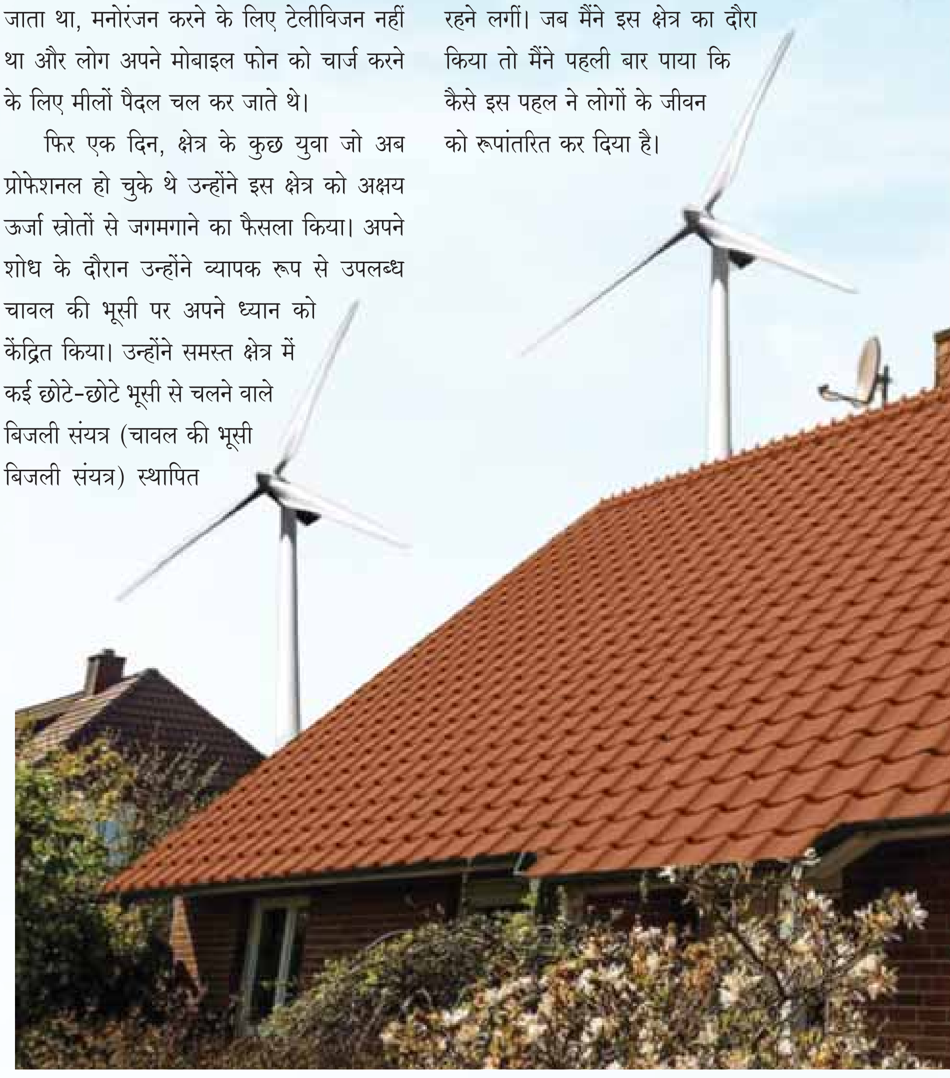

समय के साथ, उनकी जरूरतें भी बढ़ती गईं और ग्रामीणों को चौबीसों घंटे बिजली की जरूरत थी, इसलिए इन युवाओं ने एक हाइब्रिड सिस्टम विकसित किया जो दिन में सोलर सिस्टम से और रात में चावल की भूसी के माध्यम से बिजली की आपूर्ति करता है। यहां तक कि उन्होंने चावल की भूसी के अवशेषों से, इसे अगबत्ती में परिवर्तित करके बरोजगार महिलाओं के लिए आजीविका प्रदान की। हस्क पॉवर सिस्टम, कंपनी ने अब अन्य राज्यों और देशों में अपने व्यापार दायरे का विस्तार किया है। चुनौतियों के बावजूद यह अभी भी अपने अक्षय ऊर्जा एजेंडे पर कायम है।

यह कहानी स्वच्छ ऊर्जा के माध्यम से समस्याओं को हल करने के लिए विचारों और पहल को दर्शाती है। इसी तरह, ऐसे युवा लोग भी हैं जिन्होंने घरेलू पवन-ऊर्जा इकाइयों को चुनौतिपूर्ण रूप से स्थापित करना शुरू कर दिया है क्योंकि वे तटीय क्षेत्रों, पहाड़ी क्षेत्रों और उन क्षेत्रों में जहां हवा की गति अच्छी है, वहां इसकी अपार संभावनाएं देखते हैं। केरल के दो भाइयों - अरूण और अनुप जॉर्ज ने अपना खुद का उत्पाद विकसित किया है जिसे 2019 के यूएन इनोवेशन समिट में प्रस्तुत किया गया। उन्होंने स्क्रैच तकनीक से 'मेड इन इंडिया' ऑफ-ग्रिड 1ज्ञथ अवतार स्मॉल विंड टरबाइन का निर्माण किया है। यह 5.5 मीटर/सेकेंड की औसत हवा की गति से 5 किलोवाट का दैनिक उत्पादन प्रदान करता है और इसे बड़ी या छोटी किसी भी छत पर इंस्टाल किया जा सकता है क्योंकि इसके लिए एक समान सौर प्रणाली के समतुल्य लगभग 25 प्रतिशत क्षेत्र की आवश्यकता होती है।

अवंत ग्रेड इनोवेशन के सीईओ अरूण जिनका मैंने इस कॉलम के लिए साक्षात्कार लिया था उन्होंने बताया कि अवतार-1, जो प्रतिदिन 5 किलोवाट ऊर्जा को उत्पन्न कर सकता है, जिसकी औसत हवा की गति 5.5 मी/सेकेंड है, वह 10 वाट के 14 एलईडी लाइट्स को पावर दे सकता है, प्रत्येक 50 वाट के दो लैपटॉप, 100 वाट के दो एलईडी टीवी, 165 लीटर के एक फ्रिज, 75 वाट के चार पंखों और 100 वाट के एक वाटर प्यूरिफायर को बिजली दे सकता है। ऐसे अन्य मॉडल हैं जो 25 किलोवाट/प्रतिदिन तक के उच्च स्तर तक की शक्ति उत्पन्न कर सकते हैं। देश भर में विभिन्न स्थानों में अवतार को स्थापित किया गया है, फ्लैट, खेतों और भारतीय सेना के लिए लेह में भी इसे स्थापित किया गया है।

अरूण ने पवन ऊर्जा बनाम सौर ऊर्जा के लाभों पर प्रकाश डाला, इसमें पहला वाला दिन और रात के दौरान बिजली पैदा करता है और यह कम स्थान घेरता है, उच्च दक्षता, लंबी बैटरी अवधि, कम रखरखाव की लागत के साथ और यह बारिश, बर्फ या बादलों से प्रभावित नहीं होता है। उनका मानना है कि अवतार आसानी से रूफटॉप सोलर इंस्टालेशन के साथ प्रतिस्पर्धा करता है क्योंकि इसकी कीमत ₹60,000 से शुरू होती है।

हालांकि, बाजार में दूसरे ब्रांड भी हैं जिन्हें कई व्यापारियों द्वारा एसेम्बल किया और बेचा जाता है। किसी उत्पाद को चुनने से पहले बाजार का अच्छी तरह से निरीक्षण कर लेना सबसे अच्छा है।

जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के इंटरगवर्नमेंट पैनल के द्वारा हाल ही में लाल कोड चेतावनी जारी करने के बाद वैकल्पिक ऊर्जा के स्रोत ध्यान का केंद्र बन गए हैं। यह वास्तव में देशों और नागरिकों को जलवायु आपदा को रोकने और पृथ्वी को बचाने हेतु तत्काल कार्यवाही करने के लिए कहता है। पवन ऊर्जा इस प्रयास में एक स्वागत योग्य समावेश या अतिरिक्त हो सकता है।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

संगीत और माधुर्य

किशोरी अमोनकर
(1932–2017)
बेहतरीन एकाकी संगीतकार

वी रामनारायण

गीत गया पत्थरों ने। इसी नाम से 1960 के दशक में बनी हिंदी फिल्म के इस खूबसूरत गीत की गायिका का अनुमान मैंने गलत लगाया था। मैंने सोचा, या तो आशा भोसले होंगी या फिर गीता दत्त। मैं निश्चय नहीं कर सका, क्यूंकि राग की बारीकियाँ निकालने में माहिर ये आवाज़, फिल्म संगीत की इन दो सुमधुर आवाजों से ज़रा हट कर थी। मुझे ये भी मालूम नहीं था कि गीता दत्त जीवित हैं या नहीं। तो फिर क्या वह आवाज फ़िल्मी संगीत की रानी लता मंगेशकर थीं? मुझे गूगल पर भी जवाब नहीं मिल सकता था क्योंकि क्योंकि इंटरनेट का वह चमत्कार अभी भविष्य की परतों में छिपा था। मैंने सिर्फ एक ही काम किया: रेडियो के बगल में बैठकर मैं लगातार विविध भारती पर फिर से गाने के बजने का इंतजार कर रहा था और मुझे ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। एक हफ्ते के भीतर ही जवाब मिल गया : *किशोरी अमोनकर।* ये नाम मैंने कभी नहीं सुना था, लेकिन मैं प्रभावित ज़रूर हुआ था। पार्श्व गायन में क्या शानदार नई आवाज आई है !

कई साल बाद बाद मुझे ये अहसास हुआ कि वो फिल्म संगीत में उनका स्थाई योगदान नहीं था, और ये कि कोकिलकंठी किशोरी अमोनकर की एक प्रभावशाली शास्त्रीय संगीत वंशावली थी, कि वह हिंदुस्तान के प्रसिद्ध घरानों में से एक जयपुर-अतरौली घराना से ताल्लुक रखने वाली सुप्रसिद्ध गायिका मोगूबाई कुर्दीकर, की बेटी थीं, किशोरी अमोनकर को संगीत विरासत में मिला था, उनकी माँ ही उनकी पहली गुरु भी थी। मुझे उपलब्ध साहित्य से मिली जानकारी, विशेष रूप से मोहन

नाडकर्णी और दीपक राजा की लिखी रचनाओं से मालूम चला कि वह अपने घराने के भीतर अवंत गार्डे आंदोलन की अग्रणी नेताओं में से एक थीं। राजा के अनुसार, ''किशोरी न केवल एक सशक्त संगीतकार थीं - बल्कि अपनी बुद्धि, विद्वता और अंग्रेजी सहित कम से कम तीन भाषाओं में उत्कृष्ट अभिव्यक्ति के बल पर, स्वच्छंदतावाद आंदोलन की प्रमुख विचारक भी थीं। कहते हैं संयोग वश, उनके पास संगीतशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र की रचनाओं का सर्वश्रेष्ठ संग्रह था। वो सेमिनारों और सम्मेलनों में दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया करती थीं ठीक वैसे ही जैसे वो संगीत कार्यक्रम के मंच पर मोह लेती थीं।'' राजा ने उन्हें एक स्वच्छंदता वादी गायिका के रूप में वर्णित किया है, जिन की प्रस्तुतियां ऊर्जा और सौन्दर्य से भरी हुई होती थीं,

भीमसेन जोशी के साथ।

उनके रागों की कल्पनाशीलता ने ऐसा संगीत रचा, जिसका प्रयोग उनके घराने में पहले नहीं देखा गया था।

सिनेमा संगीत से किशोरी का जुड़ाव ज़्यादा समय तक नहीं रहा। सिने संगीत से उनका लगाव बढ़ता उससे पहले ही उनकी माँ ने रोक दिया और धमकी दी कि अगर उन्होंने फिल्मों में गाना जारी रखा तो अंतिम समय में अपना मुंह मत दिखाना।

किशोरी अमोनकर का अगला गीत जिसने मुझे मोहित कर लिया वो थी राग बागेश्री के साथ उनके पसंदीदा रागों में से एक राग *भूपाली* पर बंदिश *सहेला रे।* किशोरी की आवाज में इस गीत ने श्रोताओं की कई पीढ़ियों को मंत्रमुग्ध किया है। उसकी अभिव्यक्ति सुंदर, भावुक, श्रृंगार से ओतप्रोत ये गीत लगभग कामुक है, उनके *घराने* में प्रयोग किये जाने वाले तरीकों से बिलकुल अलग। परंपरा से हट कर इस विचलन के लिए और अन्य घरानों का प्रयोग अपने संगीत में करने के लिए, किशोरी को विद्रोही समझा गया, पर इस आरोप को उन्होंने सिरे से नकार दिया, यहां तक कि घराना परंपरा को अव्यवहारिक बताया और इस के द्वारा रचनात्मकता दबाने की निंदा की। उनका मानना था कि किसी भी राग की व्याकरणिक सीमाओं के अलावा राग संगीत की खूबसूरती के लिए संगीतकार को बिना किसी प्रतिबंध के पूरी तरह स्वतंत्र होना चाहिए।

हालांकि किशोरी का *सहेला रे* को मैं उसके कोमल स्त्रैण आकर्षण के कारण पसंद करता हूं - जबकि कुछ लोगों ने राग को श्रृंगार की अद्भुत व्याख्या के रूप में वर्णित किया है, उस विधा की इन शैलियों में मेरी रोमांचक खोज, मुख्य रूप से मेरे पसंदीदा महान कर्नाटक गायकों महाराजापुरम विश्वनाथ

अन्य घरानों का प्रयोग अपने संगीत में करने के लिए, किशोरी को विद्रोही समझा गया, पर इस आरोप को उन्होंने सिरे से नकार दिया, यहां तक कि घराना परंपरा को अव्यवहारिक बताया और इस के द्वारा रचनात्मकता दबाने की निंदा की।

अय्यर और एमएल वसंतकुमारी का आनंद लेते हुए मैं बड़ा हुआ हूँ और 1950 के दशक में फिल्म *भाभी की चूड़ियां* का लता मंगेशकर द्वारा गाया अतुलनीय गीत *ज्योति कलश छलके।* हाल के वर्षों में, मैंने बहुआयामी श्रीराम परशुराम द्वारा राग के निरुपण में (*भूप* और *मोहनम,* इसका दक्षिणी समानांतर), उद्बोधक और शुद्ध उच्चारण - आवाज और वायलिन दोनों पर समान अधिकार पाया है।

जैसे-जैसे वह एक संगीतकार के रूप में प्रखर होती गई, किशोरी का विश्वास दृढ़ होता गया कि संगीत के मूल में भावनात्मक आयाम अवश्य

संतूर वादक शिवकुमार शर्मा के साथ।

कार्यक्रम से कई घंटे पहले, पूरी तरह से संगीत में विलीन होने की तैयारी शुरू कर देती थीं, कार्यक्रम से हफ्तों पहले वो रागों के साथ अभ्यास शुरू कर देतीं, ताकि गायन शुरू करने के बाद वह समाधि में उतर सकें।

होना चाहिए, उन्होंने गायन की तकनीक के साथ बंदिश के भाव-पक्ष को साकार करने पर अधिक जोर दिया, उनका कहना था कि राग को उसके असली स्वरुप में ढूंढ पाना उसकी भावनात्मक गहराइयों में डूब कर ही संभव था, जिसके अभाव में संगीत एक सतही तल पर ही रहता है अधिक से अधिक तकनीकी रूप से उसकी प्रस्तुति ठीक हो सकती है। उनके लिए संगीत के स्वरों का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व था, स्वर वास्तव में व्यक्ति थे जो उनसे बात करते थे, उनके लिए गाते थे।

जिन्होंने भी किशोरी अमोनकर को नियमित रूप से सुना है और मंच पर उनकी प्रस्तुति देखी है, वो राजा की बात से सहमत होंगे। एकाकीपन साफ़ झलकता था। कार्यक्रम से कई घंटे पहले, पूरी तरह से संगीत में विलीन होने की तैयारी शुरू कर देती थीं, कार्यक्रम से हफ्तों पहले वो रागों के साथ अभ्यास शुरू कर देतीं, ताकि गायन शुरू करने के बाद वह

समाधि में उतर सकें। उनकी रगों में संगीत बहता था और समाधि उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण थी,

यही कारण था कि वो अपने ग्रीन रूम में किसी को भी प्रवेश की अनुमति नहीं देती थीं, यही वजह है कि जब वरिष्ठ कलाकारों सहित दर्शकों में से, लोग एक-दूसरे का अभिवादन करते थे या एक-दूसरे को बधाई देते थे, वो अपनी झुंझलाहट या नाराज़गी छिपाती नहीं थीं अगर वे यूँ ही बात करते रहेंगे तो मैं ध्यान में कैसे उतर सकती हूँ? वह पूछती। साधना उनके लिए पावन पवित्र थी; यह सिर्फ अभ्यास नहीं था। संगीत के प्रति पूर्ण समर्पण था। इसी तरह उन्होंने एक गुरु और शिक्षक के बीच अंतर स्पष्ट किया। गुरु आपको मार्ग दिखाता है और स्वयं खोज करने के लिए आपको मार्ग पर छोड़ देता है ।

मंच पर पूर्ण आत्म-विस्मरण की स्थिति में लीन हो जाना हमेशा आसान नहीं होता था। किसी कॉन्सर्ट में वार्मअप करने में किशोरी को अक्सर काफी समय लगता था। परिणामस्वरूप, सही मायने में षडज या ऋषभ या निषाद में सुर बिठाने के लिए, जब वे पूर्ण विलय का प्रयास कर रही होतीं , उस समय उन का संगीत बेमेल और बेसुरा लग सकता था। कई बार जब यह एकाकी पूर्णतावादी कलाकार संगीत निर्वाण की खोज करते-करते - गलियों, कूंचों में भटक जाता तो ऑडियंस ही नहीं बल्कि उनके कट्टर प्रशंसक भी अधीर हो जाते थे। और जैसे ही शुद्ध स्वर लगता, वो क्षण बेहद आनंदमय होता था। उसके बाद कौन शिकायत करता ?

यहां दीपक राजा को एक बार फिर उद्धृत करूंगा, ''किशोरी अमोनकर को सुनकर, तुरंत गहरे अकेलेपन का अहसास होता था... उस एकाकीपन से बहता समृद्ध शानदार, सौम्य और सुहाता संगीत। ये श्रोता को सहज ही अपनी ख़ूबसूरत लय में पिरो लेता था जहां और पाने की लालसा जाग्रत हो जाती थी।''

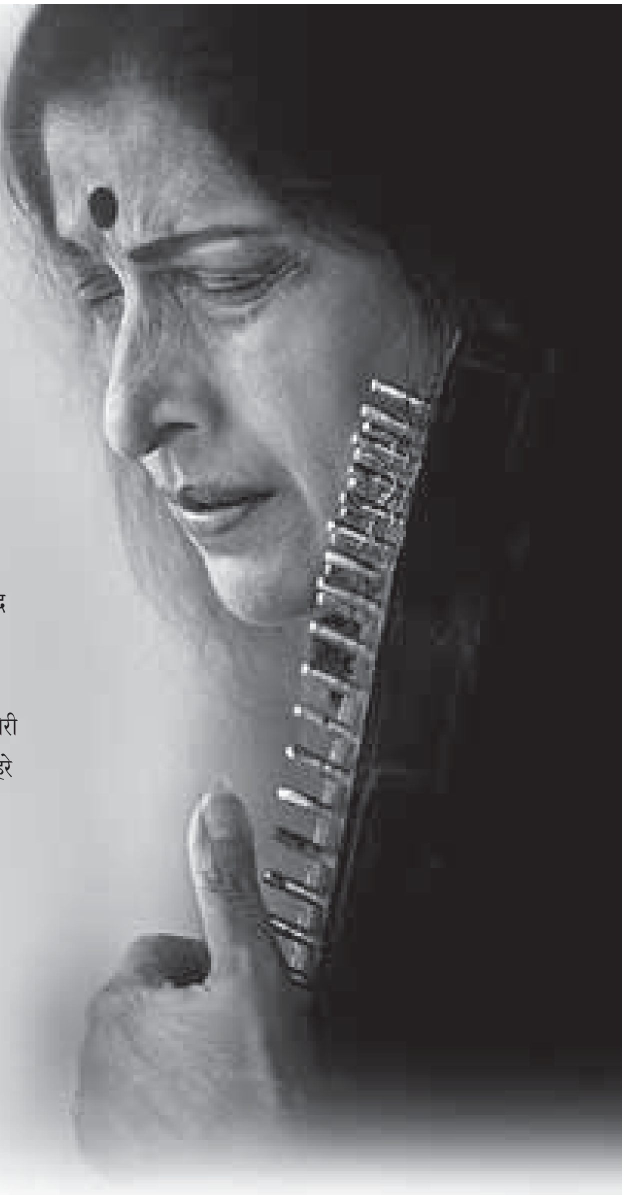

जब उन्होंने खुद को स्थापित कर लिया और सुर साम्राज्ञी बन गई तो किशोरी के नाज़ नखरे, और तुनकमिजाजी बढ़ गई जिसकी वजह रही होगी उनका अकेलापन, बढ़ती हुई लड़की के रूप में झेली पीड़ा और दर्द या फिर अपनी माँ के कार्यक्रम में प्रदर्शन के दौरान हुआ माँ से अपमानजनक व्यवहार।

किशोरी अमोनकर को सुनकर, तुरंत गहरे अकेलेपन का अहसास होता था... उस एकाकीपन से बहता समृद्ध शानदार, सौम्य और सुहाता संगीत।

कभी-कभी वह अपनी असाधारण, अद्भुत मांगों से आयोजकों को परेशानी में डाल देती थीं - जैसे एक बार जब वह बेंगलुरु में एक संगीत कार्यक्रम की यात्रा पर उन्होंने एक पांच सितारा होटल में एक सफेद मर्सिडीज बेंज और सफेद दीवारों वाले एक लक्जरी सुइट पर जोर दिया था - या कार्यक्रम शुरू होने से पहले अपने तानपुरों

मुझे लगता है कि किसी प्रतिभा को पहचानने के लिए प्रतिभाशाली भी होनी चाहिए , उन्होंने एक शर्मीली मुस्कान के साथ कहा, जब पता चला कि ज़ाकिर हुसैन ने ऐसा कहा है।

को साधने और ध्वनि मिलान और जांच में वह बहुत समय लेती थी। लेकिन अक्सर इस की कोई अहमियत नहीं थी जिसकी परिणीति विशुद्ध किशोरी अमोनकर के संगीत कार्यक्रम से होती थी।

व्यक्तिगत रूप से, संगीत कला और संगीत की गहराई में उनकी निर्विवाद महारत, मेरे विचार से उनकी आवाज़, बहुत तीखी और ऊंची थी और इसीलिये प्रभाआत्रे या वीणा सहस्त्रबुद्धे की गहराई लिए, गंभीर, समृद्ध आवाजें ज़्यादा पसंद थीं और हाँ गंगूबाई हंगल की भारी आवाज़ के साथ कर्नाटक संगीत धारा की बेहतरीन आवाज़ें भी जैसे एमएस सुब्बुलक्ष्मी, डीके पट्टामल, एमएल वसंतकुमारी या टी बृंदा। हालाँकि, उनके हजारों प्रशंसकों और शास्त्रीय संगीत के अनुयायियों और श्रेष्ठ विद्वानों में मेरे इस विचार को निश्चित रूप से उनकी निंदा ही माना जाएगा।

किशोरी अमोनकर, जो चार साल पहले हमें छोड़ गईं और जिन्हें पद्म विभूषण सहित लगभग हर सम्मान मिला, उन्होंने पुरस्कारों और पुरस्कारों की सार्वजनिक रूप से अवहेलना की । मुझे भारत रत्न नहीं चाहिए , जब एक प्रशंसक ने उन से कहा, राष्ट्र की ओर से इस सम्मान को नहीं दिए

ज़ाकिर हुसैन के साथ।

जाने का उसे खेद है। कलाकारों से मिलने वाले सम्मान की बात बिलकुल अलग थी। ''मुझे लगता है कि किसी प्रतिभा को पहचानने के लिए प्रतिभाशाली भी होनी चाहिए'', उन्होंने एक शर्मीली मुस्कान के साथ कहा, जब पता चला कि ज़ाकिर हुसैन ने ऐसा कहा है। ''मैं उन्हें बहुत चाहती हूँ'', उन्होंने कहा। संगीत साम्राज्ञी वास्तव में अद्भुत थीं, विलक्षण थीं !

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

मेम्बर्शिप रेफ़रल रिवार्ड पिन

इस वर्ष सदस्यता वृद्धि पर ध्यान केंद्रित किया गया है, और हमारा लक्ष्य इसे 1.3 मिलियन सदस्यों तक ले जाना है। हमारे रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने EOBO (Each One Bring One) अभियान शुरू किया है, और रोटरी इंडिया ने सदस्यों, क्लबों और मंडलों के लिए उनके प्रदर्शन के आधार पर विशेष रूप से सदस्यता पुरस्कार पिन तैयार किए हैं।

इसके लिए, प्रत्येक क्लब को अपना नामांकन कराना होगा और Rotary.org, Rotaryindia.org में Roster on Wheels को वेंडर के रूप में चुनकर सदस्यता डेटा सिंक को शुरू करना होगा।

डेटा सिंक कौन कर सकता है: क्लब अध्यक्ष/सचिव/कार्यकारी सचिव rotary.org में इस विशेषता को शुरू करने के लिए प्राधिकृत है।

डेटा सिंक करने के सोपान

1. www.rotary.org में लॉगिन कीजिए
2. मैनेज > क्लब एंड डिस्ट्रिक्ट ऐड्मिनिस्ट्रैशन > क्लब ऐड्मिनिस्ट्रैशन में जाइए
3. नीचे स्क्रॉल करके > क्लब एंड मेम्बर डेटा डेज़िग्नेट > क्लब मैनिज्मन्ट वेन्डर में जाइए
4. क्लब मैनिज्मन्ट सिस्टम्स > एडिट में जाइए
5. एडिट क्लब मैनिज्मन्ट > नीचे स्क्रॉल करके > ऐड वेंडर में जाइए
6. सिलेक्ट वेंडर > ड्रॉप डाउन लिस्ट > रोस्टर ऑन व्हील्स > वेंडर एक्सेस लेवल > व्यू ओन्ली एक्सेस > क्लब ईंटेंड्स टू यूस वेंडर सर्विस में जाइए
7. नीचे स्क्रॉल करके > सर्टिफिकेट के बॉक्स पर निशान लगाइए > आई अग्री पर क्लिक कीजिए

यदि ऐसा करने में कोई मुश्किल आए, तो कृपया support@rotaryindia.org पर सहायता केंद्र से संपर्क कीजिए।

इस बात पर ध्यान दीजिए कि जब एक क्लब नेतृत्वकर्ता www.rotaryindia.org पर लॉगिन करता है, तो वह डैश्बोर्ड के शीर्ष पर यह देख सकता/सकती है कि क्लब का ROTARY SYNC चालू है या बंद है।

मेम्बर्शिप रेफ़रल रिवार्ड पिन

जो रोटेरियन किसी सदस्य को अपने खुद के क्लब या मंडल के अलावा किया अन्य क्लब या मंडल में पहली बार भेजेगा, उसे एक पिन द्वारा सम्मानित किया जाएगा। मेम्बर्शिप रेफ़रल रिवार्ड पिन का दावा करने के लिए इस लिंक पर जायें।

https://eobo.rotaryindia.org/ एक रोटेरियन, उनके साझेदार, या रोटरेक्टर इस लिंक का प्रयोग करके रेफ़रल पुरस्कार पर दावा प्रस्तुत कर सकते है।

मेम्बर्शिप रेफ़रल रिवार्ड पिन के सोपान

रोटेरियन को मंडल, क्लब और उस व्यक्ति का चयन करना होगा जिसे उसने संदर्भित किया है और क्लब से उचित प्रायोजक का चयन करना होगा। प्रायोजकों की पहचान करने के लिए वह तीन बार कोशिश कर सकता है। फिर सिस्टम रेफ़र किए गए व्यक्ति विशेष के लिए रेफ़रल पुरस्कार का दावा करने से उन्हें रोक देगा। वह अन्य रेफ़रल के लिए पुरस्कार का दावा करना जारी रख सकते है।■

THE ALL-MEMBER SURVEY IS COMING IN NOVEMBER

This is your chance to tell us what you like, what you don't like, and what you want from your Rotary membership.

To make sure you receive the survey, update your email address at my.rotary.org/profile/me.

WE WANT YOUR FEEDBACK

Rotary

शेफ़ अपने बचपन की पाकशाला गलियों से गुजरते हैं

शर्मिला चंद

शेफ अपनी याददाश्त की गलियों से गुजरते हैं और दिलचस्प व्यंजनों के रूप में प्यार की अपनी कहानियों को साझा करते हैं। कुछ स्वादिष्ट घरेलू शैली के व्यंजनों के साथ उनके यादगार का आनंद आप भी लें।

नोलेन गुड़ पायेश

सुवरंजन बनर्जी,
कार्यकारी शेफ, ग्रैंड मर्क्यूर, गोपालन मॉल,बैंगलोर

बचपन की बढती हुयी उम्र में, नोलेन गुड़ पायेश, मेरी पसंदीदा मिठाई थी। मेरी माँ को पायेश पकाते हुए देखना, मेरे लिए सबसे अच्छी खाना पकाने की यादों में से एक है। यहां तक कि जब यह केवल सर्दियों में उपलब्ध होता है, तब भी मेरी माँ यह सुनिश्चित करती कि इससे भरा एक छोटा जार मेरे जन्मदिन के लिए बचाया जाए, जो कि अगस्त में पड़ता है। उन्होंने मुझे किसी की खुशी के लिए इस एक अतिरिक्त मील जाने का महत्व सिखाया। फ़िर जब मैंने अपनी पाक यात्रा शुरू की, मुझे पता था कि वास्तव में अपने मेहमानों के लिए मुझे क्या करना था।

सामग्री:

- 1 लीटर पूर्ण वसा दूध
- गोबिंदोभोग चावल- 50 सा
- नोलेन गुड़/गाढ़े रंग का पाम गुड़- 1/2 कप
- इलायची - 1-2 कली
- तेज़ पत्ता - 1
- काजू और किशमिश- 10-12
- घी - 1/2 टी-स्पून

पकाने का तरीका:

- चावल को पानी में धोकर भिगो दें। 30 मिनट के बाद चावल को छानकर सूखने के लिए फैला दें।
- 1/2 टीस्पून घी के साथ एक पैन गरम करें, सूखे चावल डालें और 1 मिनट के लिए भुन लें और इसे एक तरफ रख दें।
- एक भारी तल का बर्तन लें और उसमें दूध को उबालें। एक बार जब यह उबल जाए, तो इलायची और तेज पत्ता डालकर धीमी आंच पर 5 मिनट तक और उबालें।
- अब दूध में चावल डालें और कम आंच पर तब तक पकाते रहें जब तक कि चावल पूरी तरह से पक न जाए। कभी-कभी हिलाते रहें ताकि दूध नीचे तक न चिपके।
- एक बार चावल पूरी तरह से पक जाए और मुलायम हो जाए तो उसमें काजू, किशमिश डालें और फिर उसमें नोलेन गुड़ डालें। अच्छी तरह से मिलाएं और अगले 5-10 मिनट के लिए और पकाएं जब तक कि यह मन पसंद रूप से गाढ़ा न हो जाए। गैस की लौ बंद कर दें।
- खीर को पूरी तरह ठंढा होने दें और कमरे के तापमान पर या ठंढी परोसें।

सत्तू का पराठा

नीलभ सहाय
कार्यकारी शेफ़, नोवोटेल कोलकाता होटल और निवास

मेरी माँ को पारंपरिक भारतीय व्यंजनों में अपना खुद का मज़ेदार मोड़ देने की अनोखी आदत है। यहां मैं उनकी सबसे मशहूर व्यंजनों में से एक साझा कर रहा हूं, जिसके लिए वह परिवार में अच्छी तरह से जानी जाती हैं - सत्तू के पराठे और आलू टमाटर की सब्ज़ी।

सामग्री:

आटे की लोई के लिए

- 100 ग्राम गेहूं का आटा
- 100 ग्राम मैदा
- 1/2 टी-स्पून नमक
- 1/2 टी-स्पून अजवाईन

- 2 टेबल-स्पून अजवाईन
- गर्म पानी, आटा गूंधने के लिए

भराई के लिए

- आधा कप भुना हुआ भूरे चने का आटा
- 1 छोटा प्याज, बारीक कटा हुआ
- 1 इंच अदरक, कसा हुआ
- 1 चम्मच लहसुन, बारीक कटा हुआ
- 2 हरी मिर्च, बारीक कटी हुई
- आधा टेबल-स्पून आम का अचार, ढेर लगा हुआ
- 1 टी-स्पून सरसों का तेल
- नमक स्वादानुसार
- 1 टेबल-स्पून पानी
- पराठे तलने के लिए तेल

पकाने का तरीका:

- आटे की लोई तैयार करने के लिए, सभी सूखी सामग्री को मापें और उन्हें एक बड़े मिश्रण वाले कटोरे में डालें। सभी सामग्री को अच्छी तरह मिलाएं। आटे की नरम लोई बनाने के लिए मिश्रण कटोरे में पानी के बाद तेल डालें। आटे को लोई को किचन टॉवल या मलमल के कपड़े से ढक दें और इसे आधे घंटे तक आराम दें।
- भरवां तैयार करने के लिए, एक कटोरे में भुना हुआ चना आटा लें, इसमें कटा हुआ प्याज, लहसुन, कसा हुआ अदरक और हरी मिर्च डालें। अच्छे से मिलाएं। मिश्रण में नमक, कटा हुआ हरा धनिया-आम का अचार और सरसों का तेल डालें।
- पराठा तैयार करने के लिए एक मिनट के लिए आटा गूंध लें और उन्हें बराबर भागों में बाँट लें। अब हमारे हाथों की हथेली के बीच इन आटे भागों को हल्के से रोल करें और सपाट गोल बनाने के लिए ऊपर से दबाव डालें। स्टफिंग को चार भागों में विभाजित करें। स्टफिंग को आटे के फैले हुए गोल चकती के केंद्र में रखें। अब सभी तरफ़ से चकती को इकट्ठा करके स्टफिंग को सील कर दें। रोलिंग बोर्ड पर कुछ गेहूं का आटा छिड़कें। भरवां आटा सावधानी से एक मोटे पराठे में बेल लें।
- पैन (तवा) गर्म होने के बाद उस पर बेला हुआ पराठा डालें और इसे दोनों तरफ से भूनें। तेल की कुछ बूंदें तवे पर और पराठे के ऊपरी भाग पर छिडकें। पराठे को दोनों तरफ़ हल्के हल्के तल लें। पराठे को मध्यम आंच में तब तक पकाएं, जब तक पराठा पूरी तरह से पक न जाए और दोनों तरफ सुनहरे रंग का ना दिखाई देने लगे।
- आलू की सब्ज़ी के साथ पराठे का आनंद उठायें।

आलू की सब्ज़ी

सामग्री

- 500 ग्राम आलू
- 1 छोटा चम्मच जीरा
- 1 बड़ा चम्मच कटा हुआ अदरक
- 1 छोटा चम्मच हल्दी
- 2 छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर
- 1 छोटा चम्मच धनिया पाउडर
- 100 ग्राम कटा टमाटर
- नमक स्वादानुसार
- 2 बड़ा चम्मच कटा धनिया
- 50 मिलीलीटर सरसों का तेल

पकाने का तरीका:

- आलू को पांसे के आकार में काट लें, धो लें और एक तरफ रख दें।
- एक पैन में तेल गरम करें और साबुत जीरा डालें। उन्हें चिटकने दें। अब इसमें कटी हुई अदरक डालकर थोड़ी देर भूनें। जब अदरक सुनहरा हो जाए तो टमाटर, नमक और सभी पाउडर मसाले डाल दें। मसाला को तेल की सतह पर तैरने तक पकाएं।
- अब इसमें आलू डालें और इसे 5 मिनट तक हिलाएं। पानी की आवश्यक मात्रा जोड़ें और पैन को ढँक दें।
- जब तक आलू काफी नरम होकर टूटने ना लगे, तब तक इसे पकायें। अब इसमें कटे धनिया के पत्ते डालें।

लसुनी पालक पनीर

गौरव लवनिया
एग्जीक्यूटिव शेफ़, शेरेटन होटल, नई दिल्ली

मसालों को पीसने से लेकर ताज़ी मौसमी सब्जियाँ खरीदने तक, मैंने हमेशा अपनी माँ के खाना बनाने के जुनून पर ध्यान दिया है।

सामग्री:

- 30 ग्राम घी
- 2 ग्राम जीरा
- 2 ग्राम साबुत लाल मिर्च
- 40 ग्राम पनीर, पांसे के आकार
- 1 ग्राम हींग
- 30 ग्राम कटा हुआ लहसुन
- 30 ग्राम कटा हुआ प्याज
- 3 ग्राम काली मिर्च पाउडर
- 2 ग्राम जीरा पाउडर
- 3 ग्राम नमक
- 450 ग्राम धोया और कटा हुआ पालक
- 100 ग्राम पालक प्यूरी

- 2 ग्राम चीरी हुई हरी मिर्च
- 10 ग्राम ब्राउन लहसुन
- 2 ग्राम अदरक जूलीन
- 8 ग्राम मक्खन

पकाने का तरीका:

- पालक को हल्का उबाल लें और इसे एक तरफ रख दें। एक फ्राइंग पैन में घी गरम करें और इसमें हींग और लाल मिर्च डालें। जब यह चटक जाये तो इसमें कटा हुआ लहसुन और भूरा लहसुन डालें। प्याज डालें और तब तक भूनें जब तक कि यह पारभासी न हो जाए। इसके बाद इसमें जीरा पाउडर, काली मिर्च और नमक डालें। इसमें कटे हुए पनीर और हलके उबले पालक और सॉट डालें। पालक प्यूरी डालकर 2 मिनट तक उबाल लें। चीरी हुयी हरी मिर्च और अदरक जुलिएन जोड़ें।
- अच्छी तरह से हिलायें और खाने के लिए परोसें। मक्खन और भूरे रंग के लहसुन के साथ गार्निश करें।

चैनसू
(उत्तराखंड शैली में उड़द)

सुदर्शन भंडारी

एग्जीक्यूटिव शेफ, इरोस होटल, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली

मेरी माँ मेरे जीवन भर के लिए एक प्रेरणा और प्रेरक रही हैं। उनकी रेसिपी मेरे दिल के बहुत करीब हैं। चैनसू एक नुस्खा है, जो मेरी माँ मेरी छोटी और कभी-कभी महत्वपूर्ण जीत के दौरान मेरे लिए पकाती थी। यह नुस्खा उनकी मीठी यादें दिलाता है, जिसे मैं हमेशा के लिए संजोकर रखूँगा।

सामग्री:

- आधा कप साबुत उड़द दाल
- आधा छोटा चम्मच धनिया पाउडर
- आधा छोटा चम्मच जीरा पाउडर
- आधा छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर
- 1/4 छोटा चम्मच हल्दी पाउडर
- 1/4 छोटा चम्मच साबुत काली मिर्च
- 2 छोटा चम्मच वनस्पति तेल
- 1-1/4 कप पानी
- 2 सूखी लाल मिर्च
- नमक स्वादानुसार

पकाने का तरीका:

- एक पैन गर्म करें और सूखी उड़द को कुछ मिनटों के लिए भूनें जब तक कि आपको सोंधी-सी की सुगंध न आ जाये। एक तरफ रख दें। एक बार जब यह ठंडा हो जाए, तो इसे एक सूखे मिश्रण में पीस लें। एक भारी बेस का पैन लें। वनस्पति तेल गरम करें और इसमें सूखी लाल मिर्च और काली मिर्च कॉर्न्स के साथ तड़का लगाएं। धनिया पाउडर, जीरा पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, हल्दी पाउडर, 2 बड़े चम्मच पानी के साथ नमक डालें और एक मिनट के लिए तलें। पीसा हुआ उड़द जोड़ें, इसे मिलाएं और फिर पानी जोड़ें। 20-30 मिनट के लिए एक मध्यम से कम लौ पर पकाएं, बीच-बीच में तब तक हिलाएं जब तक कि यह गाढ़ा न हो जाए। एक बार ऐसा हो जाने के बाद गैस को बंद कर दें और उबले हुए चावल के साथ गरमा-गरम परोसें।

पत्ता गोभी खीर

गौरव माथुर

कार्यकारी शेफ, वेलकम होटल, द्वारका

एक कायस्थ माथुर परिवार में जन्मे और पले-बढ़े, हमारे यहाँ एक परंपरा थी, सप्ताह में एक बार उपवास रखने की, अधिकतर मंगलवार को। हमारे उपवास के दौरान, मेरी दादी एक स्वादिष्ट और पौष्टिक खीर बनाया करती थी, जो कि लोहे और पोषक तत्वों से भरपूर हुआ करती थी।

सामग्री:

- कटी हुआ हरी गोभी - 500 ग्राम
- फुल क्रीम दूध - 1.5 लीटर
- चीनी - 200 ग्राम
- फूला हुआ कमल बीज - 20 ग्राम
- किशमिश - 20 ग्राम
- चरोली बीज (चिरौंजी) -10 ग्राम
- केसर का पानी -5 मिलीलीटर
- घी -15 एम एल

पकाने का तरीका:

- गोभी को ब्लैंच (हल्का उबालें) करें और पानी निचोड़कर एक तरफ रख दें।
- दूध उबाल लें। इसे 25-30 मिनट तक धीमी आंच में उबलने दें। इसमें बंदगोभी और चीनी डालें। इसे 10-12 मिनट के लिए और उबाल दें।
- घी में सॉटेड ड्राई फ्रूट्स के साथ खत्म करें।
- केसर के पानी से गार्निश करें और गरमा-गरम परोसें।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

District Wise TRF Contributions as on July 2021

(in US Dollars)

District Number	Annual Fund	PolioPlus Fund	Endowment Fund	Other Funds	Total Contributions
		India			
2981	11,223	486	0	135,135	146,844
2982	12,686	260	0	0	12,946
3000	177	11	0	0	188
3011	2,205	280	0	2,027	4,512
3012	10,907	3,734	19,000	0	33,641
3020	308	253	0	4,620	5,181
3030	2,218	0	0	0	2,218
3040	71	0	0	2,701	2,773
3053	565	0	0	0	565
3054	1,400	84	0	500	1,984
3060	6,042	28	0	47,014	53,084
3070	336	0	0	738	1,074
3080	2,486	154	0	0	2,640
3090	3,956	0	0	0	3,956
3100	4,157	0	0	0	4,157
3110	35	0	0	0	35
3120	2,167	0	0	0	2,167
3131	97,807	8,885	30,000	4,151	140,843
3132	5,832	137	5,000	0	10,969
3141	134,315	27	0	148	134,490
3142	27,709	105	0	24	27,838
3150	5,241	1,050	0	1,764	8,055
3160	4,120	321	17,264	0	21,704
3170	17,473	2,248	1,196	1,227	22,144
3181	1,113	0	0	0	1,113
3182	1,266	0	0	0	1,266
3190	20,286	3,266	0	0	23,552
3201	8,020	526	0	1,848	10,394
3203	2,944	1,070	2,072	119,060	125,147
3204	245	0	0	1,036	1,281
3211	10	280	0	0	290
3212	3,220	133	1,036	0	4,389
3231	3,263	28	0	0	3,291
3232	18,122	8,329	1,500	26,857	54,808
3240	9,101	267	0	401	9,769
3250	367	0	1,036	0	1,403
3261	2,183	14	0	0	2,197
3262	1,623	0	0	0	1,623
3291	1,865	39	5,541	0	7,444
India Total	**427,066**	**32,014**	**83,644**	**349,249**	**891,974**
3220 **Sri Lanka**	5,949	473	1,510	0	7,932
3271 **Pakistan**	308	316	0	1,155	1,780
3272 **Pakistan**	707	60	0	0	767
3281 **Bangladesh**	5,244	825	0	0	6,069
3292 **Nepal**	10,395	1,100	0	2,155	13,650
South Asia Total	**449,669**	**34,789**	**85,154**	**352,559**	**922,171**

*Figures may not be accurate as the system is being migrated to ERP platform.

Source: RI South Asia Office

Wordsworld

Books can be like a hockey team

Sandhya Rao

Random picks, varied styles, absorbing yarns… each uniquely examining the fundamental human need to belong.

We've been uplifted, and the icing on the cake was the calm, confident, graceful gold medal-winning demeanour of Neeraj Chopra. So young, so dignified in execution and victory. Then came news of some people 'celebrating' the defeat of the women's hockey team in the semi-final. They stood outside the Haridwar home of a player and hurled offensive remarks against the family, apparently 'protesting' the presence of dalits in the Indian team. Yet, this team is quintessential India: a representation of the myriad-hued multitude that is this nation.

The package of books laid out today is, in a way, like the Indian women's hockey team — each selection is unique, and together they convey a sense of belonging in different ways. Importantly, each voice sings its own song. *The Woman in the White Kimono* by Ana Johns, based on the true experiences of the author's father, unravels the story of the central character, Tori Kovac, whose father dies, leaving behind a life-changing letter for her: she has a half-sister in Japan. Tori's search for this sibling is the crux of this debut novel. Admittedly, it is not always great writing, but the story is emotional and evokes images of Japan that seem almost Indian. That's the thing about 'real' stories, even when fictionalised — they bring you home.

The second book — they've been listed in random order, no preferences intended -— is *The Dutch House* by Ann Patchett. Slow, unremarkable, emotionless, '*yaar*, nothing happens!' — these were some of the comments in our book club. But everybody agreed the writing was lucid. The book is named after the house in which the central characters live. The mother runs off to India, leaving bereft her husband and two children, Maeve and Danny in the care of housekeepers. Eventually, the father remarries, bringing Andrea and her two children into the narrative.

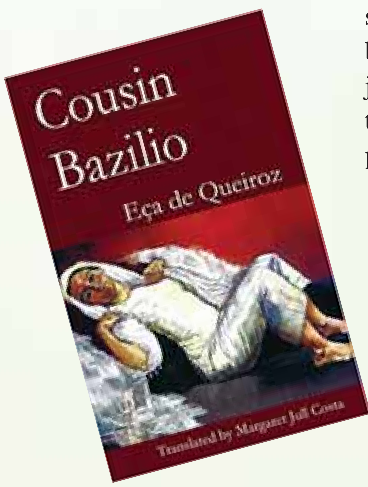

It's not as if Maeve and Danny particularly love their house, but to Andrea the house is a trophy and any previous thing connected to it, unpalatable. She orders M and D to leave. This is about as dramatic as the novel gets as it goes on to explore relationships: between people, between people and things; people and memories; the past and the present; between hope and expectation. The writing compels you to read every word and, especially if you have a 'house' in your personal history, reflect upon it and the stories that may lie hidden in its walls.

You wouldn't be off the mark if you thought 'Hamlet!' upon reading the name *Hamnet* by Maggie O' Farrell. This is a story inspired by Shakespeare's son who died young; four years later, Shakespeare wrote *Hamlet*. Rooted in fact, it dramatically reveals a broad canvas of sixteenth century England even as it tunnels deep into details so minute you hear every breath exhaled, feel the juice ooze from plums, hear the scratch of every word paper. Read for yourself: 'Hamnet starts awake, the mattress rustling beneath him. Something has woken him — a noise, a bang, a shout — but he doesn't know what. He can tell, by the long reaches of the sun into the room, it must be near evening. What is he

doing here, asleep on the bed? He twists his head and then he remembers everything. A form lies flat, next to him, head twisted to one side. Judith's face is waxen and still, a sheen of sweat making it glimmer like glass. Her chest rises and falls at uneven intervals. Hamnet swallows, his throat closed and tight. His tongue feels furred, ungainly, too large to fit in his mouth. He scrambles upright, the room blurring around him. A pain enters the back of his head and crouches there, snarling, like a cornered rat.'

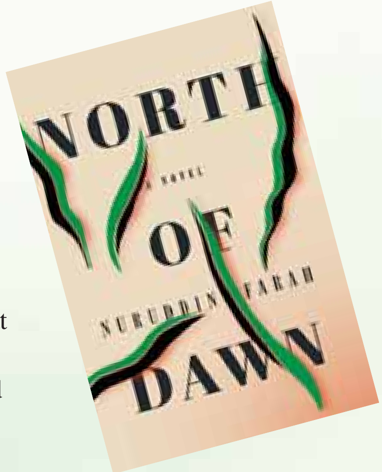

Nothing is known about the real Hamnet but he is heroed here, in 'a great work of imaginative recreation and a great story,' writes Dominic Dromgoole. 'It is also a moral achievement to have transformed that young child from being a literary footnote into someone so tenderly alive that part of you wishes he had survived, and *Hamlet* never been written.' In the end, you cannot help but wonder how on earth Maggie O'Farrell created this masterpiece.

Right now, though, I am under the spell of *North of Dawn* by Somali writer Nuruddin Farah: 'As his eyes move from the face of a Caucasian woman to a man with Middle Eastern features, and from a woman in a sari to an African man in an agbada, Mugdi is sad that scenes such as this, where a variety of races congregate at a public arena, are unavailable in Mogadiscio. As he watches the expressions on the faces of some of the Norwegians, he can spot some whose gentle features stiffen, turning ugly when they come face-to-face with a Muslim woman in full Islamic gear. Maybe a woman with a Muslim headscarf is seen as a threat, whereas a sari-wearing woman is viewed as unusual and fascinating in this part of the world. Mugdi remembers reading about a judge in the state of Georgia in the US who barred a woman with a headscarf from entering his court. Would the same judge turn away a Jewish man with a yarmulke or a nun in her habit?'

It is very much a story of our times, beset with conflicts and confusion particularly around ideas of faith and fundamentalism. Farah tackles the subject head-on by premising the story on the experiences of a Somali couple, Mugdi and Gacala, having escaped from troubles in their country, now well-adjusted to living in Oslo, Norway, with their two children. However, when their son grows up to become a jihadist, and dies in a terrorist attack, and they are forced to look after his wife and her two children, everything changes for them. As *The Oprah Magazine* observed, 'The political becomes personal in this beautifully affecting tale.' In tone, tale and telling, it's completely different from the other books laid out today.

The fifth book is a completely different cup of tea. This is *Cousin Bazilio* by the Portuguese novelist Eca de Queiroz, in English translation by Margaret Jull Costa. Although first published in 1878, it never feels dated. Richly descriptive, languorously sensuous, and exuding the languidness of siestas on humid afternoons, as in: 'Luiza yawned and stretched. It was such a bore having to get dressed! She would have liked simply to be dozing off in a pink marble bath full of warm, perfumed water! Or else to be rocking gently in a silken hammock, with all the windows closed, listening to music! She shook off one slipper and sat looking fondly at her small, milk-white foot with its tracery of blue veins, thinking about all kinds of things …'

In its own way, this tale parading cuckolds and mistresses, hypocrisy and deceit, blackmail and sentimentality, is also founded on a yearning to belong — to somebody, to a set, to high society. The characters materialise before your eyes and even if you have never visited Lisbon, the city comes alive.

Lucky you; so many books to choose from! What you read, how much, and when, is your privilege. What matters is that you take a shot. After all, like in sport, it doesn't matter if you win or lose, it's how you play the game.

The columnist is a children's writer and senior journalist.

Designed by Krishnapratheesh

अहोभाव का अद्भुत अमृत निर्मित करें

भरत और शालन सवुर

'कुछ भी आपको मामूली शारीरिक दर्द जैसी भावनात्मक समस्याओं से दूर नहीं रख सकता' स्नूपी का कहना है। यह सच है। आपने भी वैसा ही अनुभव किया होगा जैसा मैंने किया था ... एक खबर आती है कि आप जिस चचेरे भाई के साथ पले-बढ़े हैं वह कोविड होने के कारण अस्पताल में भर्ती है। एक घंटे बाद, आपको पीठ के निचले हिस्से में दर्द होता है और आपकी आवाज भारी सी हो जाती है। भावनाएं इस दुख से बच जाती हैं पर शरीर नहीं। आप क्या करते हैं? रिहैबिलिटेशन मेडिसिन के प्रोफेसर डॉ. जॉन ई. सरनो कहते हैं कि 'आपको क्या चिंतित कर रहा है, उस और अपने ध्यान को सचेतन रूप से एवं जबरदस्ती लगाएं' - इस मामले में अपने चचेरे भाई की सेहत पर।

गंभीर चिंता के कारण ऑक्सीजन की हल्की कमी हो सकती है जिससे शरीर के कमजोर हिस्सों में दर्द हो सकता है, लेकिन जब आप कहते हैं कि 'यह मुझे चिंतित कर रहा है' तब उस समय एक संदेश मस्तिष्क को जाता है - यह एक शारीरिक पीड़ा नहीं है बल्कि यह भावनात्मक है।' धीरे-धीरे, दर्द कम हो जाता है और फिर समाप्त हो जाता है।

समझ का खोल। हम अपनी भावनाओं को कवर नहीं कर सकते हैं लेकिन हम इनसे अपनी समझ/बोध के द्वारा निपट सकते हैं। जैसा स्वास्थ्य सलाहकार स्टीव ओजानिच कहते हैं कि 'धारणा के बदलते ही सत्य बदल जाता है'। आज के संदर्भ में यह बात बहुत महत्वपूर्ण है। हम सभी जानते हैं कि बहुत से लोग कोविड को संभालने या अपने प्रियजनों के खोने के भय से सतत परेशान हैं। एंटी-डिपरेशन दवाओं, ट्रैंक्विलाइजर, एंटी-साइकोटिक्स और एंटी-माइग्रेन दवाओं की बिक्री तेजी से बढ़ी है।

इस पर पूरी तरह से विश्वास करें: मैं स्वस्थ हूँ, मैं ठीक हूँ, मैं फल-फूल रहा हूँ। जैसा कि श्री योगानंद ने ठीक ही कहा है कि 'मन के घने अंधेरे में यदि आप रोशनी डालते हैं तो यह रूपांतरित हो जाता है' (नोट: यहां पर योगानंद मन के अंधकार पर चेतना के प्रकाश को डालने की बात कर रहे हैं और चेतना का प्रकाश मन के अंधेरों को रूपांतरित करता है), और रूपांतरण की प्रक्रिया एक आनंददायक प्रक्रिया है, शांति अशांति को हटा देती है, उपचार की अंतदृष्टि जानकारी की जगह ले लेती है और प्रेम भय को शांत कर देता है।

प्रेम को प्रेरक शक्ति बनने दें। जब भी आप किसी प्रतिरोध का अनुभव करें, किसी नकारात्मक भाव का सामना जो आपको रोकता है, तब धीरे से स्वयं से कहें, 'प्रेम को मेरी प्रेरक शक्ति बनने दो' अर्थात मैं प्रेम के द्वारा ही संचालित होऊंगा। बुद्धिमान व्यक्ति कहते हैं कि 'प्रेम शरीर में जाग्रत चेतना है और यह जाग्रत चेतना आप हैं।' यह सत्य अपनी इस विशालता के साथ आपको अपार ऊर्जा देगा और ये प्रभाव विद्युतीय (ऊर्जा से भरा) है।

जब प्रेम ही प्रेरक शक्ति होता है अर्थात जब प्रेम कर्ता बन जाता है तब उस समय आप अपनी चिंताओं और भय के भंवर में फंसे बिना अस्पताल में अपने चचेरे भाई के प्रति सहानुभूति रख सकते हैं। रूमी वादा करते हैं कि ''जिस क्षण आप अपनी परेशानियों को स्वीकार करते हैं, उसी क्षण द्वार खुल जाते हैं।'' आप एक बड़े परिपेक्ष्य में चीजों को देखने लग जाते हैं हम जो तस्वीरें देखते हैं अर्थात जीवन की चीजें, वे वास्तविक हैं, परन्तु फिर भी केवल ये वास्तविकता का एक हिस्सा ही होती हैं। एक व्यापक दृष्टि हमें अपने बारे में चिंता करने की स्थिति से बाहर ले जाती है और हमें एक अधिक संतुलित शांतिपूर्ण चित्त दशा की स्थिति में प्रवेश देती है।

किसी भी शारीरिक दर्द, थकान, मन की चिंता, मानसिक अवसाद को दूर करें जिससे आप गुजर रहे हैं। अपने को दोबारा जन्म दें अर्थात फिर से

अपने आप को ताजा करें। हर रात मानसिक धारणा के द्वारा एक अग्नि को निर्मित करें और अपने सभी भय आप इस अग्नि में डाल दें। यह नये दिन की तैयारी करने का एक शानदार तरीका है, जीवन का एक नया तरीका।

शरीर को ढीला छोड़ दें। शरीर को आराम में जाने से पहले शरीर को रिलैक्स करने की जरूरत होती है। कुछ प्राचीन परंपराओं का यह मानना है कि एक चक्र है जो सृष्टा और सृष्टि अर्थात निर्माता और सृजन का प्रतीक है। यह चक्र अपने आप में स्वयं स्थिर है और सृजन/सृष्टि की शक्ति/ऊर्जा इसकी परिधि पर गति करती है। इस चक्र की परिधि पर सब कुछ घूमता है - ऊर्जा/शक्ति, स्वास्थ, व्यवस्था - जो संतुलन के दूत होते हैं। अब चुपचाप (मानसिक रूप से) आप अपने शरीर के प्रत्येक हिस्से को रिलैक्स होने का आदेश दें - पैर की उंगलियों से लेकर सिर तक, या यूट्यूब पर योगनिद्रा मेडिटेशन की किसी रिकार्डिंग को सुनें, अपने शरीर को रिलैक्स करें अर्थात अपने शरीर को शिथिल छोड़ दें और फिर सो जाएं।

मन को शांत करें। मजेदार बात यह है कि जब मन थका हुआ महसूस करता है तो उसे आराम की आवश्यकता नहीं होती बल्कि इसे शांति की आवश्यकता होती है। विचार-प्रक्रिया अर्थात सोचने की क्रिया को बंद करने की आवश्यकता होती है, दूसरे शब्दों में - सोचना बंद करने की जरूरत होती है। लोगों को यह चिंता सताती रहती है कि उन्हें जो करना चाहिए था वह वे नहीं कर पाए, जो वह चाहते थे वह नहीं मिला, अपना वादा पूरा नहीं कर पाए और ऐसी ही 101 और बहुत सी चीजें, कि एक वायरस दुनिया भर में और मदद नहीं मिली। चिंता से इतनी शक्ति/ऊर्जा व्यय हो जाती है कि हम ठीक से बैठ नहीं सकते या अपने काम पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते हैं और इसके बजाय हम बेचैन होकर इधर-उधर घूमते रहते हैं और जिसके परिणामस्वरूप और भी अधिक थक जाते हैं।

मन को शांत करने का उत्रदायित्व लें और अपने मन (माइंड) को रिलैक्स करें। अपने सिर और गर्दन को सहारा देकर आराम से बैठ जाएं। धीमी गहरी सांस लें। 8 गिनने तक अपनी नाक से सांस अंदर लें और फिर 8 गिनने तक मुंह से सांस छोड़ें। जब आप सांस भीतर लें, आपका पेट फूलना चाहिए और सांस छोडते समय पेट को भीतर आने दें। ऐसा तब तक करें जब तक आप आराम महसूस न करें। यदि बीच में कोई विचार आता है तो इससे अपना तादात्मय बनाए बिना इन्हें (विचार को) आने एवं जाने दें। यह सहज रूप से करना है, किसी भी विचार से तादात्मय नहीं बनाना है, बस बैठना है, शरीर को आराम देते हुए, मन को शांत रखते हुए।

धीरे-धीरे आप अपने भीतर एक हल्कापन, खुलापन और एक विशालता का अनुभव करेंगे। आप एक प्रेरणा महसूस करेंगे ... इन निर्देशों का पालन करें। आप अपने आप को स्वेच्छापूर्वक इन कार्यों को करता हुआ पाएंगे। हैरानी की बात है कि ये 101 चीजें अब घट कर 10 हो गईं और जब आप एक टास्क पूरा कर लेंगे और तब यह 10 चीजें जादूई रूप से घट कर दो हो जाएंगी, और अब सब कुछ करने योग्य जैसा लगता है, जीवन जीने योग्य हो गया लगता है। आप अच्छे हैं और जीवन अच्छा हो गया है।

आत्मा को सबल बनाएं। अक्सर आत्मा थक जाती है और उसे लगता है कि कोई प्रगति नहीं हो रही है और दुनिया हमारे खिलाफ है। यह इस भावना को जन्म देता है कि कभी पर्याप्त नहीं होता। पैकेट में पर्याप्त बिस्कुट नहीं हैं। बैंक में पर्याप्त पैसा नहीं है। लोगों में पर्याप्त अच्छाई और कुशलता नहीं है। कृपया समझें कि यह अव्यवस्थित मन से आता है जो आत्मा को दीनहीन बनाता है अर्थात कमजोर कर जाता है। ऐसे मन-मस्तिष्क को दैनिक हिसाब-किताब, बिल चुकाने, दैनिक खाने-पीने, व्यायाम करने, सोने-जागने जैसी चीजों में व्यवस्थित करने में व्यस्त रखने की जरूरत है। जब दैनिक जीवन में एक व्यवस्था आती है तब आत्मा मजबूत होती है।

आत्मा को एक प्रेरणप्रद रामबाण अहोभाव की आवश्यकता है अर्थात आत्मा एक आभार, कृतज्ञता की भावना चाहती है। कृतज्ञता की भावना उस अच्छे जीवन की पहचान है जिसका अनुभव हम कर रहे हैं। अहोभाव की भावना हमारी अनुभूति को बोझ से आर्शीवाद में और असंतोष से प्रशंसा में बदल देती है। लॉकडाउन के समय के दौरान, सारे समय घर के अंदर रहने वाले कई शिकायतकर्ताओं को स्वतंत्रा के मूल्य को समझने का मौका मिला, जिस दिन वह बाहर सूर्य की रोशनी, बारिश में बिना किसी भय के जाएंगे, उसी दिन वह अहोभाव अर्थात आभारी होने के अर्थ को समझेंगे। यह ध्यान देने योग्य बात है कि आर्चबिशप और दलाईलामा हर उस व्यक्ति को हमेशा धन्यवाद देते हैं जिनसे वह मिलते हैं। आर्चबिशप भी हर नए अनुभव का स्वागत एवं आभार 'वंडरफुल!' जैसे शब्द से हार्दिक रूप से करते हैं। ब्रदर डेविड स्टैंनडल-रास्ट, एक भिक्षु इसे सही पाया है कि 'यह खुशी नहीं होती जो हमें आभारी बनाती है बल्कि यह कृतज्ञता/अहोभाव का भाव है जो हमें खुशी प्रदान करता है।

दूसरी भावना: किसी आरामदायक सतह पर खड़े हो जाएं जहां हर तरफ पर्याप्त जगह हो। हर हाथ में पांच पौंड आलू का थैला पकड़ कर अपनी बाहों को सीधे फैलाएं और ऐसी ही स्थिति में रहें, जब तक आप रह सकते हों। 1 मिनट के समय तक पहुंचने की कोशिश करें और इसके बाद आराम करें। हर दिन आप यह पाएंगे कि आप इस स्थिति को और अधिक समय तक बनाए रख सकते हैं।

'कुछ हफ्तों के बाद ही आप 10 पौंड आलू के बैग तक उठा सकते हैं। फिर 50 पौंड आलू के बैग उठाने की कोशिश करें और अंत में उस बिंदु तक पहुंचने का प्रयास करें जहां आप प्रत्येक हाथ से 100 पौंड आलू के बैग उठा सकते हैं और आप अपनी बाहों को पूरे 1 मिनट से अधिक समय तक सीधा रख सकते हैं। (''मैं'' इस लेवल पर हूँ' फारवर्डर कहते हैं)

'जब आप इस लेवल के प्रति आश्वस्त हो जाएं तब हर बैग में आलू डालें'

क्या आप हँस रहे हैं? यह आध्यात्मिक-टोनर (आत्मा को विकसित करने वाला) है जिसकी हम सभी को जरूरत है।

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू *आर* नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

रोटरी वर्ष 2020-21 के लिए दक्षिण एशिया से अनुदान संचयन की झलकियां:

- भारत ने अब तक का सर्वाधिक 22.3 मिलियन यूएस डॉलर का योगदान एकत्रित किया और शीर्ष दानकर्ता देशों की सूची में तीसरे स्थान पर पहुंच गया।

Arch Klumph Society members from South Asia region for Rotary year 2020–21

Taizoon Fakhruddin Khorakiwala and Edith Khorakiwala	(RID 3141)
Vinay and Rashmi Kulkarni	(RID 3131)
Banoo Jafer and Jafer Noman Sura	(RID 3141)
Rauzat and Saif Qureishi	(RID 3141)
Suresh and Kiran Poddar	(RID 3054)
M Ambalavanan	(RID 3232)
Ajay and Rooma Dubey	(RID 3131)
Khandkar Shafiqul Haque	(RID 3281)
Mituli Mahbub Hossain	(RID 3281)
Nikunj Pravin Jhaveri and Kanan Jhaveri	(RID 3141)
Ashok Kumar Mahansaria	(RID 3141)
Ashok Kumar and Bindu Mehra	(RID 3141)
Narendrakumar and Bhavani Mehta	(RID 3060)
Nitin and Harsha Mehta	(RID 3141)
PNB Murugadoss and Devi M	(RID 3212)
Dipti Ranjan and Indrani Patnaik	(RID 3261)
Ramesh and Asha Poddar	(RID 3141)
K R Ravindran and Vanathy Ravindran	(RID 3220)
Muhammad and Dilara Ajaz Saya	(RID 3271)
Srinivas T	(RID 3190)
S V Veerramani and Radha Veerramani	(RID 3232)
Irena Malabika and Tipu Munshi	(RID 3281)
Atos Global IT Solutions and Services Private Limited	(RID 3142)

- दक्षिण एशिया से वार्षिक कोष दान में पिछले रोटरी वर्ष की तुलना में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- TRF में कुल योगदान के मामले में आठ मंडलों ने 1 मिलियन डॉलर का आंकड़ा पार किया है और दुनिया के शीर्ष 50 मंडलों की सूची में जगह बनाई है।
- दक्षिण एशिया से कुल 23 नए AKS सदस्य (स्तर परिवर्तन सहित) थे और 16 भारत से थे।
- रोटरी वर्ष 2020-21 में दक्षिण-एशिया से 73 प्रतिशत क्लबों ने TRF में योगदान दिया है।
- दक्षिण एशिया में दानकर्ताओं की भागीदारी 33 प्रतिशत रही।

Districts from South Asia in top 50 districts worldwide

District	2020–21* Total Contribution in US $	Worldwide Rank
3141	$3,525,764	1
3131	$1,760,573	10
3232	$1,739,390	11
3190	$1,320,244	27
3201	$1,292,207	29
3060	$1,208,745	34
3281	$1,024,779	44
3011	$1,019,684	47

*Interim unaudited update

RY 2020–21* Top 5 Giving Clubs from South Asia

District	Club Name	Total TRF Contribution in US $
3131	Pune Central	$540,501.36
3141	Bombay Airport	$437,577.44
3141	Bombay North	$350,430.47
3141	Bombay Queen City	$327,943.85
3141	Queen's Necklace	$311,927.43

*Interim unaudited update

On the racks

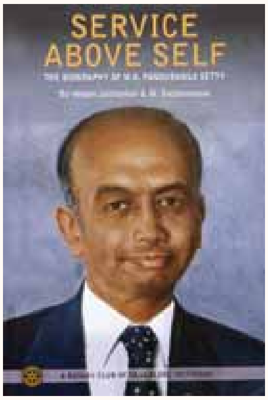

Service Above Self – The Biography of M K Panduranga Setty

Author : **Vedam Jaishankar**
M Satyanarayan
Publisher : **Vimal Publication**
Pages : **292**

With a foreword by RI President Shekhar Mehta, this book is an interesting account of the life of PRID Panduranga Setty. From his first trip to Switzerland as a nervous boy to becoming a well-known educationist and industrialist of Karnataka, this book narrates the story of Setty, his successful career and journey in the Rotary world. Over the years he learnt to appreciate the beauty of nature, followed an arduous work ethic, and took up charitable work. The book gives readers a ringside view of his life as a member of RC Bangalore for the last 54 years, his achievements and the service he has rendered. It also highlights how he developed a strong network of friends and rich experiences which aided him in doing good in the world.

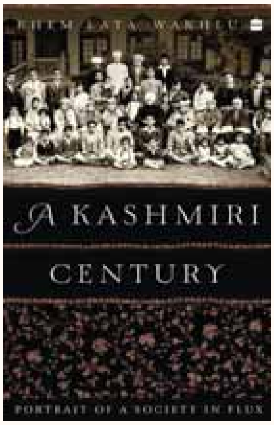

A Kashmiri Century

Author : **Khemlata Wakhlu**
Publisher : **HarperCollins**
Pages : **356; ₹388**

Written by former cabinet minister Khemlata Wakhlu, a Kashmiri, this book delves into the lives of Hindus and Muslims living in the valley. We get a glimpse of the Kashmir that Khemlata grew up in, its ethos and culture over several centuries. Having been ruled by kings from diverse faiths and cultures, the region has undergone various cycles of social, cultural and religious changes which have impacted the life of the Kashmiris. The stories in the book are an insight into Kashmiri society, its evolution and how the people dealt with the valley's bitter past. It highlights the natural beauty of the region, its contributions to Indian literature and its vibrant flora and fauna. The stories are based on the author's personal experiences and her intimate understanding of what it means to be a Kashmiri-speaking native.

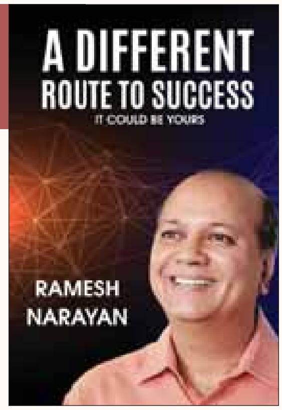

A Different Route to Success

Author : **Ramesh Narayan**
Publisher : **Notion Press**
Pages : **110; ₹299**

Giving readers a peek into his professional life, the author examines the factors that contributed to his success in the advertising field. The founder of Canco Advertising was quite active in this field for well over two decades, before retiring at 50 for good. The author narrates anecdotes from his own life making the book an interesting read. He elaborates on what success means to him and the journey that took him to where he is today. Genius is not the only important thing that determines a person's success, Narayan states, and explains that practical learning is critical to attain professional goals. According to him there is "no one formula for success. Nor one route to this holy grail." The self-help book tells his success story in simple language with a mix of interesting anecdotes, honest insights and a different look at success.

Compiled by Kiran Zehra

रोटरी क्लब मन्नारगुड़ी मिडटाउन - रो ई मंडल 2981

तिरुमेनी झील के पास क्लब द्वारा गोद लिए गए गांव में एक स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया, जिसमें नारीकुरवा नामक एक बेघर जनजाति के 200 लोगों की विभिन्न बीमारियों के लिए जांच की गई।

रोटरी क्लब कुंडली - रो ई मंडल 3012

अध्यक्ष नीलम सहगल के नेतृत्व में क्लब के सदस्यों ने कुंडली औद्योगिक क्षेत्र में 50 पौधे लगाए और ट्री गार्ड से उन्हें सुरक्षित किया।

रोटरी क्लब करूर - रो ई मंडल 3000

कस्तूरीबाई म्यूनिसपल मैटर्निटी हॉस्पिटल में ₹26,000 के चिकित्सीय उपकरण दान किए गए। डॉक्टर और कोरोना कर्मचारीयों को सम्मानित किया गया।

रोटरी क्लब नासिक गोदावरी - रो ई मंडल 3030

20 महिलाओं की घरों में सिलाई इकाइयां और ब्यूटी पार्लर जैसे छोटे व्यवसाय स्थापित करने में मदद करने के लिए ₹21,000 तक का ब्याज मुक्त सूक्ष्म ऋण दिया गया।

रोटरी क्लब दिल्ली खूबसूरत - रो ई मंडल 3011

इस अखिल महिला क्लब ने लेप्रसी सेंटर, लाजपत नगर, में 120 वंचित महिलाओं को सैनिटरी पैड, सौंदर्य प्रसाधन और आयुर्वेदिक दवाएं वितरित कीं।

रोटरी क्लब जयपुर बापु नगर - रो ई मंडल 3054

₹1.7 लाख की लागत वाले चिकित्सा उपकरण और बिजली के उपकरण क्लब के RCC के माध्यम से मानपुर मचेरी गांव में एक पीएचसी को दान किये गए। क्लब के अध्यक्ष नरेंद्र मल माथुर और उनके परिवार ने इस परियोजना को प्रायोजित किया।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब पठानकोट मिडटाउन - रो ई मंडल 3070

क्लब ने 2 दिन की बच्ची के ऑपरेशन के लिए ₹50,000 का योगदान दिया, जो जसवाल चिल्ड्रन हॉस्पिटल, पठानकोट, में एक अल्प विकसित भोजन नली के साथ पैदा हुई थी। शिशु की हालत ठीक है।

रोटरी क्लब संस्कृति मुरादाबाद - रो ई मंडल 3100

अपोलो लेजर नेत्र अस्पताल के एक नेत्र शिविर में लगभग 90 रोगियों की जांच की गई। रोटेरियन डॉ पल्लव अग्रवाल ने आंखों की जांच की। आठ मरीजों की मोतियाबिंद की नि:शुल्क सर्जरी की जाएगी।

रोटरी क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन - रो ई मंडल 3080

उच्च जोखिम वाली गर्भावस्था के लिए 200 से अधिक गर्भवती माताओं की रक्त शर्करा, रक्तचाप और अन्य मापदंडों के परीक्षण के लिए जांच की गई। क्लब अध्यक्ष सलिल चोपड़ा ने उस दिन प्रसव कराने वाली 25 माताओं को सूखा राशन दिया।

रोटरी क्लब आगरा नॉर्थ ईस्ट - रो ई मंडल 3110

नए रोटरी वर्ष को चिह्नित करने के लिए गुरु का ताल गुरुद्वारा, सिकंदरा, में 200 से अधिक पेड़ लगाए गए।

रोटरी क्लब श्री गंगानगर सिटी - रो ई मंडल 3090

झऊः विजय गुप्ता ने रोटरी क्लब कैपालेबा, ऑस्ट्रेलिया, के सहयोग से एक एम्बुलेंस (वैश्विक अनुदान: ₹25 लाख) का उद्घाटन किया। IPP शैलेश गोयल, क्लब अध्यक्ष संजीव गर्ग और परियोजना अध्यक्ष भानु प्रकाश गर्ग ने परियोजना की सफलता में योगदान दिया। ऊः परवीन जिंदल इस मौके पर मौजूद थे।

रोटरी क्लब लखनऊ बरादरी - रो ई मंडल 3120

लगभग 50 सहवासियों वाले एक अनाथालय शिशु बाल गृह में बच्चों को कपड़े और खिलौने वितरित किए गए।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब गुन्टूर विकास - रो ई मंडल 3150

क्लब के सदस्यों ने इलाके में हरियाली लाने के लिए पौधरोपण किए। इस पहल में कई स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

रोटरी क्लब बैंगलोर ईस्ट - रो ई मंडल 3190

ऑनलाइन शिक्षण में मदद करने के लिए सरस्वती विद्या निकेतन हाई स्कूल, डोमासांद्रा, और स्वामी विवेकानंद हाई स्कूल, नेरालुर, में शिक्षकों को लैपटॉप दान किए गए। इसके अलावा, छात्रों को 550 भोजन किटें (₹3.85 लाख) वितरित की गई।

रोटरी क्लब अडोनी - रो ई मंडल 3160

क्लब ने दो मरीजों के लिए मोतियाबिंद ऑपरेशन प्रायोजित किया। 10 वंचित महिलाओं को घर से स्थायी आय अर्जित करने में मदद करने के लिए ₹30,000 की सिलाई सामग्री दी गई।

रोटरी क्लब उदुमलपेट - रो ई मंडल 3203

रोटरी हाउस में आयोजित एक कोविड टीकाकरण शिविर में लगभग 330 लोगों को टीका लगाया गया। परियोजना ने आसपास के क्षेत्र में रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि की।

रोटरी क्लब हुबली विद्यानगर - रो ई मंडल 3170

शहर में तीन स्थानों पर 60 सब्जी विक्रेताओं को रोटरी के लोगो वाली छतरियां वितरित की गईं। परियोजना की लागत ₹15,000 आई।

रोटरी क्लब तिरुनेलवेली ट्विन सिटी - रो ई मंडल 3212

SCAD प्राइमरी स्कूल में आयोजित कोविड टीकाकरण शिविर में लगभग 60 लोगों को टीका लगाया गया। तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री च् ॠ रामचंद्रन के समान दिखने वाले एक व्यक्ति ने अपनी हरकतों से लोगों को आकर्षित किया।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब वेल्लोर नॉर्थ - रो ई मंडल 3231

कॉलेज प्रधानाध्यापक और NCC छात्रों के सहयोग से ऑक्सिलियम कॉलेज, वेल्लोर, के परिसर में पौधे रौपे गए।

रोटरी क्लब राउरकेला क्वीन्स - रो ई मंडल 3261

क्लब ने RCC स्वयंसेवी संजुक्ता बिंदू बारला की मदद से शहर से 30 किलोमीटर दूर स्थित बिरकेरा गांव में फलदार और औषधीय पौधों सहित 300 पौधे लगाए।

रोटरी क्लब बोंगईगांव - रो ई मंडल 3240

डांगटोल गांव स्थित कृपल्या चाइल्ड केयर इंस्टीट्यूट के परिसर में पौधे लगाए गए। निस्सहाय बच्चों ने रोटेरियनों से बातचीत कर नृत्य प्रस्तुत किया।

रोटरी क्लब भूवनेश्वर मेट्रो - रो ई मंडल 3262

तुरंत पकाये जा सकने वाले नाश्ते के पैकेटों के अलावा, कोविड से संबंधित उपकरण जैसे ऑक्सीमीटर, नेब्यूलाइज़र, इनहेलर और दोबारा इस्तेमाल की जा सकने वाली PPE किटें शहर और उसके आसपास स्थित पांच अनाथालयों में दान की गई।

रोटरी क्लब जमशेदपुर मिडटाउन - रो ई मंडल 3250

सुविधाओं से वंचित छात्राओं के स्कूल प्रेम ज्योति प्रांगण में शिक्षकों को मेंस्ट्रुअल कप दान किए गए। मंडल अध्यक्ष (नई पीढ़ी) सिमरन सागू और रोटेरियन डॉक्टर रेणुका चौधरी ने इसकी पर्यावरण अनुकूल विशेषताओं पर बात की।

रोटरी क्लब गीतांजलि कोलकाता - रो ई मंडल 3291

साउथ 24 परगना जिले के अमरतला गाँव और काजला आदिवासी क्षेत्र, बरसात तहसील, में स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए गए, जिसमें 250 से अधिक ग्रामीणों की विभिन्न बीमारियों के लिए जांच की गई। दवाइयाँ भी वितरित की गई।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

LBW

यातायात और पार्किंग की समस्याओं से निपटने के लिए ड्राइवर

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

दुनिया के अधिकांश हिस्सों में अपने समकक्षों की तुलना में, भारत का मध्यम वर्ग अपने पास उपलब्ध सस्ती घरेलू मदद के कारण काफी आराम से रहता है। यह सच है कि अब यह मदद पूर्णकालिक नहीं होती है जैसी कि पहले के समय में होती थी। अब यह 90 प्रतिशत पार्ट-टाइम हो गई है। इसी संदर्भ में पिछले महीने मैंने माली की समस्या के बारे में लिखा था। अब वो दिन नहीं रहे जब बगीचे इतने बड़े होते थे कि आपको पूर्णकालिक माली की जरूरत पड़ती थी। अब केवल कार ही एक ऐसी चीज़ है जिसे एक पूर्णकालिक ड्राइवर की आवश्यकता होती है, फिर चाहे कार का आकार कैसा भी हो। इसलिए मैं जिन लोगों को जानता हूँ उनमें से अधिकांश के पास एक ड्राइवर है, न केवल इसलिए कि उनके पास पैसा है या ट्राफिक बहुत भयानक है, बल्कि इसलिए भी कि वे बूढ़े है और बूढ़े हो रहे है, और सबसे बढ़कर, पार्किंग बहुत बड़ी समस्या है। सच में ड्राइवर पार्किंग अनुचर के रूप में अधिक उपयोगी होते है। मुझे अक्सर आश्चर्य होता है कि अधिकतर मॉल, शॉपिंग स्ट्रीट और अस्पतालों में ऐसे परिचारकों को नियुक्त किए जाने की पांच सितारा होटल प्रणाली का पालन क्यों नहीं किया जाता। जब आप इस पर विचार करते है, तो ऑनलाइन खरीदारी का एक प्रमुख कारण यह है कि जब आप खरीदारी करने जाते है तो आपको पार्किंग की जगह नहीं ढूंढनी पड़ती। और स्थान एवं दिन के समय के हिसाब से पार्किंग शुल्क भी ₹50 से ₹200 प्रति घंटे तक हो सकता है।

मैंने 20 साल पहले गाड़ी चलाना बंद कर दिया था जब मेरी एक डॉक्टर चचेरी बहन ने मुझे समझाया कि आधे घंटे से अधिक समय तक गाड़ी चलाने से रक्तचाप पर क्या असर पड़ता है। उसने मुझे बोला कि जब मैं 45 मिनट की दूरी पर स्थित अपने ऑफिस से वापस आऊँ तो अपने रक्तचाप को नापूँ। अब यह 110 मिनट की दूरी पर है। तो एक बार सोमवार-शुक्रवार, मेरी पत्नी जो किसी भी डॉक्टर की तरह ही मुझे यह बताती रहती है कि क्या खाना-पीना है, ने इसे मापा। और जैसा कि मेरी चचेरी बहन ने भविष्यवाणी की थी, यह बहुत अधिक था। चूँकि मैं एक दिन में लगभग दस सिगरेट पीता था, मेरी पत्नी ने एक फरमान जारी किया: हम एक ड्राइवर को नियुक्त करेंगे।

हमारे लिए काम करना शुरू करने के दो हफ्ते बाद मेरा रक्तचाप फिर से जाँचा गया। यह सामान्य था। इसलिए तब से मैंने गाड़ी नहीं चलाई, भले ही अब इसकी कीमत 20 गुना ज्यादा है, 1,000 प्रति माह से 20,000 तक। लेकिन हमारे परिवार की कमाई के प्रतिशत के रूप में यह राशि वास्तव में कम हो गई है, भले ही अब मैं सेवानिवृत्त हो गया हूं और मेरी आय आधी हो गई है। जाहिर है, ड्राइवरों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ी है।

यह केवल ड्राइविंग कौशल में कमी की बात नहीं है; इन लोगों को कार के कलपुर्जों की कोई जानकारी नहीं है।

यह ठीक भी है अगर आप इसे केवल आर्थिक दृष्टिकोण से देखते है। लेकिन हमेशा की तरह - मोबाइल फोन नेटवर्क एक उत्कृष्ट उदाहरण है - जब आपूर्ति बहुत तेजी से बढ़ती है तो गुणवत्ता में बहुत तेजी से गिरावट आती है। यह केवल ड्राइविंग कौशल में कमी की बात नहीं है; इन लोगों को कार के कलपुर्जों की कोई जानकारी नहीं है। इसलिए पिछले 20 वर्षों में हम छह ड्राइवर रख चुके है, जिनमें से प्रत्येक अपने पिछले ड्राइवर की तुलना में बदतर होते हुए भी अधिक कमाई कर रहे है। हमारा वर्तमान ड्राइवर काफी अच्छा ड्राइव करता है या मेरे द्वारा सामने की पैसेंजर सीट से लगातार टोकने की वजह से यह सुधार आया हो। लेकिन उसे इसकी कोई जानकारी नहीं थी कि कार कैसे काम करती है। शुक्र है कि वह अब एक टायर बदल सकता है, लेकिन यह भी तभी हो पाया जब हमने इसके लिए पैसे देकर उसे एक वर्कशॉप भेजा।

मैंने इसे अपनी पत्नी को बताया, जो एक प्रोफेसर के रूप में अपने छात्रों की गिरती गुणवत्ता से निपटने हेतु अभ्यस्त हो गई है। उसने अपनी भौंहें चढ़ाकर पूछा, क्या अब ऐसा पत्रकारों के मामले में नहीं हो रहा है? आप पत्रकार लोग केवल गूगल करते है और 20 साल पहले की तुलना में अब बहुत कम काम करते हुए कट और पेस्ट करके अधिक कमाई करते है।

वह हमेशा की तरह, इस मुद्दे की जड़ तक पहुंच गई थी - कि मीडिया वालों और ड्राइवरों के बीच कोई अंतर नहीं बचा। मैंने अब घरेलू सहायिका के बारे में शिकायत करना बंद करने का फैसला किया है। ■

संक्षेप में

टॉम डैले अपने स्वर्ण पदक के लिए एक पदक-केस बुनते हैं।

टोक्यो ओलंपिक में सिंक्रोनाइज़्ड 10 मीटर प्लेटफॉर्म डाइविंग में गोल्ड जीतने के बाद एलजीबीटीक्यू आइकन टॉम डैले को महिलाओं के 3 मीटर स्प्रिंगबोर्ड फाइनल को देखते समय बुनाई करते हुए देखा गया। इस दौरान लाइव एक्शन देख रहे स्टार गोताखोर की तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो गईं। आधिकारिक ओलंपिक ट्विटर अकाउंट द्वारा शेयर किए गए डैले की बैंगनी धागे में बुनाई करनेवाली इस तस्वीर को एक दिन में 1.6 लाख से अधिक लाइक्स मिले। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट जिस पर 4.2 लाख से ज्यादा फॉलोअर्स हैं, में अपने ओलिंपिक गोल्ड मेडल के लिए बुने गए छोटे ऊनी पाउच की एक झलक शेयर की।

लुप्तप्राय सूची में सम्राट पेंगुइन

सम्राट पेंगुइन को बचाने के एक प्रयास में यूएस फिश एंड वाइल्डलाइफ सर्विस (यूएसएफडब्ल्यूएस) ने प्रस्ताव दिया है कि इन प्रजातियों को लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम के तहत खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया जाए। हालांकि यह प्रजातियां संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर नहीं पाई जाती हैं, परंतु लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम के तहत एक सूची संघीय एजेंसियों को उनके निवास स्थान में गतिविधियों से नुकसान को कम करने में मदद करेगी, उदाहरण के लिए मछली पकड़ने जैसी गतिविधि। यूएसएफडब्ल्यूएस अध्ययन से पता चलता है कि वर्तमान ऊर्जा प्रणाली के तहत जलवायु मॉडल द्वारा अनुमानित दर पर समुद्री बर्फ की गिरावट पेंगुइन कालोनियों को नाटकीय रूप से कम कर देगी जिससे वे 2100 तक अर्ध-विलुप्त हो जायेंगे।

कोविड टीकाकरण लें, जेनिफर एनिस्टन का आग्रह

हॉलीवुड एक्ट्रेस जेनिफर एनिस्टन ने इंस्टाग्राम पर अपने 37.7 मिलियन फॉलोअर्स से मास्क पहनने की वकालत की और उनके टीकाकरण की स्थिति को लेकर कुछ लोगों के साथ संबंधों में कटौती की है। यह कहते हुए कि यह एक ''वास्तविक शर्म की बात है, उन्होंने कहा, ''मेरी साप्ताहिक दिनचर्या में कुछ लोग जिन्होंने इनकार कर दिया है'' या खुलासा नहीं किया है (कि उन्हें टीका लगाया गया था या नहीं) और यह काफी दुर्भाग्यपूर्ण है।'' *'इन-स्टाइल'* पत्रिका के साथ एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि टीकाकरण ''आपका नैतिक और पेशेवर दायित्व है। यह मुश्किल है क्योंकि हर कोई अपनी राय का हकदार है - लेकिन बहुत सारी राय डर या प्रचार के अलावा किसी भी चीज पर आधारित नहीं लगती है।''

पार्किंसंस के इलाज के लिए नया हाइड्रोजेल

ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय (एएनयू) ने फ्लोरी इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंस एंड मेंटल हेल्थ के सहयोग से एक नया हाइड्रोजेल विकसित किया है जो पार्किंसंस रोग के उपचार में मदद कर सकता है। प्राकृतिक अमीनो एसिड से बना जेल मस्तिष्क में स्टेम कोशिकाओं को सुरक्षित रूप से स्थानांतरित करने के लिए एक प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करेगा और जीडीएनएफ (ग्लियल सेल लाइन-व्युत्पन्न न्यूरोट्रॉफिक कारक) नामक विकास-सक्षम प्रोटीन जारी करके क्षतिग्रस्त ऊतक का पुनर्निर्माण करेगा। लागत-प्रभावी तकनीक को बड़े पैमाने पर निर्माण करना आसान कहा जा रहा है और जल्द ही नैदानिक परीक्षणों से गुजर सकता है।

समुद्र के पानी का परीक्षण करने के लिए सौर-बोय

चेन्नई के नेशनल सेंटर फॉर कोस्टल रिसर्च (एनसीसीआर) ने पुडुचेरी के तट पर एक हाई-टेक बोय लगाया है। सेंसर के साथ सुसज्जित, बोय स्वचालित रूप से एक कंप्यूटर मॉडल के माध्यम से समुद्र में ऑक्सीजन, पानी का तापमान, चालकता (लवणता), गहराई, नीले-हरे शैवाल, मैलापन, पीएच और क्लोरोफिल के स्तर को मापेगा और संचारित करेगा और इसकी गुणवत्ता रीडिंग तट के पास किसी के भी द्वारा स्मार्टफोन ऐप के माध्यम से देखी जा सकती है। तट से 1.5 किमी की दूरी पर लंगर किया हुआ और सौर ऊर्जा से चलने वाला यह बोय, लहर की गति और धाराओं की दिशा के अलावा वायुमंडलीय तापमान, आर्द्रता, हवा की गति और दिशा का भी अध्ययन करेगा। यह बोय छह मीटर ऊंची लहरों सहित हर मौसम का सामना कर सकता है।

किरण ज़ेहरा द्वारा संकलित; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा।

Regn. No. TN/CCN/359/2021-2023 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23 | issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on the first week of every month

ADVT.

www.iisuniv.ac.in

IIS (deemed to be UNIVERSITY) JAIPUR

Admissions Open 2021-22

For UG/PG/Ph.D./Professional programmes

Option-1 : Apply Offline
Visit our Campus between 9.30 am & 4.00 pm on all working days

Option-2 : Apply Online
https://onlineadmission.iisuniv.ac.in/
Direct Admission for **UG/PG & Professional** programmes
Admission to **Ph.D.** programmes through **Research Entrance Test (RET)**

Psychometric Testing available for Vocational & Career Counselling
https://onlineadmission.iisuniv.ac.in/node/3016

FOR ACADEMIC COUNSELLING &/OR ANY SPECIFIC QUERIES :
9358819994 ARTS & SOCIAL SCIENCE | 9358819995 SCIENCE
9358819996 COMMERCE & MANAGEMENT | or mail at : admissions@iisuniv.ac.in

FOR GENERAL ENQUIRY : +91 141 2397906-07, +91 141 2400160, 2401008

UNDERGRADUATE PROGRAMMES
- **B.A.**
- **B.A. Hons.**
- **B.A.** (Journalism and Mass Communication)
- **B.F.A.** (Applied Art, Painting, Sculpture)
- **B.B.A.**
- **B.C.A.**
- **B.Com.**
- **B.Com. Hons.**
- **B.Sc.**
- **B.Sc. Hons.**
- **B.Sc. Hons.** (Home Sc.)
- **B.Sc. Hons.** (Multimedia & Animation)
- **B.Sc. Fashion Design**
- **B.Sc. Jewellery Design & Technology**

INTEGRATED COURSES
- **B.A. B.Ed.***
- **B.Sc. B.Ed.***

*Approved by NCTE

SPECIALIZED PROGRAMMES
- **B.Com. Hons.** (Proficiency in Chartered Accounting/ Proficiency in Company Secretaryship) Specialized programmes and separate academic calendars for aspirants of CA & CS.
- **B.Com. Hons.** (Applied Accounting and Finance) Accredited by ACCA, UK.

SPECIALIZED CERTIFICATE PROGRAMMES
- **ICAI sponsored Certificate** programme for Accounting Technicians.
- **University of Cambridge,** U.K.'s Business English Certificates Tests of English

BACHELOR OF VOCATION (B.VOC.) PROGRAMMES
- **B.Voc.** (Office Management and Secretarial Practices)
- **B.Voc.** (Banking and Financial Services)
- **B.Voc.** (Entrepreneurship and Business Innovation)
- **B.Voc.** (Digital Marketing)

*Approved by UGC

POSTGRADUATE PROGRAMMES
- **M.A.**- Economics, English, French, Sociology, Geography, History, Political Science, Mathematics, International Relations, Public Administration, Psychology, Statistics
- **M.Sc.**- Biotechnology, Botany, Chemistry, Economics, Environmental Science, Geography, Information Technology, Mathematics, Microbiology, Physics, Psychology, Statistics, Zoology
- **M.Com.** - Accounting & Taxation, Business Studies, Financial Studies
- **M.Sc. Home Science** - Clothing and Textiles, Foods and Nutrition, Human Development
- **M.F.A.** - Applied Art (Graphic Design/Illustration), Print Making, History of Art, Painting, Sculpture (Portraiture, Creative Sculpture)
- **M.A.** Journalism & Mass Communication
- **M.A./M.Com./M.Sc.** Fashion Design
- **M.S.W.** (Master of Social Work)
- **M.B.A. (Semester Based)** Human Resource Management; International Business; Retail Management; Travel & Tourism Management; Finance; Advertising & Brand Management; Business Analytics; Innovation, Entrepreneurship and Venture Development
- **M.B.A. (Dual Specialization, Trimester based)** - Marketing, Finance, Human Resource, International Business, Information Technology Management **(Co-Educational)**
- **M.C.A.** (Master of Computer Applications - Two years semester based programme) **(Co-Educational)**

RESEARCH PROGRAMMES
- **Ph.D.**

  Faculty of Arts & Social Sciences: English, Journalism and Mass Communication, Economics, Geography, History, Political Science, Fine Arts, Fashion & Textiles, Mathematics, Psychology, Statistics

  Faculty of Science : Environmental & Life Sciences (Botany, Biotechnology, Environmental Science, Microbiology, Zoology), Chemistry, Computer Science, Fashion & Textiles, Geography, Home Science (Human Development), Mathematics, Physics, Psychology, Statistics

  Faculty of Commerce & Management: Commerce, Management
- **D.Sc./D.Litt.**

PDG Dr. Ashok Gupta AKS
Founder, IIS Group

CAREER ORIENTED & SKILL DEVELOPMENT PROGRAMMES, 3-LEVEL CERTIFICATE/ DIPLOMA/ADVANCED DIPLOMA ALONG WITH DEGREE PROGRAMMES

IIS (deemed to be UNIVERSITY)
Gurukul Marg, SFS, Mansarovar, Jaipur -302 020 (India)
www.iisuniv.ac.in | admissions@iisuniv.ac.in

50% SCHOLARSHIP
OFFERED TO THOSE WHO HAVE LOST AN EARNING PARENT / GUARDIAN TO COVID-19